Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत्या० सारस्वतविभ्रमः, दानषट्त्रिंशिका, विशेषणवती, विंशतिका च

आद्यं मूलमात्रं द्वितीयं सवृत्तिकं तृतीयं सावतारं मूलमात्रं चान्त्यद्वयं.

श्रीयशोदेवचारित्रसिंहराजशेखरैः कृतमाद्यत्रयं श्रीमज्जिनभद्रसूरिवर्यहरिभद्राचार्यैः कृतं चान्त्यद्वयं.

प्रसिद्धकर्ता—रतलाम श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी संस्था.

बुहारिवास्तव्यश्रेष्ठिसुरचन्द्रसुपुत्रमाणिबाइविहितद्रव्यसहायार्थेनागेन

मुद्रणकृत्—इंदौर पीपलीबाजार श्रीजैनबन्धुयन्त्रालयाधिपः शा. जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.

वीरसंवत् २४५४ विक्रमसंवत् १९८४ क्राइष्ट १९२७ प्रतयः ५०० पण्यम्. १-४-०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रमणिका.

विषयः	पृष्टांकः
१ श्रीमद्यशोदेवसूरिसूत्रितं प्रत्याख्यानस्वरूपं.	१-२६
२ कातंत्र (सारस्वत) विभ्रमः सवृत्तिकः चारित्रसिंहकृतः	२७-५२
३ दानषट्त्रिंशिका सावतारा श्रीराजशेखराचार्यकृता.	५३-६६
४ श्रीमज्जिनभद्राचार्यकृता शास्त्रशंका-निवारणात्मिका विशेषणवती	२८
५ श्रीमद्धरिभद्राचार्यकृता विंशतिर्विंशिकाः	२४

मुद्रितप्रायाः

१ पंचाशक—धर्मसंग्रहणी—उपदेशमाला—उपदेशपद—कर्मप्रकृति—पंचसंग्रह—जीव—समास—ज्योतिष्करण्डक रूपं ग्रन्थाष्टकं मूलमात्रं स्वाध्यायधारणोपयोगि. ३-०-०

२ अनुयोगद्वाराणां चूर्णिः हारिभद्रीया वृत्तिश्च २-०-०

३ ज्योतिष्करण्डकः श्रीमन्मलयगिर्याचार्यकृत-वृत्तियुक्तः ३-८-०

४ पयरणसंदोहो-अष्टाविंशतिग्रन्थमयः १-०-०

मुद्रितपूर्वाः-प्रकरणसमुच्चयः १।

अहिंसाष्टकसर्वज्ञसिद्धिऐन्द्रस्तुतयः ०॥०

मुद्रयिष्यमाणाः

१ नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः हारिभद्रीया वृत्तिश्च.

२ आवश्यकचूर्णिः

३ दशवैकालिकचूर्णिः

४ उत्तराध्ययनचूर्णिः

५ आचारांगचूर्णिः

६ सूत्रकृतांगचूर्णिः

समीहा चेत् मुद्रितप्रायमुद्रयिष्यमाणेषु स्वनाम्ना मुद्रणे एतेषामेकादेर्वा स ज्ञापयतु. संस्थामेताम्.

—*—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ॐ नमो जिनाय ॥

श्रीमद्यशोदेवसूरिसूत्रितं प्रत्याख्यानस्वरूपम् ।

तवझाणानलनिद्दड्डदुट्ठकम्मिंधणं जिणं नमिउं । पच्चक्खाणसरूवं भणामि सुत्ताणुसारेण ॥ १ ॥ पइदिणमुवओगाओ लेसेणाहारगोयरं पायं । अद्धापच्चक्खाणं वोच्छं नवकारमाईयं ॥ २ ॥ पच्चक्खाणं नियमो अभिग्गहो विरमणं वयं विरई । आसवदारनिरोहो निवित्ति एगट्ठिया सद्दा ॥ ३ ॥ पडिकूलमविरईए विरईभावस्स आभिमुक्खेणं । खाणं कहणं सम्मं पच्चक्खाणं विणिद्दिट्ठं ॥ ४ ॥ अद्धा कालो भण्णइ तप्परिमाणाद्भेदबुद्धीए । कीरंतमेवमद्धापच्चक्खाणं मुणेयव्वं ॥ ५ ॥ अद्धापच्चक्खाणपुरस्सरमेगासणाइ पाएणं । पडिवज्जिज्जइ तेणं अद्धास्सतयंपि मयं ॥ ६ ॥ गहणे विहिं १ विसुद्धिं २ सुत्तवियारं च ३ पारणविहिं च ४ । सयपालणं ५ फलं च्चिय ६ एयस्स भणाभि ऽहाकमसो ॥ ७ ॥ नवकाराई सुत्तं सव्वं पयवंजणेहि जाणंतो । अत्थं च तस्स सम्मं आहारागारमाईयं ॥ ८ ॥ सूरे अणुट्ठिएच्चिय गुरुणो चरणुज्जयस्स गीयस्स । काऊण सुत्तविहिणा विणयं किइकम्ममाईयं ॥ ९ ॥ गिण्हइ पच्चक्खाणं उवउत्तो सावगो व साहू वा । अणुभासंतो वयणं गुरुणो लहुतरसरेणं च ॥ १० ॥ गुरुविरहे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पडिवज्जइ वियप्पमेत्तेण उस्सुगो संतो। अहवा सुत्तं भणिउं ससक्खिगं चेव थिरचित्तो ॥११॥ जिणबिंबसक्खिगं वा ठवणायरियस्स अहव पच्चक्खं। गिण्हइ पच्चक्खाणं जं करणिज्जं तहिं काले ॥ १२ ॥ पच्छा गुरुसंजोगे सयंगिहीयं पुणोऽवि तप्पुरओ। गुरुसक्खिगत्तहेउं पडिवज्जइ पुव्वनीतीए ॥ १३ ॥ गुरुसामग्गीअभावे सम्मं पालेइ जं सयंविहियं। परमुस्सुगत्तगहियं सयमेव पुणो कुणइ विहिणा ॥ १४ ॥ केवलमिह चउभंगो जाणंतो जाणगस्स पासम्मि। बीओ अयाणमाणो गिण्हइ जाणंतगसमीवे ॥ १५ ॥ तइयम्मि जाणमाणे गिण्हइ पासे अयाणमाणस्स। चरिमे अयाणमाणो अयाणमाणस्स मूलम्मि ॥ १६ ॥ एत्थ य पढमो सुद्धो सम्मन्नाणस्स तत्थ भावाओ। विरईए नाणं चिय सुद्धीए कारणं जेणं ॥ १७ ॥ बीए जाणावेउं ओहेणाहारविगइमाईयं। देज्जा पच्चक्खाणं इहरा दोण्हवि मुसावाओ ॥ १८ ॥ तइए गुरू अजाणं जेट्ठो भाया व माउलाई वा। गुरुपूइउत्ति काउं तस्स उ पूया कया होउ ॥ १९ ॥ अप्पात्तियं च एयस्स वज्जियं होउ कारणेणेवं। गिण्हइ पच्चक्खाणं इहरा दोसो अगीयम्मि ॥ २० ॥ जो पुण सयं न याणइ गिण्हइ पासे अयाणमाणस्स। सो सयमंधो लग्गइ मग्गे अन्नस्स अंधस्स ॥ २१ ॥ इय नाऊणं सम्मं जाणंतो जाणगस्स पासम्मि। कुज्जा पच्चक्खाणं मोक्खफलं जेण तं होइ ॥ २२ ॥ भणियं गहणाविहाणं संखेवेणं सुयाणुसारेणं। इण्हिं छव्विहसुद्धिं तह चेव भणामि एयस्स ॥ २३ ॥ दा. १।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सा पुण सद्दहणे जाणणे य विणएऽणुभासणे तह य । अणुपालणम्मि भावे छव्विहसुद्धी मुणेयव्वा ॥ २४ ॥ पच्चक्खाणवियारं सयलं सद्दहइ तह य जो मुणइ । तस्स उ पच्चक्खाणं सद्दहणाजाणणासुद्धं ॥ २५ ॥ जं काउं किइकम्मं दुरोणओ पंजलीऽभिमुहवयणो । गिण्हइ पच्चक्खाणं तं भण्णइ विणयसुद्धं तु ॥ २६ ॥ अणुभासइ गुरुवयणं अक्खरपयवंजणेहिं परिसुद्धं । गुरुसद्दलहुयसद्दो तं जाणऽणुभासणासुद्धं ॥ २७ ॥ पच्चक्खइ वोसिरई एयं नवरं गुरू समुच्चरइ । सीसो पच्चक्खामित्ति वोसिरामित्ति भासेइ ॥ २८ ॥ तथा–पच्चक्खाया सूरी पंचविहायारधारगो गीओ । सीसं पडुच्च जम्हा आहारनिसेहणं कुणइ ॥ २९ ॥ पच्चक्खाविंतो पुण सीसो समुवट्ठिओ सयं चेव । नियगाहारनिसेहे पउंजई गुरुजणं जेण । दा ॥ ३० ॥ अणुपालणाविसुद्धं आवइपत्तोऽवि जमणुपालेइ । सम्मं अचलियचित्तो तययं उवओगओ चेव । दा ॥३१॥ जं नो कोहा माणा माया लोभा भया व सोगा वा । नो जसकित्तिनिमित्तं नो पूयागारवनिमित्तं ॥ ३२ ॥ इहपरलोगासंसारहिओ जं कुणइ निज्जराहेउं । इंदियवियारविरओ भावविसुद्धं तयं नेयं ॥ ३३ ॥ जं पुण कोहाइवसो उम्मत्तो वावि सुमिणमज्झे वा । गिण्हइ पच्चक्खाणं तं न पमाणं सुयहराणं ॥ ३४ ॥ अन्नं मणम्मि काउं अन्नं वायाए कुणइ जं सहसा । तत्थवि मणं पमाणं न पमाणं वंजणच्छलणा ॥ ३५ ॥ इय सुद्धीहिं विसुद्धं पच्चक्खाणं भणंति मोक्खंगं । एयाहि अपरिसुद्धं विवरीयं तं मुणेयव्वं ॥ ३६ ॥ भणियं विसुद्धिदारं सुत्तवियारंति संपयं भणिमो । नवकारमाइयाणं कमेण सुत्ताणुसारेणं ॥ ३७ ॥ दा. २ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवकार १ पोरिसीए २ पुरिमड्ढे ३ क्कासणे ४ गठाणे ५ य । आयंबिल ६ ऽभत्तट्ठे ७ चरिमे य८ अभिग्गहे ९ विगई १० ॥३८॥ दो चेव नमुक्कारे आगारा छच्च पोरिसीए उ । सत्तेव य पुरिमड्ढे एगासणगम्मि अट्ठेव ॥ ३९ ॥ सत्तेगट्ठाणस्स उ अट्ठेवायंबिलम्मि आगारा । पंचेव अभत्तट्ठे छप्पाणे चरिमि चत्तारि ॥४०॥ पंच चउरो अभिग्गहि निव्विइए अट्ठ नव य आगारा । अप्पाउरणे पंच उ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ४१ ॥ पंचपरमेट्ठिनमणं नवकारो तेण संजुयं सहियं । जाव नवकारपाढं होइ न पाओवि एयंति ॥ ४२ ॥ न य संकेइगतुल्लं एवं एयं मुहुत्तमज्झेऽवि । नवकारपाढमेत्ते न पुज्जई जेणिमं किंतु ॥४३॥ नवकारमुहुत्तेहिं पुज्जइ जम्हा सुए इमं भणियं । अद्धापच्चक्खाणं सूरुदयविसेसणपयाओ ॥ ४४ ॥ पोरिसिपच्चक्खाणे सूरुदयविसेसणेण जह पढमा । पोरिसि लब्भइ एगा पढममुहुत्तो तहेहंपि ॥४५॥ सुत्ते अविसेसेवि हु मुहुत्तअवहीए कारणं एत्था । अइथोवागारत्तं थोवे काले मुणेयव्वं ॥ ४६ ॥ पोरिसिमाईयाणं मुहुत्तविरहेण लहुयरो अवही । अन्नो न कोइ भणिओ तम्हा गाहा इमा तत्थ ॥ ४७ ॥ अद्धापच्चक्खाणं जं तं कालप्पमाणछेएणं । पुरिमड्ढपोरिसीहिं मुहुत्तमासद्धमासेहिं ॥ ४८ ॥ तम्हा मुहुत्तविगमे नवकारे भासिए हवइ पुण्णं । एयं पच्चक्खाणं तत्थ य सुत्तं इमं नेयं ॥ ४९ ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तत्थुग्गयम्मि सूरे सूरुदयाओ समारभेऊण । नवकारस्सहियं जे पच्चक्खाइत्ति गिण्हेइ ॥ ५० ॥ कह
चउविहंपि न पुणो एगविहं चेव दुविहमेवऽहवा । तिविहं चेवाहारं अब्भवहारं समासज्ज ॥ ५१ ॥ अहव
नवकारसहियं पच्चक्खइ तत्थ चउहमाहारं । वोसिरइ वज्जेई इय संबंधो मुणेयव्वो ॥ ५२ ॥ एयं किर पाएणं
चउव्विहाहारगोयरं चेव । रयणीभोयणविरमणतीरणपायंतिकाऊणं ॥५३॥ असणं पाणं इच्चाइणा उ आह[illegible]
यनिद्देसं । वयभंगदोसवज्जणहेउं चाऽऽगारदुगमाह ॥ ५४ ॥ आभोगो उवओगो तस्साभावे भवे अणाभो[illegible]
अच्चंतं विम्हरणं पच्चक्खाणस्स जं भणियं ॥५५॥ अन्नत्थ अणाभोगा णाभोगं मोत्तु चयइ आहारं । पंचम्म[illegible]
तइया सहसाकारेवि एमेव ॥ ५६ ॥ सो पुण इह विन्नेओ पवत्तजोगानियत्तणसरूवो । जम्मी सुमरंतस्सवि [illegible]
मुहे किंपि पविसेज्जा ॥ ५७ ॥ एवमणाभोगेणं भुंजतस्सवि हवेज्ज मा भंगो । सहसाकारेणं वा मुहं पविट्ठ[illegible]
आहारे ॥ ५८ ॥ तो आगारा भणिया अववाया कारणाणि छिड्डीओ । इय बहुविहपज्जाया दो चेव य एत[illegible]
सुत्तम्मि ॥५९ ॥एत्तो असणाईयं वोच्छामि चउव्विहंपि आहारं । सुत्ताणुसारओ खलु तस्स विवक्खं चऽणाह[illegible]
॥ ६० ॥ आहारजाइओ एस एत्थ एक्कोऽवि दंसिओ चउहा । असणाइजाइभेया सुहावबोहाइजणणत्थं ॥ ६१ [illegible]
नाणं सद्दहणं गहणपालणा विरइवुड्ढि चेवंति । होइ इहरा उ मोहा विवज्जओ भणियभावाणं ॥ ६२ ॥ असण[illegible]
ओयणसत्तुगमुग्गजगाराइ खज्जगविही य । खीराइ सूरणाई मंडगपभिई य विन्नेयं ॥ ६३ ॥ इत्यशनं । पाण[illegible]
सोवीरजवोदगाइ चित्तं सुराइयं चेव । आउक्काओ सव्वो संगरकइराइनीरं च ॥ ६४ ॥ खज्जूरदक्खदाडिम-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चिंचापाणाइ तक्कामिक्खुरसो । गुडखंडाईनीरं आयामुस्सेयमाई य ॥ ६५ ॥ पाणगआगारेहिं कएहिं एयाइं होंति कप्पाइं । इहरा न हुंति कप्पा मोत्तुं उसिणोदगाईयं ॥ ६६ ॥ इति पानं । भत्तोसं दंताई खज्जूरं नालिकेरदक्खाई । कक्कडियंबगफणसाइ बहुविहं खाइमं नेयं ॥ ६७ ॥ गोहुमचणगाईयं मुग्गं भत्तोसमिह समक्खायं । गुरुसंभियदंतवणाइ देसरूढीए दंतंति ॥ ६८ ॥ इति खादिमं । दंतवणं तंबोलं चित्तं तुलसी कुहेडगाईयं । महुपिप्पलसुंठाइ अणेगहा साइमं होइ ॥ ६९ ॥ इति स्वादिमं । लेसुद्देसेणेए भेया एएसि दंसिया एवं । एयाणुसारओ च्चिय सेसा एमेव नायव्वा ॥ ७० ॥ निंबाईणं छल्ली पत्तफलाई य मोय भूईओ । अन्नं चेयपगारं दव्वमणि ट्ठंअणाहारो ॥७१॥ अलमेत्थ वित्थरेणं संपइ वोच्छामि पोरिसिवियारं । पुरिसो पुरिससरीरं अहवा संकू भवे पुरिसो ॥ ७२॥ पुंरिसो पमाणमेईऍ पोरिसी वन्निया इहं छाया । सा भवइ जत्थ काले सोऽवि मओ पोरिसीपहरो ॥ ७३ ॥ कक्कडसंकंतिदिणे पोरिसिमाणं इमं मुणेयव्वं । तत्तो परं तु वुड्ढी दक्खिणअयणे इमा नेया ॥७४॥ अट्ठेगसट्ठिभागा पइदिवसं अंगुलस्स वड्ढंति । उत्तरअयणम्मि पुणो ते च्चिय हायंति पइदियहं ॥ ७५ ॥ एयं पोरिसिमाणं पुरिसच्छायापयाण संखाए । सत्तजुयाए अहवा चउयालसयाहिए भाए ॥ ७६ ॥ लद्धं एत्थ विहीणं घडियाओ सेसमेयसट्ठिगुणे । तह चेव हिए लद्धं एगविहीणं पले मुणह ॥७७॥ पुव्वण्हे गयमाणं एयं अवरण्हि जाण दिणसेसं । नवरं दिणप्पमाणं आगमभणियं इमं नेयं ॥ ७८ ॥ कक्कडसंकंतिदिणे छत्तीसं नाडिगाओ दिणमाणं । चउवीसं घडियाओ रयणिपमाणं विणिदिट्ठं ॥७९॥ तीयदिणा चउगुणिया सट्ठिविहत्ता हवंति घडियाओ । एयासि हाणिवुड्ढी दिणरयणीसु

For Private and Personal Use Only

श्रीयशोदे-वीये प्रत्याख्यान स्वरूपे. ॥ ७ ॥

सूत्रविचार पौरुषी

तओ परओ ॥ ८० ॥ किञ्चिदूनत्वाविवक्षया चतुर्भिर्गुणनं । मयरे पुण दिणमाणं चउवीसं नाडिगाओ पढमदिणे। छत्तीसं घडियाओ रयणिपमाणं मुणेयव्वं ॥८१॥ परओ दिणस्स वुड्डी रयणीहाणी य पुव्वनिदिट्ठा । ता नायव्वा जाव उ उत्तरअयणस्स चरिमदिणं ॥ ८२ ॥ एवं च पडइ चडइ व घडिया पक्खेण दोन्नि मासेण । दिणरयणिपमाणाओ भणियविहाणेण अयणदुगे ॥ ८३ ॥ पोरिसिविसओ नियमोवि पोरिसी तत्थ सुत्तमेयं तु । आगारछक्कजुत्तं भणियं जिणगणहरिंदेहिं ॥ ८४ ॥

पोरिसिं पच्चक्खाइ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइत्ति ॥

एयस्सवि वक्खाणं जह नवकारे तहेव कायव्वं । नवरं पच्छन्नेणं कालेणं एवमवसेयं ॥ ८५ ॥ मेहमहियारयाईछन्ने सूरे न नज्जई दिवसो । तो पच्छन्ने काले पुन्ने पहरोत्ति कलिऊण ॥ ८६ ॥ भुंजंतस्स न भंगो अह भुंजंतो स कहवि जाणेज्जा । नो पुन्नो तो सहसा ठाएज्ज न ठाइ तो भंगो ॥८७॥ तथा--कोऽवि हु कहिंपि देसे दिसिमोहा पच्छिमंति पुव्वंपि । कलिऊण गओ पहरो इमोऽवरण्होत्ति बुद्धीए ॥ ८८ ॥ भुंजेज्जा न य भंगो मोहावगमाइणा उ विन्नाए । ठायव्वं नो ठायइ जइ निरवेक्खस्स तो भंगो ॥८९॥ साहुवयणं तु एत्थं उग्घाडा पोरिसित्ति एमाई । सोच्चा भुंजतऽदोसो नाए पुण इहवि ठाएज्जा ॥ ९० ॥ एत्थ इमो भावत्थो जइणो भासंति सच्चमेव गिरं । तो

॥ ७ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेच्चिय गज्झवया न जहिच्छावाइणो इयरे ॥ ९१ ॥ भासादोसविहिन्नू साहू साहुस्स कारणवसेणं । साहइ कालपमाणं पोरिसिपुरिमड्ढमाईयं ॥९२॥ तं सोउं भुंजंतो पच्चक्खाणस्स होइ नहु भंगो । अहऽणाभोगा मुणिणा कालपमाणं समुल्लवियं ॥ ९३ ॥ अन्नो वा उवलद्धो ठायव्वं तत्थ मुहगयं सव्वं । रक्खाइसु खिवियव्वं हत्थगयं भायणे चेव ॥ ९४ ॥ आयमिउं इहरा वा खमियव्वं जाव पुज्जए नियमो । पुण्णे पच्चक्खाणे पुणोऽवि भुंजेज्ज सरिऊणं ॥९५॥ सव्वसमाही एसा गाढायंकाइविराहियत्तं जं । तप्पच्चयआगारो तीए च्चिय पच्चक्खाणंति ॥९६॥ तिव्वसूलाइदुक्खा संजाए अट्टरोद्दझाणम्मि । तस्सोवसमनिमित्तं ओसहपत्थाइकरणेऽवि ॥ ९७ ॥ नो भंगो संपज्जइ दुक्खावगमे समाहिलाभे उ । ठायव्वं नो ठायइ तो भंगो होइ नियमस्स ॥ ९८ ॥ पोरिसिपच्चक्खाणं भणियं संपइ भणामि पुरिमड्ढं । तत्थ य एयं सुत्तं सत्तविहागारसंजुत्तं ॥ ९९ ॥

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइत्ति ।

सूरुग्गमाइयाणं पयाण अत्थो इहेव तह चेव । जह पोरिसीएँ भणिओ नवरि विसेसो इमो इत्थ ॥ १०० ॥ पुरिमं पढमं अद्धं दिणस्स पुरिमड्ढमेयविसयं तु । पच्चक्खाणंपि भवे पुरिमड्ढं तइयगो नियमो ॥ १०१ ॥ मयहरयं गुरुतरयं पच्चक्खाणाणुपालणाओऽवि । बहुनिज्जरानिमित्तं तहेव पुरिसंतरासज्झं ॥१०२॥ चेइयगिलाणसंघाइयाण

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कज्जं तमेव आगारो । पच्चक्खाणऽववाओ भन्नइ इह महयरागारो ॥ १०३ ॥ तेणं भुंजंतस्सवि गुरुणो आणाए निरभिलाभस्स । तं चेव फलं जायइ पच्चक्खाणस्स जं भणियं ॥ १०४ ॥ एयस्सिहेव गहणं न पुणो नवकारसहियमाईसु । कालस्सऽप्पबहुत्तं मन्नामो कारणं तत्थ ॥ १०५ ॥ वक्खायं पुरिमड्ढं इण्हिं एक्कासणं पवक्खामि । तत्थ य सुत्तं इणमो अट्ठविहागारसंजुत्तं ॥ १०६ ॥

एक्कासणं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

एक्कं असणं अहवावि आसणं जत्थ निच्चलपुयस्स । तं एक्कासणमुत्तं इगवेलाभोयणे नियमो ॥ १०७ ॥ तं पच्चक्खाइ विहेययाए अंगीकरेइ सेसत्थो । एत्थवि तहेव नेओ नवरि विसेसो इहं एसो ॥ १०८ ॥ सागारिओ-गिहत्थो परलिंगी वा स एव आगारो । पच्चक्खाणववाओ भन्नइ सागारियागारो ॥ १०९ ॥ सागारियस्स पुरओ जम्हा भोत्तुं न कप्पइ जईणं । पवयणउवघायाओ एत्तोच्चिय आगमे भणियं ॥ ११० ॥ छक्कायदयावंतोऽवि संजओ दुल्लहं कुणइ बोहिं । आहारे नीहारे दुगुंछिए पिंडगहणे वा ॥ १११ ॥ तो भुंजंतस्स जया साग-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिओ आगओ थिरो होज्जा । सज्झायाइविघाओत्ति गंतुमन्नत्थ तो भुंजे ॥ ११२ ॥ गिहिणो पुण सागरिओ जच्चक्खुनिरिक्खियं न जीरेज्जा । अन्नं वा पाणभयं जत्तो होज्जा धणभयं वा ॥११३॥ आउंटणं च जंघाइयाण संकोयणं मुणेयव्वं । आकुंचियाण तेसिं पसारणं इह रिजूकरणं ॥ ११४ ॥ असहू नरेण तम्मी कीरंते किंचि आसणं चलइ । तत्तो तं मोत्तूणं पच्चक्खाइत्ति भावत्थो ॥ ११५ ॥ एत्थ गुरू आयरिओ पाहुणगो वावि तस्स कायव्वं । अब्भुट्ठाणं आसणचयणं जीयंति सयकालं ॥ ११६ ॥ तम्हा भुंजंतेणवि अब्भुट्ठाणं इमस्स कायव्वं । गुरुलाघवचिंताए जम्हा धम्मो समक्खाओ ॥ ११७ ॥ पारिट्ठावणियं पुण उग्गमउप्पायणेसणासुद्धे । विहिगहिए विहिभुत्ते उव्वरियं जमसणाईहिं ॥ ११८ ॥ छंडिज्जंते दोसा बहुतरगा तत्थ हुंति तो गुरुणा । भणिओ वियरेज्ज तयं अट्ठमछट्ठाइकारीणं ॥ ११९ ॥ पच्छाणुपुव्वियाए ता देज्जा जाव निव्वियतवस्सी । अह कहवि होज्ज बहुयं सव्वेसिं चेव तो देयं ॥ १२० ॥ तुल्ले तवोविसेसे बालाबालाण कस्स दायव्वं ? । भन्नइ बाले दाउं देज्जा इयरेवि जइ बहुगं ॥ १२१ ॥ दोण्ह बालाण मज्झे दायव्वं असहुणो न इयरस्स । दोण्हं असहूणं पुण दायव्वं हिंडगस्सेव ॥ १२२ ॥ दोण्हवि हिंडंताणं दायव्वं पाहुणे न वत्थव्वे । जइ पाणगआहारो पच्चक्खाओ न एएहिं ॥१२३॥ अह पाणगंपि होज्जा विगिंचियव्वं तओ उ दायव्वं । पाणगआहाराओ विरयाविरयाण दोण्हंपि ॥ १२४ ॥ दसमाइविगिट्ठतवस्सियाण नो दिज्जई इमं जेण । पायोसिणभत्तुचिया जेणं व सदेवया ते उ ॥ १२५ ॥ केसिंचि अट्ठमाइ तवो विगिट्ठो तओ न तं देयं । अट्ठमतवस्सियाणवि कारणमेत्थंपि तं चेव ॥ १२६ ॥ सोवि जई जइसुइयं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो गुरुभणिओ विसुद्धपरिणामो । वंदणपुव्वं विहिणा भुंजइ तं संदिसावेउं ॥१२७॥ जो पुण तं उच्छिट्ठं वियरइ अन्नस्स जो व तं भुंजे । गुरुवयणमंतरेणं तेसिं गुरुगो भवे दंडो ॥ १२८ ॥ गच्छाओ निज्जूहण आउट्टाणं च पंचकल्लाणं । डंडो जिणेहिं भणिओ दोण्हवि गिण्हेतदेंताणं ॥ १२९ ॥ एसागारो गिहिणो न भवइ सुत्तं तहावि अक्खंडं । उच्चरइ जहा गुरुणो अहवा आगाढजोगित्ति ॥ १३० ॥ वोसिरई परिहरई चउहाहारं अणेगभत्तं वा । इय एक्कासणमुत्तं एगट्ठाणं अओ वोच्छं ॥ १३१ ॥ एगं अचालणेणं ठाणं अंगाण जत्थ तं भणियं । एगट्ठाणं तम्मी आगारा हुंति सत्तेव ॥ १३२ ॥

एगट्ठाणं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारमित्यादि ।

जह एगासणमुत्तं एगट्ठाणंपि तह मुणेयव्वं । आउंटणप्पसारणमिह आगारो नवरि नत्थि ॥ १३३ ॥ मुहहत्थवाज्जियाणं अंगावयवाण चालणारहियं । होइ इमं नियमेणं तम्हा सत्तेत्थ आगारा ॥१३४॥ आयंबिलसुत्तत्थं अहुणा वोच्छामि तत्थ सुत्तमिमं । आगारट्ठगसहियं पन्नत्तं लोगनाहेहिं ॥ १३५ ॥

आयंबिलं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं उक्खित्तविवेगेणं गिहत्थसंसट्ठेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयाममंबिलच्चिय पाएणं वंजणो जहिं भत्ते । कुम्मासोयणसत्तुगपमुहे आयंबिलं तंति ॥ १३६ ॥ तग्गय पच्चक्खाणं भण्णइ आयंबिलंति तस्सत्थो । जह पुव्वं तह नेओ नवरि विसेसो इमो एत्थ ॥ १३७ ॥ जं पच्चक्खइ तं चिय भोत्तव्वं अज्ज मेत्ति नियमेइ । जम्हा पवित्तिवयणो निवित्तिवयणो य वयसद्दो ॥ १३८ ॥ लेवो मुणिभोयणभाणस्स विगईय लेवडेणं वा । एवं लित्तस्स पुणो कराइणा सोहणमलेवो ॥ १३९ ॥ लेवो य अलेवो य लेवालेवं तओ य अन्नत्थ । भाणे खीराइऽवयवभावेवि न होइ भंगोत्ति ॥ १४० ॥ सुक्कोयणाइभत्ते अद्दवदहिमाइ निवडियं दव्वं । इह उक्खित्तं भण्णइ तस्स विवेगो समुद्धरणं ॥ १४१ ॥ तो सम्मं तम्मि कए अंबिलपाउग्ग भोयणे भुत्ते । तदजोगफासिएवि हु न होइ भंगोत्ति परमत्थो ॥ १४२ ॥ जावइयं उवजुज्जइ तावइयं भायणे गहेऊणं । जलनिब्बुड्डुं काउं भोत्तव्वं एस एत्थ विही ॥१४३॥ दायगगिहिणो संबंधि भायणं जं करोडगाईयं । संसट्ठं उवलित्तं विगईए लेवडेणं व ॥ १४४ ॥ ता तेण दीयमाणं अकप्पदव्वेण होइ सम्मिस्सं । न य तं भुंजंतस्सवि भंगो भवइत्ति भावत्थो ॥ १४५ ॥ वोसिरइ अणायंबं वुत्तं आयंबिलं अओ वोच्छं । पंचागारसमेयं अभत्तट्ठं गणहरुद्दिट्ठं ॥ १४६ ॥ नो भत्तेणं अट्ठो पओयणं जत्थ सो अभत्तट्ठो । पच्चक्खाणविसेसो तत्थ इमं वन्नियं सुत्तं ॥ १४७ ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं

For Private and Personal Use Only

पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

आहारागाराणं अत्थो एत्थंपि तह मुणेयव्वो । जह पुव्वं निद्दिट्ठो नवरि विसेसो इमो नेओ ॥१४८॥ सूरम्मि उग्गयम्मि सूरोदयवेलमाइओ काउं । अभतट्ठं पच्चक्खइ कायव्वमिणंति गिण्हेइ ॥ १४९ ॥ वोसिरइ य भत्तट्ठं चउहाहारं च जइ पुणो कुणइ । पोरिसिपुरिमेगासणअभतट्ठे तिविह आहारे ॥ १५० ॥ तो पाणगमुद्दिसिउं लेवाडेणेवमाइयं कुणइ । आगाराणं छक्कं तत्थ य सुत्तं इमं भणियं ॥ १५१ ॥

लेवाडेण वा १ अलेवाडेण वा २ अच्छेण वा ३ बहलेण वा ४ ससित्थेण वा ५ असित्थेण वा ६ वोसिरइ ।

एत्थवि अन्नत्थपयं अणुवत्तइ पंचमीइ अत्थम्मि । तइया तहा विभत्ती तो लेवाडाओ अन्नत्थ ॥ १५२ ॥ खज्जूरपाणपमुहं पिच्छिलभावेण भायणाईणं । उवलेवकारणत्ता कयलेवं तं विवज्जेत्ता ॥ १५३ ॥ वोसिरइ तिहाहारं संबंधो एवमेत्थ कायव्वो। वासद्दो अविसेसं अलेवडेणं भणइ तस्स ॥ १५४ ॥ उववासमाइयाणं जह चेव अलेवकारिपाणेणं। तह लेवकारिणा वि हु न होइ भंगोत्ति भावत्थो ॥ १५५ ॥ एवमलेवाडाओ अपिच्छलाओ तहेव अच्छाओ। निम्मलउसिणोदयमाइयाओ जइपाणजोगाओ ॥ १५६ ॥ बहलाओ गड्डुलाओ तिलतंडुलधोवणाइरूवाओ । सस्सित्थपाणगाओ आयामप्पमुहनीराओ ॥ १५७ ॥ तह चेव असित्थाओ पाणाहाराउ सित्थवज्जाओ।

उक्तार्थ-
आ[illegible]का-
कारा:

वासद्देणं अत्थो पढमगमेणं भणेयव्वो ॥ १५८ ॥—चरिमो अंतिमभागो दिवसस्स भवस्स चेव नायव्वो। तव्विसयं इह भण्णइ पच्चक्खाणंपि चरिमंति ॥ १५९ ॥ दुविहेवि तम्मि चउरो आगारा हुंति नवरि भवचरिमं। सागारमणागारं पढमदुगं तत्थऽणागारे ॥ १६० ॥ तणवत्थंगुलिपमुहे मुहं पविट्ठे हवेज्ज मा भंगो। तो तत्थवि आगारा न उणो आहारवुद्धीए ॥ १६१ ॥

सूत्राणि चामूनि—दिवसचरिमं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं०४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ॥ भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि वा आहारं असणं० ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥ निरागारे तु-भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि वा आहारं असणं० ४, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ॥

एक्कासणगेऽवि कए दिणचरिमं सफलमेव जेण तयं। थोवागारं इयरं बहुआगारं विणिद्दिट्ठं॥१६२॥ एक्कासणाइ एत्तो देवसियं चेव होइ नायव्वं। निसिविरई जा जीवं तिविहंतिविहेण जेण कया॥ १६३ ॥ एत्तोत्ति बह्वाकारत्वतः। गिहिणो पडुच्च दिवसं रूढिवसाओ भणंतऽहोरत्तं। तो तेसिं निसिभोयणविरयाणवि गुणकरं चेव ॥ १६४ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पाएण होइ एयं रयणीभोयणवयस्स जं तेसिं। आगाराण बहुत्तं इमं च संखित्तआगारं ॥१६५॥ जइ पुण निसिभत्तवयं दुक्कालभयाइकारणेहि विणा। गिहिणावि हु पडिवन्नं चउव्विहाहारविसयं च ॥ १६६ ॥ तो तस्सवि देवसियं एयं संभवइ तो दिणे सेसे। थोए वा बहुए वा कायव्वं न उण रयणीए ॥ १६७ ॥—भणियं चरमभियाणिं आभिग्गहियं भणामि लेसेण। तत्थागारा चउरो अहवावि हवंति पञ्चेव ॥ १६८ ॥ देसावगासिगाइसु दंडगगहणाइगोयरेसुं च। अंगुट्ठमुट्ठिमाइसु नियमेसु हवंति चत्तारि ॥ १६९ ॥ अप्पाउरणे पंच उ तं पुण सीयाइसहणबुद्धीए। कोइ पवज्जइ पुरिसो मोत्तुं सव्वंपि पाउरणं ॥ १७० ॥ सो सागरियभएणं चोलगपट्टस्स परिहणनिमित्तं। चोलगपट्टागारं करेइ तेणेह ते पंच ॥ १७१ ॥

सूत्राणि च,—देसावगासियं उवभोगपरिभोगं (द्रव्य सचित्त०) प० अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ एवं डंडगगहणअंगुट्ठमुट्ठिगंठीघरसेउस्सास(जोइ)थिबुगाइसुवि चत्तारि आगारा दट्ठव्वा। अप्पाउरणं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं चोलपट्टगागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

भणियं आभिग्गहियं निव्वीयं संपयं पवक्खामि। विगईचागाउ इमं ताओच्चिय ताव तो भणिमो। १७१। खीरं दहि नवणीयं घयं तहा तेल्लमेव गुल मज्जं। महु मंसं चेव तहा ओगाहिमगं च दस विगई ॥ १७२ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गोमहिसिउट्टिअयएलगाण खीराणि पंच चत्तारि । दहिमाईया जम्हा उट्टीणं ताणि न हु होंति ॥ १७४ ॥ चत्तारि हुंति तेल्ला तिलअयसिकुसुंभसरिसवाणं च । विगईओ सेसाइं महुयफलाईण नो विगई ॥ १७५ ॥ दवगुडपिंडगुडा दो मज्जं पुण कट्ठपिट्ठनिप्फन्नं । मच्छियकोत्तियभामरभेयं च तिहा महुं होइ ॥ १७६ ॥ जलथलखहयरमंसं चम्मं वस सोणियं तिहेयंपि । आइल्लतिन्नि चलचल ओगाहिमगा य विगईओ ॥ १७७ ॥ चलचलसद्दोवया नेहोगाहेण जे उ पच्चंति । ओगाहिमगा नेया वडगाई खज्जगविसेसा ॥ १७८ ॥ तिण्हं घाणाण परओ एए विगई न हुंति जइ न खिवे । अन्नंपि तत्थ नेहं तो ते कप्पंति जंभणियं ॥ १७९ ॥ सेसा न हुंति विगई अजोगवाहीण ते उ कप्पंति । परिभुज्जंति न पायं जं निच्छयओ न नज्जंति ॥ १८० ॥ एगेण चेव तवओ पूरेज्जइ पूयएण जो तावो । बीओऽवि स पुण कप्पइ अखवियनेहंतरो नवरं ॥ १८१ ॥ दहिअवयवओ मंथू विगई तक्कं न होइ विगईओ । खीरं तु निरावयवं नवणीओगाहिमं चेव ॥ १८२ ॥ घयघट्टो पुण विगई वीसंदणमो य केइ इच्छंति । तेल्लगुलाणमविगई सोमालियखंडमाईणि ॥ १८३ ॥ एत्थ य--घयघट्टो मेहाहुव वीसंदणमद्धदड्ढघयमज्झे । छूढेहिं तंदुलेहिं जिणलं(जिण्णालं)होइ नायव्वं ॥१८४॥ सोमालियं वियाणह सन्निय तह सेल्लियं च जं बिंति । आदिग्गहणेण गहिया सक्करवरसोलगाईवि ॥ १८५ ॥ मज्जमहुणो तु खोला मयणा विगइओ पोग्गले पिंडो । रसओ पुण तदवयवो सो पुण नियमा भवे विगई ॥ १८६ ॥ मयकच्चसं तु खोला मंसं पुण पुग्गलं मुणेयव्वं । कालेज्जं पुण पिंडो मंसरसो भन्नए रसओ ॥ १८७ ॥ खज्जूरमुद्दियादाडिमाण पीलुच्छुचिंचमाईणं । पिंडरसा न विगईओ नियमा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुण हुंति लेवकडा ॥१८८॥ एमेव बयर रायण वारंग कविट्ठ अंबजंबीरे । टिंबरुय चारुकयले बिज्जउरे नालिएरे य ॥१८९॥ नवरं इह परिभोगो निव्विइयाणंपि कारणविक्खो। उक्कोसगदव्वाणं तओ विसेसेण विन्नेओ ॥१९०॥ आवन्ननिव्विगइयस्स असहुणो जुज्जए परीभोगो । इंदियजयबुद्धीए विगईचायम्मि नो जुत्तो ॥१९१॥ जो पुण विगईचायं काऊणं खाइ निद्धमहुराइ । उक्कोसगदव्वाणं तुच्छफलो तस्स सो नेओ ॥१९२॥ दीसंति य केइ इहं पच्चक्खाएवि मंदधम्माणो । कारणियं पडिसेवं अकारणेणावि कुणमाणा ॥ १९३ ॥ तिलमोयगातिलवट्टिं वरिसोलगनालिकेरखंडाइं । अइबहलघोलखीरं घयपप्पुयवंजणाइं च ॥ १९४ ॥ घयबुड्डमंडगाई दहिदुद्धकरंबपेयमाईयं । झल्लरिचूरिमपमुहं अकारणे केइ भुंजंति ॥ १९५ ॥ न य तंपि इह पमाणं जहुत्तकाराण आगमन्नूणं । जरजम्ममरणभीसणभवन्नवुव्विग्गचित्ताणं ॥ १९६ ॥ मोत्तुं जिणाणमाणं जियाण बहुदुहदवग्गितवियाणं । न हु अन्नो पडियारो कोइ इहं भववणे जेण ॥ १९७ ॥ विगई परिणइधम्मो मोहो जमुदिज्जए उदिन्ने य । सुट्ठुवि चित्तजयपरो कहं अकज्जे न वट्टिहिइ ? ॥ १९८ ॥ दावानलमज्झगओ को तदुवसमट्ठयाए जलमाई । संतेऽवि न सेविज्जा ? मोहानलदीविए उवमा ॥ १९९ ॥ तथा-विगइं विगईभीओ विगइगयं जो उ भुंजए साहू । विगई विगइसहावा विगई विगइं बला नेइ ॥ २०० ॥ विकृतिं--चेतोविकारमाश्रित्य विगतिभीतः-कुगतित्रस्तो विकृतिगतं-क्षीरादिविकृतिजातं यो भुङ्क्ते साधुर्विकृतिः-क्षीरादिका विकृतिस्वभावा--चेतोविकारकरणशीला अतो विकृतिः--क्षीरादिका विगतिं--कुगतिं बलान्नयतीति ।

इय दोसकरिं नाउं वयंति धीरा इमं जहासत्तिं । महुमज्जमक्खणाइं मंसं च विसेसओ निच्चं ॥ २०१ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एत्थ य पच्चक्खाणे आगारा अट्ठ अहव नव हुंति । विगइविसेसोवेक्खा तेसि विभागो इमो नेओ ॥ २०२ ॥ नवणीओगाहिमए अद्दवदहिपिसियघयगुलेसुं च । नव आगारा नेया उक्खित्तविवेगसंभवओ ॥२०३॥ खीरमहुमज्जतेल्ले दवेसु घयपिसियदहिगुलेसुं च । अट्ठेव य आगारा उक्खित्तविवेगऽभावाओ ॥ २०४ ॥ अन्नयरविगइनियमो निव्वियग्रं भण्णए तओ कुणइ । अद्दवविगइविवज्जी उक्खित्तविवेगमागारं ॥२०५॥ इयरो न तमुच्चारइ वयणप्पामन्नओ भणंतेगे । अन्ने भणंति एयं वियारमेत्तं मुणेयव्वं ॥ २०६ ॥ तो सव्वविगइचाई असव्वचाई य उच्चरइ एयं । जह भगवइजोगो जई गिहत्थसंसट्ठपभिईयं ॥ २०७ ॥

सूत्रं चेदम्-निव्विगइयं पच्चक्खाइ अन्नत्थऽणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

वक्खायं चिय एयं नवरि विसेसो गिहत्थसंसट्ठे । गिहिणा नियकज्जेणं संसट्ठो ओयणो पयसो ॥ २०८ ॥ तं जइ तमइक्कमिउं उक्कोसेणंगुलाणि चत्तारि । उवरिं वट्टइ तइया न तयं दुद्धं भवे विगई ॥ २०९ ॥ पंचमगे पारद्धे नियमा विगई अणेण नाएण । दहिवियडमाइयाउवि भणियमिणं जेण सुत्तम्मि ॥ २१० ॥ खीरदहीवियडाणं चत्तारि उ अंगुलाइ संसट्ठं । फाणियतेल्लघयाणं अंगुलमेगं तु संसट्ठं ॥ २११ ॥ महुपोग्गलरसयाणं अद्धंगुलगं तु

For Private and Personal Use Only

होइ संसट्ठं । गुलपुग्गलनवणीयं अद्दामलगं तु संसट्ठं ॥ २१२ ॥ आर्द्रामलकं-पीलूमयूरः इति सम्प्रदायः । अइरुक्खमंडगाइं पडुच्च जं मक्खियं व पडिहाइ । तं पडुच्चमक्खियं खलु मक्खिय आभासमिइ भावो ॥२१३॥ जइ अंगुलीए घेत्तुं घयतेल्लाईहिं मंडगाईयं । मक्खइ तइया कप्पइ धाराए न कप्पइ अणुंपि ॥२१४॥ निव्विगइयभणणाओ विगइपमाणंपि एत्थ न विरुद्धं । अपमायवुड्ढिहेउत्तणेण आयरणओ चेव ॥२१५॥ एत्तोच्चिय सुत्तेसुं चउहाहारस्स विरइभणणेऽवि । दुविहतिविहस्स करणं न विरुद्धं पोरिसाईसुं ॥ २१६ ॥ एगासणसुत्तेणं बेयासणगंपि एत्थ न विरुद्धं । आसणधणिसाहम्मा विगईपरिमाणकरणं च ॥ २१७ ॥ अन्नं च इमं भणियं पयडं गिहिदेसपोसहे जम्हा । तम्हा गहणे सुत्तं एयस्सवि किंपि दट्ठव्वं ॥ २१८ ॥ न य वच्चमभिग्गहियं सुत्तं एयस्स चउव्विहागारं । जेणेगासणगेणं समजोगक्खेममेयंपि ॥ २१९ ॥ एवं पुरिमड्ढेणं अवड्ढमवि सूइयं मुणेयव्वं । जम्हा महानिसीहे तयंपि भणियं फुडं चेव ॥ २२० ॥ इय सड्ढपोरिसीविय पोरिसिसुत्तेण सूइया चेव । न य पुण कत्थवि दिट्ठा गंभीरं नवरि जिणवयणं ॥ २२१ ॥ भणिओ सुत्तवियारो पइसुत्तं तत्थ देसियागारा । तेसिऽभिहाणम्मि पुणो कारणमिणमो मुणेयव्वं ॥ २२२ ॥ वयभंगे गुरुदोसो थेवस्सवि पालणा गुणकरी ओ । गुरुलाघवं च नेयं धम्मम्मि अओ उ आगारा ॥ २२३ ॥ जहगहियपालणेणं अपमाओ सेविओ धुवं होइ । सो तह सेविज्जंतो वड्ढइ इयरं विणासेइ ॥ २२४ ॥ अब्भत्थो य पमाओ तत्तो मा होज्ज कहवि भंगोत्ति । भंगे आणाईया तओ य सव्वे अणत्थत्ति ॥ २२५ ॥ (अत्राह परः)—एवं पमाइणो कह पव्वज्जा होइ (गुरुराह) चरणपरिणामा । न य तस्स-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्ताणतरमेव पमाओ खयं जाइ ॥ २२६ ॥ जमणाइभवब्भत्थो तस्सेव खयत्थमुज्जएणेह । जहगहियपालणेणं अपमाओ सेवियव्वोत्ति ॥२२७॥३॥ अलमेत्थ पसंगेणं संपइ वोच्छामि पारणविहाणं । साहूण सावगाण य जह भणियं पुव्वसूरीहिं ॥ २२८ ॥ सड्ढो पच्चक्खाणे पुन्नेवि गए उ थेवकालम्मि । संपूइय तित्थयरं वंदित्ता तह य भावेणं ॥ २२९ ॥दाऊण उचियदाणं पडिलाभिय साहुणो विसेसेणं । संभालिय परिवारं काउं तस्सोचियं किंचं ॥ २३० ॥ उचियासणठाणगओ मंगलपाढं करेत्तु उवउत्तो । सुहधाउजोगभावेऽकिच्छेणमणाउलेण तहा ॥ २३१ ॥ जम्हा भयकोहपरव्वसेण लुद्धेण रीणातिसिएण । मणसा सेविज्जंतं अन्नं सम्मं न परिणमइ ॥२३२॥ सरिउं च विसेसेणं पच्चक्खायं इमं मए पच्छा । भुंजइ पगइविरुद्धं वज्जंतो जुत्तमाहारं ॥ २३३ ॥ एएणं चिय विहिणा समणावि कुणंति पारणं पायं । जो पुण तेसि विसेसो तमहं वोच्छं समासेणं ॥ २३४ ॥ सुत्तत्थ-पोरिसीओ काउं संवेगभावियमई य । सुत्तुत्तविहाणेण य उवउत्तो हिंडिउं भिक्खं ॥ २३५ ॥ आलोइय तं विहिणा दंसिय गुरुणो करेत्तु उस्सग्गं । मज्झालोगस काउं मंगल्लाई य झाएत्ता ॥ २३६ ॥ विणएण पट्ठवेत्ता सज्झायं काउ तो मुहुत्तागं । मंडलिय भुंजमाणे पाहुणगाई णिमंतेउं ॥ २३७ ॥ इच्छेज्ज न इच्छेज्जा तहविय पयओ निमंतए साहू । परिमाणविसुद्धीए उ निज्जरा होअगहिएवि ॥ २३८ ॥ परिणामविसुद्धीए विणा उ गहिएऽवि निज्जरा थोवा । तम्हा विहिभत्तीए छंदिज्जा तह य वियरेज्जा ॥२३९॥ मंडलिभोई उ पुणो सत्तीए

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहुंपि काउ सज्झायं । धम्मं कहं नु कुज्जं संजमगाहं च नियमेणं ॥२४०॥ दिंति तओ अणुसट्ठिं संविग्गो अप्पणा उ जीवस्स । रागद्दोसाभावं परमरहस्सं गणेमाणो ॥२४१॥ बायालीसेसणसंकडम्मि गहणम्मि जीव ! नऽसि छलिओ। इण्हिं जह न छलिज्जसि भुंजंतो रागदोसेहिं ॥२४२॥ रागद्दोसविरहिया वणलेवाइउवमाए भुंजंति । कइत्तु नमोक्कारं विहीए गुरुणा अणुन्नाया ॥ २४३ ॥ रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं मुणेयव्वं। रागद्दोसविरहिया भुंजंति जई उ परमत्थो ॥२४४॥ जइ भागगया मत्ता रागाईणं तहा चओ कम्मे । रागाइविहुरयाविय पायं वत्थूण विहुरत्ता ॥२४५॥ नियमेण भावणाओ विवक्खभूयाउ सुप्पउत्ताओ । होइ खओ दोसाणं रागाईणं विसुद्धाओ ॥२४६॥ जे वन्नाइनिमित्तं एत्तो आलंबणेण वऽन्नेण। भुंजंति तेसिं बंधो नेओ तप्पच्चओ तिव्वो ॥२४७॥ भणिओ पारणगविही पच्चक्खाणस्स पुव्वमुणिसिट्ठो। एत्तो य समासेणं वोच्छं सयपालणादारं ॥२४८॥ आह जह जीवघाए पच्चक्खाए न कारए अन्नं । भंगभयाऽसणदाणे धुवकारवणंति नणु दोसो ॥२४९॥ततश्च-नो कयपच्चक्खाणो आयरियाईण देज्ज असणाई । न य विरइपालणाओ वेयावच्चं पहाणयरं ॥२५०॥ यतः- दाणमोरब्भिएणावि,चंडालेणावि दीयइ। जेण वा तेण वा सीलं, न सक्कमभिरक्खिउं ॥सीलं च विरतिः॥२५१॥अत्रोत्तरम्-नो तिविहंतिविहेणं पच्चक्खाणन्नदाणकारवणं । सुद्धस्स तओ मुणिणो न होइ तब्भंगहेउत्ति ॥२५२॥ सयमेवऽणुपालणियं दाणुवएसा य णेह पडिसिद्धा । ता दिज्ज उवदिसेज्ज व जहासमाहीए अन्नेसिं ॥२५३॥ कयपच्चक्खाणोवि य आयरियगिलाणबालवुड्ढाणं । देज्जासणाइ संते लाहे कयवीरियायारो ॥२५४॥ संविग्गअन्नसंभोइयाण दंसेज्ज सड्ढगकुलाणि । अतरंतो वा संभोइयाण जह वा समाहीए ॥२५५॥ एवमिह सावगाणं दाणुवएसाइ संगयं चेव। पाणासणाइविसयं अविसेसेणं जइ-

For Private and Personal Use Only

जणम्मि ॥२५६॥ संभोइयाइभेओ नत्थि गिहत्थाण तेण जो सत्तो। अविसेसेण पयच्छइ असमत्थो देइ उवएसं ॥२५७॥ एवं वत्थाईणिवि दाणे गिहिणो विही इमो चेव। तुच्छो पणमिय गुरुणो तप्परिवारस्स वा देइ ॥२५८॥ एसो अविसेसेणं दाउमसत्तोत्ति धम्मसूरीणं। दुप्पडियारत्तणओ विसेसओ पूयणिज्जाणं ॥२५९॥ देइ विसेसेणेसिं तप्परिवारस्स वावि गुणनिहिणो। अह उवगरणं गुरुणोवि अत्थि परेसिं च तं नत्थि ॥२६०॥ तो तेसि तं पयच्छइ अह दोण्हं नत्थि तत्थ दायव्वं। लद्धिविहीणाणं चिय अह लद्धिविवज्जिया दोवि ॥२६१॥ तो गुरुणो च्चिय देयं इहरा दोसा विवेगविरहाओ। आणाभंगऽणवत्थामिच्छत्तविराहणाईया ॥२६२॥ अहऽतुच्छो पुण दोण्हं संतेऽसंते व लद्धिजुत्ताणं। लद्धीएँ विउत्ताण व तुल्लगुणाणंपि समणाणं ॥२६३॥ जइ देज्जा दरवज्जिय तो तस्स मत्तदूसियमणस्स। अविवेइणो य धणियं सम्मं गुणभत्तिसुन्नस्स ॥२६४॥ नियमेण होंति दोसा आणाभंगाणवत्थमाईया। एत्तोच्चिय भणियमिणं जयजीवहिए जिणमयम्मि ॥२६५॥ सड्ढेणं सइ विभवे साहूणं वत्थमाइ दायव्वं। गुणवंताण विसेसा दिसाए तत्थवि न जेसऽत्थि॥ तत्रापि येषां साधूनां वस्त्रादि नास्ति तेभ्यो देयमित्यर्थः ॥२६६॥ तथा- संतं बज्झमणिच्चं ठाणे दाणंपि जो न वियरेइ। इय खुड्डगो कहं सो सीलं अइदुद्धरं धरइ ? ॥२६७॥ दिसाविवरणायाह-दीसइ जीए सीसो सेहदिसा सूरिमाइया नेया। जह एस अमुगसीसो तदंतिए बोहिलाभाओ ॥२६८॥ आभव्वावेक्खाए दिसा गिहत्थाण आगमे भणिया। पव्वज्जाभिमुहाणं मुक्कवयाणं च नऽन्नेसिं॥२६९॥ जो पव्वइउं इच्छइ सामाइयमाइसुत्तपाढी य। सो चरणुज्जय गुरुणो तिन्नि समा तदुवरिं भयणा ॥२७०॥ तथा-

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परलिंगिनिण्हए व सम्मदंसणजढे उ उवसंते । तद्दिवसमेव इच्छा सम्मत्तजुए समा तिन्नि ॥२७१॥ मुक्कवओ पुण दुविहो सारूवी होइ तह गिहत्थो य । तत्थ य रयहरणवज्जिय जइवेसधरो उ सारूवी ॥ २७२ ॥ किंच- मुंडसिरो सियवत्था सभज्जऽभज्जो व मुक्ककच्छो य। पत्तेहि भमइ भिक्खं अबंभयारी य सारूवी ॥२७३॥ सो जाजीवं गुरुणो तेण य मुंडीकयाणिवि तहेव । तेणेव बोहियाणं अमुंडियाणं पुणो इच्छा ॥ २७४ ॥ अणवच्चे सेसविही पुव्वायरियस्स तस्सऽवच्चाइ । आभव्वाइं नियमा मुंडिय इयराइं नऽन्नस्स ॥ २७५ ॥ जो पुण गिहत्थमुंडो अहव अमुंडो उ तिण्ह वरिसाण । आरेणं पव्वावे सयं च पुव्वायरिय सव्वे ॥ २७६ ॥ भरहस्स पुव्वजम्मो आहरणं होइ साहुणो दाणे । गिहिणो धणसत्थवइदिट्ठंतो जुन्नसेट्ठी वा ॥ २७७ ॥ हरिण वणछेइणो वा अहवा गामस्स चिंतगो पुरिसो । कयउन्नसालिभद्दा दाणफले अहव दिट्ठंता ॥ २७८ ॥ भरहेणं पुव्वभवे वेयावच्चं कयं सुविहियाणं । तो तस्स पभावेणं जाओ भरहाहिवो राया ॥ २७९ ॥ लद्धूण केवलसिरिं लक्खं पुव्वाण संजमं काउं । नीसेसकम्ममुक्को भरहरिसी सिवपयं पत्तो ॥ २८० ॥ दाणेण मुणिवराणं धणोवि कल्लाणभायणं होउं । तेलुक्कनमियचलणो जुगाइदेवो जिणो जाओ ॥ २८१ ॥ आह कह जुन्नसेट्ठीदिट्ठंतो अत्थऽदिन्नदाणोवि?। दिन्नं चिय भावेणं सोच्चिय जं उत्तमो एत्थ ॥ २८२ ॥ अविय-तस्सेरिसपरिणामो जेण तया केवलंपि पाविंतो । जिणपारणवुत्तंतं जइ न सुणंतो खणं एक्कं ॥ २८३ ॥ एत्तोच्चिय नवसेट्ठी जिणस्स वीरस्स लोगनाहस्स । जाइच्छियदाणेणं न भायणं सग्गमोक्खाणं ॥ २८४ ॥ अह पडिया तस्स गिहे वसुहारा तेण भावहीणंपि । दाणं तस्सवि सहलं (आचा०) किं इमिणा एग-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीयशो-
देवीये
प्रत्या
ख्यान
स्वरूपे

भविएणं ? ॥२८५॥ बलएवमहामुणिणो तवस्सिणो संखधवलदेहस्स। वड्डइणा पाहेयं दिन्नं परमाए भत्तीए॥ २८६ ॥
संवेगपुलइएणं अणंमिसबाहुल्ललोयणजुएणं । जाइस्सरहरिणेणंऽणुमोइयं तं च भावेणं ॥ २८७ ॥ ते तिन्निवि सुर-
लोए पवरविमाणे महिड्डिया देवा । एगावसेसगब्भा उववन्ना दिव्वबोंदिधरा ॥ २८८ ॥ अवरविदेहे गामस्स चि-
न्तओ रायदारुवणगमणं । साहू भिक्खनिमित्तं सत्था हीणे तहिं पासे ॥ २८९ ॥ दाणन्नपंथनयणं अणुकंप गुरू-
ण कहण सम्मत्तं । सोहम्मे उववन्नो पलिआउसुरो महिड्डीओ ॥ २९० ॥ लद्धूण य सम्मत्तं अणुकंपाए उ सो सु-
विहियाणं । भासुरवरबोंदिधरो देवो वेमाणिओ जाओ ॥२९१॥ चइऊण देवलोगा इह चेव य भारहम्मि वास-
म्मि । इक्खागुकुले जाओ उसुभसुयसुओ मरीइत्ति ॥ २९२ ॥ तत्तो कमेण लद्धुं केसवचक्कित्तणाइं सो जाओ ।
तिहुयणजाणियाणंदो चरमजिणो वद्धमाणोत्ति ॥ २९३ ॥ कयउन्नसालिभद्दा दरिद्दभावेऽवि पुव्वजम्मेसु । पत्तेसु
सुद्धदाणं दाऊणं सुद्धबुद्धीया ॥ २९४ ॥ लोगच्छेरयभूयं रूवं रिद्धिं सुहं च लहिऊण । जाया महातवस्सी उत्तम-
पयसाहगा खिप्पं ॥ २९५ ॥ पासंगियभोगेणं वेयावच्चामिह मोक्खफलमेव । आणाआराहणओ अणुकंपाइ व्व
विसयम्मि ॥ २९६ ॥ सुहतरुछायाइजुओ जह मग्गो होइ कस्सइ पुरस्स । एक्को अन्नो नेवं सिवपुरमग्गोवि इय ने-
ओ ॥ २९७ ॥ अणुकंपं वेयावच्च पाविओ पढमगो जिणाईणं । तयजत्तगो उ इयरो सदेव सामन्नसाहूणं॥२९८ ॥
ता नत्थि एत्थ दोसो पच्चक्खाएवि निरहिगरणंमि । गुणभावाओ य तहा एवं च इमं हवइ सुद्धं ॥ एत्थात्ति-भक्ता-
दिदानादौ ॥ २९९ ॥ फासियं पालियं चेव, सोहियं तीरियं तहा । किट्टियमाराहियं चेव, जएज्जेयारिसम्मि उ

दाने
दृष्टान्ताः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ३०० ॥ उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं । तह पालियं तु असई सम्मं उवओगपडियरियं ॥ ३०१ ॥ गुरुदाणसेसभोयणसेवणयाए उ सोहियं जाण । पुन्नेऽवि थेवकालावत्थाणा तीरियं होइ ॥ ३०२ ॥ भोयणकाले अमुगं पच्चक्खायंति भुंज किट्टिययं । आराहिय पगारेहिं सम्ममेएहिं निट्ठवियं ॥ ३०३ ॥ फासियपमुहपयाणं भणियत्थाणंपि इह पुणो भणणं । मंदमइसुमरणत्थं बहुसत्थपसिद्धिओ चेव ॥ ३०४ ॥ आह किमेयं संते पच्चक्खेयम्मि अह असंतम्मि? । जइ संते तो जुत्तं साहीणे चागजोगाओ ॥३०५॥ आहु असंते एवं सयंपि संढस्स बंभयारित्तं । तो विज्जमाणविसयं पच्चक्खाणं हवइ सहलं ॥३०६॥ (आचा०) बज्झाभावेवि इमं पच्चक्खंतस्स गुणकरं चेव । आसवनिरोहभावा आणाआराहणाओ य ॥३०७॥ न य एत्थवि एगंतो सगडाहरणाइ एत्थ दिट्ठंतो । संतंपि नासइ लहुं होइ असंतंपि एमेव ॥३०८॥ सगडोया(डस्सा)हरणं पुण किर केणइ माहणेण गीयत्थ । मुणिपुंगवपयमूले नाणाविहगोयरे नियमे ॥ ३०९ ॥ पडिवज्जंते बहुए तहाविहे माणवे निएऊणं । निग्गोयरात्ति अहला नियमा इइ मन्नमाणेणं ॥ ३१० ॥ उवहासबुद्धिण च्चिय निव्विसयंपि हु हवेज्ज जइ सहलं । पच्चक्खाणं मज्झवि सफलं होउत्ति भणिऊणं ॥ ३११ ॥ जावज्जीवंपि इओ सगडं मे सव्वहा न भोत्तव्वं । नियमो एवंरूवो गहिओ साहूण पच्चक्खं ॥ ३१२ ॥ तस्सऽन्नया कयाई कंतारुत्तिन्नछुहाकिलंतस्स । एगा नरवइधूया अववसणकए पयत्तेण ॥ ३१३ ॥ उद्धूलियजंघजुयं अप्पुव्वं माहणं पलोइंती । पक्कन्नमयं सगडं वियरइ पत्तीए काऊण ॥३१४॥ तो सो तं दट्ठूणं चिंतइ साहूहिं सोहणं भणियं । अस्संभाविवत्थूणवि कहिंचि जह संभवो होइ ॥ ३१५ ॥ तो सव्वमेव स-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

च्चं पच्चक्खाणं इमं च मे सगडं । भक्खत्ताए पत्तं कहं अहं नियवायाए ॥ ३१६ ॥ चइऊण साहुपुरओ नियवयणं लोविऊण भक्खेमि ? । इय चिंतिय तं सगडं परिहरई सो दिओ सहसा ॥ ३१७॥ मुणिवयणजायसड्ढो नरवइधूयाए बोहणानिमित्तं । सयलं नियवुत्तंतं कहेइ तीए सवित्थारं ॥ ३१८ ॥ सयपालणत्तिदारं सपसंगं वन्नियं अओ वोच्छं । पच्चक्खाणस्स फलं समासओ सुत्तनिद्दिट्ठं ॥ ३१९ ॥ एयं पच्चक्खाणं विसुद्धभावस्स होइ जीवस्स । चरणाराहणजोगा निव्वाणफलं जिणा बिंति ॥ ३२० ॥ पच्चक्खाणेण जिया थेवेणवि भावणाए चिन्नेणं । पावेंति सुहसमिद्धिं दामन्नगसत्तवइणोव्व ॥ ३२१ ॥ दामन्नग कुलपुत्तो वहविरइं पालिऊण दढचित्तो । तरिऊण आवयाओ जाओ भोगाण आभागी ॥ ३२२ ॥ अमुणियफल सत्तपए निवइकलत्तं च कायमंसं च । चइऊणं सुरलोए उववन्नो सत्तवइओऽवि ॥ ३२३ ॥ पच्चक्खाणेण मुणी तवोविसेसेहिं चित्तरूवेहिं । नाणाविहारिद्धीए सणंकुमारोव्व पावेंति ॥ ३२४ ॥ पच्चक्खाणेण जिओ आसवदारस्स निग्गहं कुणई । संवरियासवदारो कम्मेहिं न बज्झए कहवि ॥ ३२५ ॥ पच्चक्खाणेण तवो तवेण कम्माण निज्जरा होइ । निज्जरितकम्मकवओ जीवो पावेइ परमपयं ॥ ३२६ ॥ पच्चक्खाणमिणं सेविऊण भावेण जिणवरुद्दिट्ठं । पत्ता अणंतजीवा सासयसोक्खं लहुं मोक्खं ॥ ३२७ ॥ आवस्सयपंचासयपणवत्थुयविवरणाणुसारेणं । पच्चक्खाणसरूवं भणियं जसएवसूरीहिं॥ ३२८ ॥ पच्चक्खरगणणाए गंथपमाणं सयाणि चत्तारि । नयणवसुरुद्दमाणो (११८२) विक्कमनिववच्छरो एत्थ ॥ ३२९ ॥

॥ इइ सिरिजसोएवसूरिसुत्तियं पच्चक्खाणसरूवं सम्मत्तं ॥ ग्रन्थाग्रम् ४०० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नमः सरस्वत्यै ।

श्रीकातन्त्र (सारस्वत) विभ्रमसूत्रं सवृत्तिकं लिख्यते.

नत्वा जिनेन्द्रं स्वगुरुं च भक्त्या, तत्सत्प्रसादाप्तसुसिद्धिशक्त्या ।
सत्सम्प्रदायादवचूर्णिमेतां, लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥ १ ॥
प्रायः प्रयोगा दुर्ज्ञेयाः, किल कातन्त्रविभ्रमे ।
येषु मोमुह्यते श्रेष्ठः, शाब्दिकोऽपि यथा जडः ॥ २ ॥
कातन्त्रसूत्रविसरः खलु साम्प्रतं यत्, नातिप्रसिद्ध इह चातिखरो गरीयान् ।
स्वस्येतरस्य च सुबोधविवर्द्धनार्थस्त्वित्थं ममात्र सफलो लिखनप्रयासः ॥ ३ ॥

कस्य धातोस्तिबादीनामेकस्मिन् प्रत्यये स्फुटम् । परस्परविरुद्धानि, रूपाणि स्युस्त्रयोदश ? ॥ १ ॥

'कस्ये' त्यादि प्रश्नोऽत्र उत्तरं, गिरेतेरवपूर्वस्यानद्यतन्यामात्मने पदे मध्यमध्वमि सम्प्राप्ते रूपाणि स्युस्त्रयोदश, 'गॄ निगरणे' गॄ अष्टसु स्थानेषु स्थाप्यः अवपूर्वः, अग्रे अनद्यतनध्वंप्रत्ययः, 'भूते सि' (७-२-७) रिति सिः, इकारस्योच्चारणार्थत्वात् स्,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' दिवादावडि ' त्यडागमः, 'सिसतासीस्यपा' मिति (७-४-१०४) इट्, ' ध्वे च सेर्लोपो ' गुणः, गर्, 'इटो ग्रहा' (७-४-१२०)-मिति बहुवचनेन वृङ् सं० वृञ् वरणे दीर्घऋवर्णान्तानां इटो वा दीर्घत्वमिति क्षेमेन्द्रकृतव्याख्यातः वेट ईट्, स्वरहीनं, अवागरिध्वं अवागरीध्वं, वा लत्वं र् ल्, अवागलिध्वं अवागलीध्वं, तथा ' नामिनोऽचतुर्णां धो ढ ' (७-४-१२१) इत्यनेन सेटो हसाद्धेति वक्तव्यम्, ध्वमित्यस्य ढ्वं, अवागरीढ्वं अवागलीढ्वं अवागारिध्वं अवागालिध्वं, गॄ निगरणे ४ अवपूर्वः तनादिगणस्थः ध्वं प्र०, पूर्वमडागमः, भूते स्प्रत्ययः, ' स्वरान्तानां हनुग्रहदृशां भावकर्म्मणोः सिसतासीस्यपा मिति इट्, णित्त्वाद् वृद्धौ गार् ४ स्वरहीनं प० नाम्यन्ताद्धातोः ध्वं ढ्वं वा, वा लत्वं, अवागारिध्वं अवागालिध्वं अवागारिढ्वं अवागालिढ्वं ४, इडभावे गॄ ध्वं दिवादावद् भूतस् प्र० अवपूर्वः ' ध्वे च सेर्लोप ' इति स् लोपः ' ॠत इर् ' (७-४-१०२) इति इर् अवागिर् ध्वं इति स्थिते य्वोर्विहस इति दीर्घः गीर्, स्वरहीनं, नाम्यन्तात् ध्वमित्यस्य ढ्वं, अवागीर्ढ्वं इति सिद्धं, एवंविधानि त्रयोदश रूपाणि ॥ १ ॥

अग्निभ्यः पार्थिवेभ्यश्च, प्रथमान्तं पदद्वयम् । एषेति नैतदाबन्तं, श्वानस्येति च साधुता ॥ २ ॥

' अग्निभ्य ' इति चतुर्थीपञ्चम्योर्बहुवचनान्तमसंदिग्धं, प्रथमान्तं च सन्दिग्धमिति साध्यते, ' भ्यासि भ्यये ' भ्यस् भ्यसतीति क्विप् क्विप् सर्वापहारी लोपः, अग्निपूर्वः, अग्नेर्भ्यः अग्निभ्य इति पञ्चमी तत्पुरुषे प्रथमैकवचनं सिः 'हसेपस्सेर्लोप'(३-२-३) ' स्रोर्विसर्गः ' (४-४-९) अग्निभ्यः, यद्वा ' भये तु भी ' रित्येकाक्षरनिघण्टौ, भीर्भयम् अग्नेर्भ्यः १-३ । इभ्यः पार्थिवपूर्वः पार्थिव-

१ यद्वा ' ञिभी भये ' अग्नेर्बिभेर्ताति क्विप् १-३ अग्निभ्यः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्य-राज्ञः इभ्यः-ईश्वरः पार्थिवेभ्यः, अथवा इभी-हस्तिनी, पार्थिवस्य इभ्यो-हस्तिन्य इति प्रथमाबहुवचनं पार्थिवेभ्यः, एष् गतौ, एषतीति एष् क्विप् लोपः, तृतीयैकवचने एषा अथवा नसे—नासिकायै हितं नस्यं, हितार्थे यप्रत्ययः, नञ्पूर्वः, न विद्यते नस्यं अस्येत्यनस्यं, श्वेवानस्यं श्वानस्यं तस्य सम्बोधनं हे-श्वानस्य!, यद्वा 'अण् प्राणने' अन् अननं आनः, 'भावे घञ्' (घञ् भावे८-३-४)इ. तिघञ् प्रत्ययः ञित्त्वाद् वृद्धौ आन इति सिद्धं, शुनः आनः-प्राणः श्वानः तस्य श्वानस्य, षष्ठीतत्पुरुषः, यद्वा 'षोऽन्तकर्म्मणि' षो 'आदेः ष्णः स्नः' (७-४-७७) अग्रे हि, 'दिवादेर्य' (७-१-१५) इति यप्रत्ययः 'य्वो' रिति (७-४-७२) ओकारलोपः, 'अत' (७-३-१३) इति हेर्लुक् स्य, श्वान आमन्त्रणे, सिलोपः, हे श्वान स्य, श्वानशब्दस्याभिधानकोशोक्तस्य विषयतैव नास्ति,'शुनः श्वानो गृहमृग' इति हैमः ॥२॥

भवेतामिति शब्दोऽयं, बहुत्वे वर्त्तते कथम्? । यागः षष्ठीसमासः स्यात्, पञ्चमी पर्वतात् न तु ॥३॥

'भवेता' मिति, प्रश्नार्थस्य सुगमत्वान्निर्वचनमेव निर्वच्मः, 'इण् गतौ' इ भवः पूर्वः, भवं-संसारं यान्ति-गच्छान्ति इति क्विप 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुगि' (८-४-२२) ति तुक्, क्वित्त्वादन्ते क्विप् लोपः, भवेत्, षष्ठीबहुवचने आमि भवेतामिति सिद्धं । इः-कामस्तस्य आगः, यद्वा ईः-लक्ष्मीस्तस्या आगः-अपराधः यद्वा या-लक्ष्मीस्तस्या अगः-पर्वतः पादपो वा, यागः, त्रिष्वप्यर्थेषु षष्ठी-तत्पुरुषः, यद्वा 'यस्तु वाते यमेऽपि चे'त्येकाक्षरानिघण्टुवचनात् यः-यमस्तस्यागः-अपराधः-यद्वा 'यमो यः कथितः शिष्टैर्यो दातरि च

१ वा एषणं एष्. २ विनाशे.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दित' इत्युक्तत्त्वाद्यः-दाता तस्यागः-पर्वतो द्रुमश्च, इत्थमपि समाससम्भवः,'पूर्व पर्व सर्व पूरणे'पर्व अग्रे हि, अप् कर्त्तरी(७-१-१२)-त्यप् प्रत्ययः स्वरहीनं, तुह्योस्तातङ्ङाशिषि वे( )ति हेः स्थाने तात् पर्वतात्, यद्वा 'अद भक्षणे' अद् तिप् प्रत्ययः 'अप् कर्त्तरी'त्यप् 'अदादेर्लुगि'(७-१-१३) त्यपो लुक्, अत्ति, पर्वतम् अत्तीति क्विप् क्विपो लोपः प्रथमैकवचनं सिः 'हसेपः सेर्लोपः'(३-२-३)'वावसाने' (४-२-२७) पर्वतात्, यद्वा पर्वतमततीति, 'अत सातत्यगमने' इत्यस्मात् क्विप्, एवं वृक्षात्, घटादित्यादयो ज्ञेयाः ॥३॥

पंचड्ढलानि साधुत्वं, कथं याति च लक्षणात् । मुनीनामिति नो षष्ठी, त्याद्यन्तं चाऽश्व इत्यपि ॥४॥

'पंचड्ढलानी'ति, अत्रापि प्रश्नार्थस्य सुगमत्वान्निर्वचनं ब्रूमः, एवमुत्तरश्लोकेऽप्यूह्यं, पंचन् १-३ अग्रे षष् १-३ पंच षट् च पंचषाः, पंच वा षट् वा परिमाणमेषां 'टाडका' इति(६-३-१५) डप्रत्यये पंचषाः, पंचषानाचक्षते'ञिर्डित्करणे'(७-४-६) इति ञिप्रत्ययः, डित्त्वाट्टिलोपः, पंचषि अप् कर्त्तरि गुणायादेशौ पंचषयन्तीति क्विप् प्रत्ययः, क्विप् लोपे 'ञे' रिति (७-४-७१) ञिलोपे पञ्चष्, स्थित एव पञ्चष् १-३, अग्रे हलानि, पंचषां हलानि पञ्चड्ढलानि, मध्ये 'षो डः' (४-४-५) ड्, अन्तवर्त्तिनीं विभक्तिमाश्रित्य पदान्तत्वं, तस्माद् 'वाऽवसाने' (४-२-२७) अत्र हि वाशब्दस्य व्यवस्थितविकल्पार्थत्वाच्च षः ड्, 'हो झभाः' इति (२-३-४) हस्य ढः पञ्चड्ढलानि सिद्धं । मुनिः इनो यस्याः सा मुनीना तां मुनीनां, यद्वा मुनीनां इना-स्वामिनी तां २-१, अश्व इत्यस्य स्याद्यन्तत्त्वं प्रसिद्धं, त्याद्यन्तत्वं कथमिति प्रश्नः, 'ओ श्वि गतिवृद्ध्योः' श्वि दिवादिगणस्थः, सिपि प्र०स दिवादावडि(७-२-४) त्यद् 'लित्पुषादे'-(७-२-१५) रित्यादिशब्दाद् ङः प्र०, श्वयतेः श्वादेशः प्रयोगवशात् स्वरहीनं 'स्रोर्विसर्गः' (४-४-९) अश्वः ॥४॥

१ भौवादिकः

For Private and Personal Use Only

अष्टाविति कथं द्वित्वं, राजेभ्य इति साधुता । तेनेत्येतत्स्याद्यन्तं स्यादत्याद्यन्तं भवेदिति ॥५॥

'अष्टाविति' 'अशूङ् व्याप्तौ' अशूङ् अश्यतेऽस्म 'क्तक्तवतू' इति (८-२-१३) क्तप्रत्ययः, ' छशषराजादेः षः ' इति (४-४-१८) षः,'ष्टुभिःष्टु'रिति(२-३-७)टः, प्रथमाद्विवचनं औ, अष्टौ। राज्ञामिभ्यो राजेभ्यः षष्ठीतत्पुरुषः१-१। 'तनू विस्तारे' णबादिस्थोऽप्रत्ययः 'द्विश्च' (७-४-४३) 'लोपः पचां किल्ये चास्ये'ति(७-४-४५) पूर्वद्विवचनलोपः अकारस्यैकारः, स्वरहीनं० तेन। 'इण् गतौ' भवपूर्वः भवं संसारं शङ्करं वा एतीति क्विप् तुक्, क्विब्लोपे भवेत् १-१, ' हसेपः सेर्लोपः ' (३-२-३) ॥ ५ ॥

हस्तौ द्विवचनं नेदं, शोभनेष्वित्यसप्तमी । क्षीरस्येति न षष्ठीयं, त्याद्यन्तं वायुरित्यपि ॥ ६ ॥

'हस्ता' विति हस्ताविति द्विवचनान्तं प्रसिद्धं, द्विवचनान्तं नेदं कथमिति प्रश्नः, तत्र 'हस हसने' हस् 'स्त्रियां क्ति' रिति (८ ४-१६) क्तिः स्वरहीनं हस्तिः, ७-१ 'ङेरौ ङित्' (३-२-२१)। शोभना इषवो—बाणा यत्र कुले तत् शोभनेषु, 'नपुंसकात् स्यमोर्लुक्'(३-३-११)। हे क्षीर स्येति, 'षोऽन्तकर्म्मणि' धातुः, साधना प्राग्वत्, अथवा क्षीरमिच्छतीति 'करणे च यः' (ञिर्डित्करणे ७-४-६) इति सूत्रस्थचकारात् क्वचिदितीच्छायामपि यः प्रत्ययः, सुगागमोऽसुगागमश्चेति ज्ञातव्यमिति पुंजराजव्याख्यानात्, अनेन यः प्रत्ययः सुकागमः 'स धातु' रिति (७-४-१०) धातुत्वात् अग्रे हि 'अतः' (७-३-१३) इति हेर्लुकि क्षीर स्येत्यषष्ठ्यन्तं। 'वा गति गन्धनयोः' वा विधिसम्भावनयोः यादादिस्थो युस् प्रत्ययः, अप्प्रत्ययः अदादेर्लुक्, वायुः ॥ ६ ॥

दधिस्येति कथं साधु, मधुस्येति तथा परम् । केनेत्येतददान्तं स्यादपापा इत्यसुप्तता ॥ ७ ॥

For Private and Personal Use Only

'दधिस्येति' दधि मधु, दध्ना भोजनमिच्छति मध्विच्छति, 'करणे च य' इति यप्रत्ययः,सुगागमः हि अप् प्रत्ययः, अदेऽलोपः, 'अत' (७-३-१३)इति हेर्लुक्, दधिस्य मधुस्य,असुगागमे दध्यस्य मध्वस्येति सिद्धं। कं-वारि तस्य इनः-स्वामी केनस्तस्य सम्बोधनं केन!, अपापा इत्यसुप्तता-अस्याद्यन्तता त्याद्यन्तता साध्यते 'पर्द कुत्सिते शब्दे' पर्द् अत्यर्थं पर्दते 'अतिशये हसादेर्य'ङिति(७-३-५७) यङ् प्रत्ययः, 'वा अन्यत्रे'ति (८-२-२७) यङ्लुक्, 'द्विश्च' पपर्द् 'आत' इति (७-४-३५) पूर्वस्य दीर्घः, अनद्यतनस्प्रत्ययः, 'दिबादावद्' (७-२-४) 'सोऽपदान्ते रेफप्रकृत्योरपि दधो रत्वं इति व्याकरणान्तरसूत्रेण दस्य रः दूर्, 'दिस्योर्हसा'दिति (७-३-३) सूलोपः, 'रिलोपो दीर्घश्चे'ति (२-४-१२) रलोपः पूर्वस्य च दीर्घः 'स्रोर्विसर्गः' (४-४-९) अपापा इति सिद्धं, एवं स्पर्द्धेर्नद्धेश्च अपास्पाः अनाना इति भवति, एवमन्येषामप्येवंजातीयानां यङ्लुगन्तानामूह्यानि रूपाणि ॥ ७ ॥

एतेषां कथमेकत्वं, वनानि ब्राह्मणैरमी। वृक्षाः पचन्ति येषां यान्, वायुभ्यः पार्थिवाः सुराः॥ ८ ॥

'एतेषा' मिति वैषम्यमेव लिखामः, 'वन षण संभक्तौ' वन्, तुबादिस्थ आनिप्प्रत्ययः, 'अप् कर्त्तरि' 'सवर्णे दीर्घः' (२-१-१४) सह, वनानि। ब्राह्मण सम्बोधनं अग्रे 'इण् गतौ' इ, दिबादिस्प्रत्ययः 'अप् कर्त्तरि' 'अदादेर्लुक्' 'दिबादावद्' 'अइए' (२-१-१५) स्वरादेः 'ए ऐ ऐ' (२-१-१९) ऐः ब्राह्मणैः, हे ब्राह्मण! त्वं ऐः-गच्छ इत्यर्थः। अमोऽस्यास्तीत्यमि 'मान्तोपधाद्वत्विना' विति (६-१-३६) इन्प्रत्यये अमी। 'अस क्षेपणे' अस् वृक्षपूर्वः, वृक्षान् अस्यतीति क्विप् लोपः, प्रथमैकवचनं सिः १-१ 'हसेपः से०' वृक्षा । 'डु पचञ् पाके' पच्, पचतीति 'शतृशानौ तिप्तेवत्क्रियाया' मिति (८-२-१७) शतृ

प्रत्ययः, शकारश्चतुर्वत्कार्यार्थः, ऋकारोऽनुबन्धो नुमागमार्थः, 'अप्ययोरा' दिति (३-२-३२) नुमागमः 'ष्ट्रित्रित' (६-२-४) इतीप्, पचन्ती, धौ ह्रस्वः, हे पचन्ति ! । 'येषृ प्रयत्ने' येष्, येषणं येषा 'गुरोर्हसा' दिति (८-४-२०) अप्रत्ययः, स्त्रीत्वादाप् १-१ तां । 'या प्रापणे' , या यातीति यान्, 'शतृशाना' विति शतृ, 'सवर्णे दीर्घः सहे' ति (२-१-१४) दीर्घः, 'त्रितो नु' मिति (३-२-३०) नुम् १-१ । 'भ्यासि भये' भ्वादिः वायुपूर्वः, वायोर्भ्यसतीति वायुभ्यः, क्विप्प्रत्ययः लोपः, 'हसेपः सेर्लोपः' (३-२-३) स्रो० । 'असु क्षेपणे' अस् पार्थिवपूर्वः, पार्थिवं अस्यतीति क्विप् लोपः १-१ हसेपः 'स्रोर्विसर्गः' पार्थिवाः । 'षुञ् अभिषवे' षु, 'आदेः ष्णः स्नः' (७-४-७७) सु सु रापूर्वः, सुरां सुनोतीति क्विप् 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुगि' ति (८-४-२२) तुक्, सुरासुत् तमाचष्टे 'ञिर्डित्करणे' इति (७-४-६) ञिः, स च डित्, टिलोपे सुरासि, सुरासयतीति क्विप्, लोपः 'ञे'-रिति (७-४-७१) ञिलोपः सुरास् प्रथमैकवचनं सिः सुराः । यद्वा सुरानस्यतीति सुराः साधना प्राग्वत् । यद्वा रैशब्दः सुपूर्वः शोभना राः सुराः १-१ 'रैस्मी' त्याकारः 'स्रोर्विसर्गः' सुराः ॥ ८ ॥

शेषाणि पूर्वाणि समान्यजानां, फलानि मूलानि हलान्यगूनाम् ।
अभ्राणि नीलानि दलान्यतस्यः, शूलानि कूलानि तटान्यपापाः ॥ ९ ॥

'शेषाणी'ति, इह वक्ष्यमाणे च वृत्ते प्रथमादिबहुवचनान्तप्रतिरूपकाण्येकवचनान्तानि कथं स्युरिति प्रश्नार्थे वयं वच्मः, 'कष शष जष झष वष मष मुष रुष यूष जूष शिष हिंसायां' शिष्पूर्वः 'पर्व(पूर्व)सर्व पूरणे' पूर्व्, 'षम ष्टम वैक्लव्ये' षम्, 'आदेः ष्नः स्नः'(७-४-७७)सम्

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुबाद्युत्तमपुरुषे आनिप्, अप् कर्त्तरी' (७-१-१२) त्यप् शिषधातोरुपधागुणः, स्वरहीनं, सवर्णे दीर्घः सह, शेषाणि पूर्वाणि समानि। 'ज्ञा अवबोधने' ज्ञा, दिवा० अम्, अड् 'ना त्र्यादे' रिति (७-१-२०) ना प्र०,'ज्ञाजनोर्जा' इति (७-४-८५) जा आदेशः, सवर्णे०, मोऽनुस्वारः, अजानां। 'फल निष्पत्तौ' फल्, 'मूल प्रतिष्ठायां' मूल 'हल विलेखने' हल्, तुबाद्युत्तमपुरुषैकवचने आनिप्, 'अप् कर्त्तरी' त्यप् , सवर्णे दीर्घः सहेति दीर्घत्वे फलानि मूलानि हलानि सिद्ध्यन्ति, यद्वा फलपूर्वः 'णीञ् प्रापणे' णी, 'आदेष्णः स्नः' नी, फलमानयति यत् कुलं क्विप् प्रत्ययः, लोपः, नामसंज्ञायां स्यादिः, प्रथमैकवचने १-१ 'नपुंसकस्ये'ति (४-२-७) ह्रस्वत्त्वे 'नपुंसकात् स्यमोर्लुगिति (३-३-११) सिलोपे फलानि इति सिद्धः, एवमन्यावपि प्रयोगौ। न विद्यते गौर्येषां ते अगवः 'ना'(६-४-५)इति नञोऽकारः, 'गो' (४-२-६) रिति ह्रस्वः, तेषां अगूनामिति बहुवचनान्तं स्यात्, एकवचनान्तं तु 'गु पुरीषोत्सर्गे' गुवति स्म 'गत्यर्थादकर्म्मका'दिति क्तप्रत्ययः, 'ल्वाद्योदितश्चे'ति (८-४-३७) तस्य नत्वं, 'दुग्वोर्दीर्घश्चे'ति ज्ञापकाद्दीर्घत्वे गूना, स्त्रीत्त्वादाप् , न गूना अगूना तां २-१ सिद्धम् । 'अभ्र वभ्र मभ्र गतौ' अभ्र चेरेति गत्यर्थाः, 'नील वर्णे,' नील् , 'दल त्रिफला विशरणे' दल्, आनिप् प्रत्ययः, अपि प्रत्यये इष्टरूपासिद्धिः। अतसीशब्दाज्जसि बहुत्त्वं, एकत्त्वं पुनरित्थं-'तस क्षये' तस्, दिबादि स्प्र०,दिबादावट्,'दिवादेर्यः' (७-१-१५) स्वरहीनं, स्रो०, अतस्य इति सिद्धम् । 'शूल रुजायां' 'कूज आवरणे' 'तट समुच्छ्राये' सर्वत्राकारोऽनुबन्धः, साधना सुगमाऽभ्राणिवत् । 'पा पाने' 'पा रक्षणे' वा, अपपूर्वः, दिबादिः स, 'दिबादावट्' (७-२-४)'भूते सि'रिति(७-२-७) स् प्रत्ययः,'दादेः प'(७-३-१०) इति सिप्रत्ययलोपः, स्रोर्विसर्गः, अपापाः, पर्द्धातुना निष्पादितेन पूर्वश्लोकोक्तेन अनेन प्रयोगेण न पौनरुक्त्यं, धात्वन्तरत्वादर्थान्तरत्वाच्च ॥ ९ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखानि शीलानि नखान्यसास्नाः, खलानि पापानि बलान्यचर्चाः ।
पुराणि वर्षाणि मठान्यमीनाः, घनानि सर्वाणि बिलान्यपां च ॥ १० ॥

'सुखानी'ति, कथमेकत्त्वमित्यनुवर्त्तते, सुष्ठु--शोभनाः खानयो यत्र कुले तत् सुखानि १-१, यथा खनिशब्दस्तथा खानिशब्दोऽपि 'खनिः खानी'ति हैमलिंगानुशासनोक्तेः, यद्वा सुखमिवाचरति 'कर्त्तुर्यङ्'(७-४-५) अत्रार्थे क्विरपि वाच्य इति क्विप् प्रत्ययः, 'वे'रिति(८-४-२७) विलोपे आनिप्प्रत्यये सुखानि, अथवा सु-शोभनं खं-छिद्रादि तदिवाचरतीति, अथवा 'अन प्राणने' अन् सुखपूर्वः, सुखेन अनितीत्येवंशीलं 'णिनिरर्तीते' इति णिन्प्रत्ययः, णित्त्वाद् वृद्धौ प्रथमैकवचने 'नपुंसकात् स्यमोर्लुगि'ति(३-३-११)सेर्लुकि सुखानि, यद्वा सुखमानयति यत्कुलं तत् सुखानि, फलानीतिवत्साध्यं,पंचार्थाः।'शील समाधौ''उख नख णख वखे'ति दण्डकधातुः, प्राग्वत्साध्यानि शीलानि नखानि। असास्ना इति न विद्यते सास्ना येषां तेऽसास्नाः 'सास्ना तु गलकम्बल' इत्यमरः इति भूम्नि प्रसिद्धं, एकत्वं तु 'ष्णा शौचे' ष्णा, 'आदेः ष्णः स्नः' 'निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याभावः' इति स्ना, अत्यर्थं स्नाति 'अतिशये हसादेर्यङ् 'द्विश्चे'ति (७-३-५७) यङ्-प्रत्ययः, 'वाऽन्यत्रे'ति(८-२-२७) यङ्लुक्, द्वित्वं स्ना स्ना, 'पूर्वस्य हसादिःशेष'इति(७-४-२४) नकार लोपः, 'सधातु' (७-४-१०) रिति दिवादिगणगतसिप्प्रत्ययः स्, 'स्रोर्विसर्गः' असास्नाः। 'खल संचये'खल्, आनिप्प्रत्यये अपि खलानि सिद्धं। 'पा पाने' पा, अत्यर्थं पिबति, अतिशये यङ्, 'वान्यत्रे'ति(८-२-२७)यङ् लुक् 'ह्वादिवच्च द्रष्टव्य'मिति वचनादप्प्रत्ययः, 'ह्वादेर्द्विश्चे' (७-१-१४) त्यपो लुक् द्विश्च, तुबादिपरस्मैपदोत्तमपुरुषैकवचने आनिपि सिद्धं पापानि। 'बल प्राणधारणे' बल्. आनिपि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बलानि। न विद्यते चर्चा येषां ते अचर्चाः इति बहुत्त्वं, एकत्वे प्रश्नः, 'चृती ग्रन्थे हिंसायां च' चृत्, 'अतिशये हसादेर्यङि'ति (७-३-५७) यङ्, यङ्लुकि च ह्वादित्वादप् लुक् द्विश्च, 'र' इति(७-४-२८)रत्त्वे 'ऋदन्तानामृदुपधानां चे'ति(८-२-३०)पूर्वस्य रुक्, दिवादिस् प्र०,गुणः, तस्य रत्वे 'रिलोपो दीर्घश्चे'(२-४१२) ति रस्य लुकि पूर्वस्य दीर्घे अचर्चाः, यद्वा चर्चा इवाचरति 'कर्त्तुर्यङि'ति (७-४-५) 'अत्रार्थे क्विरपि वाच्य' इति क्षेमेन्द्रोक्तेः,'वे'रिति(८-४-२७) विलोप, अनद्यतने स् प्रत्ययः, दिबादावद्,स्रोर्वि०,अचर्चाः। 'पुर अग्रगमने' पुर्, तुदादि-तुबादिस्थ आनिप्, तुदादेरप्रत्ययस्यापित्त्वान्नोपधागुणः, णत्त्वं, पुराणि। 'वृष सेचने' वृष् आनिप्, अप्प्रत्ययः, अपः पित्त्वाद् 'उपधाया लघो' रिति(७-४-६०)गुणः, ऋकारस्य अर्, णत्वं, वर्षाणि। 'मठ मदनिवासयोः' मठ्, आनिपि अपि मठानि। न विद्यन्ते मीना-मत्स्या येषु ते अमीनाः, मीनशब्दे सत्ययं समासः, एकत्त्वं तु 'मीञ् हिंसायां' दिवादिसिः, दिबादावद्, 'नाक्र्यादे' रिति (७-१-२०) ना प्र०, स्रोर्वि० अमीना इति सिद्धं। घन इवाचरति 'कर्त्तुर्यङि' ति यङ्, यङ् लोपः आनिपि घनानि रूपं सिद्ध्यति। 'अन प्राणने' अन् सर्वपूर्वः सर्वमनितीत्येवंशीलं 'णिनिरतीते' (८-२-११) णिन् प्रत्ययः, णत्वं १-१ 'नपुंसकात् स्यमोर्लुक्' 'सवर्णे दीर्घः सर्वाणि। 'बिल भेदने' बिल्, आनिप् प्र० 'तुदादेरः'(७-१-१९) गुणनिषेधः बिलानि। 'पा पाने' अनद्यतने अम् दिबादावद् भूते सिः 'दादेः प' इति (७-३-१०) सेर्लोपः 'सवर्णे दीर्घः सह' 'मोऽनुस्वारः' (२-३-१८) अपां,यद्वा 'पा रक्षणे' पा, अनद्यतने अम्, अप्क-र्त्रीत्यप्, अदादेर्लुक् (७-१-१३) सवर्णे दीर्घः सहापामिति सिद्ध्यति॥१०॥ **समुच्चयाच्चकारस्य, स्याद्यन्तं भवतीत्यपि। तथा जग्लो दधौ मम्लौ, ददावित्यादयोऽपरे ॥१॥ जग्ले पपे ददे मम्ले, जज्ञे सस्त्रे मुखास्तथा। विना परोक्षम-भ्यूह्याः, स्याद्यन्ता बहवो बुधैः ॥ २ ॥** अनयोः सोपयोगित्वात् किंचिल्लिख्यते-'भू सत्तायां' भू, भवतीति 'शतृशाना'

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विति अत्प्रत्ययः, अप् कर्त्तरीत्यप् (७-१-१२) गुणः, ओ अव् , 'ष्ट्न्नित' (६-२-४) इतीप् भवति, सम्बोधने हे भवति!, 'धौ ह्रस्व' इति (३-२-११) ह्रस्वः। 'ग्लै हर्षक्षये' 'म्लै गात्रविनामे' 'डुधां धारणपोषणयोः' 'डुदां दाने' 'पा रक्षणे' 'ला आदाने' 'कै गै रै शब्दे' सन्ध्यक्षराणामा' (७-४-७३) इत्याकारः, ग्लायति स्म म्लायति स्म दधाति स्म ददाति स्म पाति स्म लाति स्म रायति स्म एभ्यो धातुभ्य आदृदितः किर्द्विश्चे' ति (८-२-३१) सूत्रेण कि प्रत्ययः, पश्चाद् द्विर्वचनं ह्रस्वः 'आतोऽनपी (७-४-६९) त्याकारलोपः, स्वरहीनं, जग्लिः मम्लिः दधिः ददिः पोपः ललिः ररिः जगिः इति जातं इकारान्तं, ७-१ ङेरौर्डित्' (३-२-२१) जग्लौ मम्लौ दधौ ददौ पपौ ललौ ररौ जगौ, एवं जग्लिमम्लिपपिदधिददिशब्देषु सम्बोधने 'धा' विति (३-२-१८) सूत्रेण एकारे कृते जग्ले मम्ले पपे इत्यादयः प्रयोगाः स्युः । 'सृ गतौ' सृ, सरति स्म'आदृतः किर्द्विश्चे ति (८-२-३१) किः, ककारः कित्कार्यार्थः, इप्रत्ययः, द्विर्त्वं, सृ सृ इति स्थिते 'र' (७-४-२८) इति पूर्व ऋकारस्य अत्वं, 'ऋ र' मिति (२-१-३) रत्वं सस्रिः, इकारान्तत्त्वे 'समानाद्धेर्लोपोऽधातो' रिति (३-१-६) धेर्लोपे 'धा' विति (३-२-१८) एत्त्वे सस्रे इति सिद्धं । 'जनी प्रादुर्भावे' ईकार 'आदीदित' इति सूत्रविशेषणार्थः, जन् , 'आदृतः किर्द्विश्चे' ति चकारादुपधालोपिन इति क्षेमेन्द्रोक्तेः चकाराद्गमिजनिहनिभ्यः किरिति **मण्डन**व्याख्यातश्च किप्रत्ययः, द्वित्त्वं, ज जन् इ इति स्थिते 'गमां स्वर' (७-४-६८) इत्युपधोलापे, स्वरहीनं, जज्ञि, पश्चादिकारान्तत्त्वेन हरिशब्दवत् सम्बोधने जज्ञे इति सिद्धं, एवं जग्मे जघ्ने इत्यादयोऽपि साध्याः । (जगाम न गमे रूपं) 'कै गै रै शब्दे' सन्ध्यक्षराणामाः, गा, गायतीत्येवंशीलः 'आदृतः कि' रिति किप्रत्ययः, द्विश्च, 'कुहोश्चु' रिति (७-४-२६) गस्य कः,

For Private and Personal Use Only

'आतोऽनपी' (७-४-६९) त्याकारलोपे जागिः, जंगिमाचष्टे 'ञिर्डित्करणे' इति (७-४-६) ञिप्रत्यये जगयति, जगयतीति क्विप् लोपः जग्, जग् इवाचरति 'कर्तुर्यङ्ङि' ति (७-४-५) यङ्, यङ् लोपः, तुवादिः आम जगाम इति रूपमनुक्तमपि प्रसङ्गादिह लिखितम्॥

अधीये नोपसृष्टस्य, शक्यतीत्यस्य साधुता । जागर्त्तीति न जागर्त्तेरुच्यतीति[2] च साधुता ॥ ११ ॥

'अधीये' इत्यादि, अधीये इति रूपं उपसृष्टस्य-उपसर्गसहितस्य 'इङ् अध्ययने' इ इङिकावध्युपसर्गतो न व्यभिचरतः इति सदा अधिपूर्वः, वर्त्तमाने ए, 'नुधातो' रिति (३-४-२१) इय् स्वर० अधीये, किन्त्वन्यथा साध्यते, 'धीङ् अनादरे' धी, अनद्यतने इ, दिबादावट्, 'दिबादेर्यः' (७-१-१५) 'अइ ए' (२-१-१५) अधीये, यद्वा 'डुधाञ् धारणपोषणयो' रित्यस्य धातोर्यकि प्रत्यये इ परे रूपं सिद्धम्। 'शकॢ शक्तौ' इति धातोर्यकि प्रत्यये कृते शक्यते इति भाव्यम्, 'शक मर्षणे' शक्, वर्त्तमाने तिप्प्रत्ययः दिवादेर्य इति यः, शक्यति, यद्वा शक्य इवाचरति कर्त्तुर्यङिति यङ्, लोपः, वर्त्तमाने तिप्, अप् कर्त्तरि इत्यप्, अदादेर्लुक्, शक्यति रूपं सिद्धं। जागर्तीति 'जागृ निद्राक्षये' इत्यस्य प्रसिद्धं, तत्र नेदमस्येति पृच्छ्यते, 'गॄ निगरणे' गर्हितं गिरति 'अतिशये हसादे' रिति (७-३-५७) यङ्, 'वाऽन्यत्रे' ति (८-२-२७) यङ् लुक्, 'ह्वादिवच्च द्रष्टव्य' मित्युक्तत्त्वाद् द्वित्वं, 'र' इत्यकारः, 'कुहोश्चु' रिति (७-४-२६) गस्य जः 'आत' इति (७-४-३५) दीर्घः, ऋकारान्तत्त्वान्न ऋगादयः, गुणः, जागर्त्ति । 'वच परिभाषणे' वच्, यक्, संप्रसारणे उच्यते इति भाव्यम्, साधुत्त्वं तु 'उच समवाये' उच्, वर्त्तमाने तिप्, दिवादेर्य इति य प्रत्यये सिद्धं उच्यति ॥ ११ ॥

१-जगिश्छान्दस इति हैमः २-त्यस्येतिद्विः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्यन्निति न शत्रन्तं, व्याघ्रा इत्यस्य चैकधा । बहुत्त्वं च तथैतेषामसुर्मेषारुरेव च ॥ १२ ॥

'अस्यन्निति' शत्रन्तं इति तावत् 'असु क्षेपणे' अस् अस्यतीति 'शतृशाना' विति (८-२-१७) शतृप्रत्ययः, दिवादेर्यः, अस्यन्, अशत्रन्तं तु 'षोऽन्तकर्म्मणि' षो, 'आदेः ष्णः स्नः' सो, दिवादिस्थः अन् प्रत्ययः, दिवादावट्, 'दिवादेर्यः' (७-१-१५) 'य्वो'-रिति (७-४-७२) ओकारलोपः, 'अदे' (७-३-१४) इत्यलोपः अस्यन् सिद्धं । व्याघ्रा इति जसन्तं प्रसिद्धम्, एकत्त्वं पुनरित्थं-'घ्रा गन्धोपादाने' घ्रा, दिवादि स्, भूते सिः, दिवादावट्, विआङ्पूर्वः 'घ्रासाच्छाशाधेटा' मिति सिलोपः, स्रो० व्याघ्राः सिद्धं । तथा एतेषां वक्ष्यमाणानां बहुत्त्वम्, असुः इति, असुशब्दः प्राणवाचकः १–१, बहुत्वं तु 'षोऽन्तकर्म्मणि' षो, दिवादि अन्, 'आदेः ष्णः स्नः', सो, 'भूते सिः' 'घ्रासाच्छाशाधेटा' मिति सिलोपः, 'स्याविद' (७-३-२१) इत्यन उस्, 'उस्यालोप' (७-३-३३) इत्यालोपः, स्वरहीनं, स्रो०, असुरिति सिद्धं, मेषेति मेषशब्दात् सम्बुद्धौ एकत्वं प्रसिद्धं, बहुत्त्वं तु 'कष शष जष झषे' त्यादि, मष हिंसायां मष्, परोक्षे अग्रे अ, द्विश्च 'लोपः पचां किस्ये चास्ये' ति पूर्वलोपः एकारः, मेष सिद्धम् । अरुष् शब्दो मर्मवाची, 'दोषां रः' १–१, बहुत्त्वं तु 'रा दाने' रा, अनद्यतने अन् प्रत्ययः, अप्, 'अदादेर्लुगि' (७-१-१३) त्यपो लुक्, 'स्याविद' (७-३-२१) इत्यन उस्, उस्यालोपः, स्रो०, अरुः सिद्धम् ॥१२॥ **पुनः समुच्चयाच्चस्य, शसन्तं पर्वतास्त्विवाति । आगमोऽनुजगृहे राजसे हरहरेऽव्ययम् ॥१॥** चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्त्वात् पर्वत इति द्वितीयाबहुवचनान्तं, पर्व धातोः शतृप्रत्यये पर्वत्शब्दात् २-३ पर्वतः, 'गम्लृ गतौ' गम्, आङ्पूर्वः दिवादि स्, 'लित्पुषादेर्ङ' (७-२-१५) इति अप्रत्ययः, दिवादावट्, स्रो० 'गमां स्वरे' (७-४-६८) इत्यत्र न ङे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति वक्तव्यं, तेनाऽऽगमदित्यत्रालोपाभावः इति क्षेमेन्द्रवचनात् आगमः सिद्धम् । अनुजातः अनुजस्तस्य गृहमनुजगृहं ततः ७-१ स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं कथं ?, 'ग्रह उपादाने' ग्रह्, णबादि ए द्विश्च 'णबादौ पूर्वस्येति' (८-४-३२) सम्प्रसारणं, रस्य ऋकारः, 'र' इत्यः 'कुहोश्चुः' (७-४-२६) 'ग्रहाङ्किति चे' ति (८-४-३१) द्वितीयसम्प्रसारणं, अनुपूर्वः अनुजगृहे सिद्धं । सह इना वर्त्तते इति सेः, राज्ञः सेः संबुद्धौ इति स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं तु 'राजृ दीप्त्या' मिति धातोः सेप्रत्यये अपि राजसे सिद्धम् । 'हृञ् हरणे' तुबादि हौ अप्प्रत्यये गुणे 'अत' इति (७-३-१३) हेर्लुकि सिद्धं हर, अस्यैव धातोरुभयपदित्वाद्वर्त्तमाने एप्रत्यये हरे रूपं साधु, अव्ययमिति ' व्येञ् संवरणे ' इत्यस्य दिवाद्यमिप्प्रत्यये अपि दिवादावडित्यटि, अयि व्यय गतावित्यस्य वा रूपम् ॥

एतानि न स्याद्यन्तानि, यस्य तस्याश्वमस्य च । शेलुर्बिभीतको वेणुः, पञ्चैते स्म ऋणानि च ॥ १३ ॥

'एतानी' ति, यस्येत्यादीनि स्याद्यन्तत्त्वेन प्रसिद्धानि, तानि त्याद्यन्तानि कथमिति प्रश्नः, तत्र 'यस्ये' ति 'यस् प्रयत्ने' हौ दिवादेर्य इति यप्रत्यये हेर्लुकि सिद्धम् । एवं 'तस क्षये' तस्य 'अस् क्षेपणे' इत्यस्य अस्य रूपं, यथा पूर्वं 'ओश्वि गतिवृद्ध्यो' रिति धातोः अश्व इति रूपं निष्पादितं तथा अमि प्रत्यये अश्वमिति सिद्धम् । शेलुः श्लेष्मातक इत्याभिधानात् १-१ स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं तु 'पल फल शल गतौ' शल्, यथा पेचुः तथा शेलुः सिद्ध्यति । बिभीतकः-प्रतीतः, त्याद्यन्तं तु 'ञिभी भये' भी, वर्त्त० तस्, अप्कर्त्तरीत्यप्, 'ह्वादेर्द्विश्च' 'झपानां जबचपाः' 'ह्रस्वः' बिभीतः, 'अव्ययसर्वनाम्ना' मिति सूत्रे चकारादाख्यातेऽप्यक् । 'अण रण वण व्रण गतौ' वण् वा 'वण शब्दे' इत्यस्य वेणुरिति प्रयोगो न भवति, बकारादीनां पूर्वलोपादेर्निषेधात्, तस्माद् रेणुरिति पाठो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्रष्टव्यः, रण शब्दे, साधना शेलुवत्, वेणुरित्याह च हेमसूरिः, पञ्च इतः-प्राप्तः पञ्चाभिः पञ्चभ्य इतः-प्राप्तः तस्मिन् पञ्चेते इति स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं तु 'पचि व्यक्तीकरणे' पच्, वर्त्तमाने आते, अप् प्रत्ययः, 'इदित' इति (७-४-९६) नुम् 'आदाथ इः' (७-३-१६) पञ्चेते सिद्धं। स्म इति अतीतद्योतकः, स्मेति निपाति ह्रस्वः णत्वं ऋणानि सिद्धम्[1] (?)॥१३॥ चस्य समुच्चयार्थत्त्वात्-समुच्चयात्पुनश्चस्य, प्रयोगास्त्यादिजा अमी। अस्यास्तस्याश्च यस्याश्च, कस्या इति चतुष्टयी ॥ १ ॥ 'अस् क्षेपणे' 'यस मोक्षणे' 'तस क्षये' 'कस गतिशातनयोः' कस्, आशिषि यास्, स्वरहीनं, अस्याः तस्याः यस्याः कस्याः इति रूपाणि स्युः।

एकस्य कस्य धातोः स्यात्त्यादौ रूपचतुष्टयम्। पर्वाणि पर्वतं पर्व पर्वतोऽपूर्वमेव च ॥ १४ ॥

'एकस्ये' ति कस्यैकस्य धातोः त्यादौ स्याद्यन्तप्रतिरूपकं रूपचतुष्टयं भवतीति प्रश्नार्थः, 'पूर्व पर्व सर्व पूरणे' पर्व, परतः आनि तस् हि तुबादि तं प्रत्ययः, सर्वत्राप्प्रत्यये पर्वाणि पर्वतः पर्व पर्वतमिति रूपचतुष्टयं, पूर्वधातोर्दिवाद्यम्प्रत्ययेऽपि अटि 'अदे' अपूर्वं सिद्धम् ॥ १४ ॥

चस्य समुच्चयार्थत्वात् । जलानि वातो वातं च, वातः प्रातस्तथैवहि । श्यामाऽध्यायोऽनलश्चाप्यक्षरं चस्य समुच्चयात् ॥ १ ॥ 'जल धान्ये' जल, आनिपि अपि जलानि। वा गतिगन्धनयोः वा, अत्र तस् तुबादि तं त, अप् 'अदादेर्लुक्' वातः वातं वात इति३रूपाणि। 'प्रा पालनपूरणयो' प्रा, वर्त्तमाने तसि अपि अदादेर्लुक् प्रातः। 'श्यैञ् गतौ, श्ये, वर्त्तमाने मस्,'

[1] तुबादिमप्रत्यये ' अस् भुवि ' इत्यस्य स्मेति। 'ऋशृगतौ' क्र्यादौ ल्वादौ आनिपि णत्वे ह्रस्वेऋणानि.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्ध्यक्षराणामाः,अप्, अदादेर्लुक्, श्यामः,यद्वा'शो तनूकरणे' इत्यस्य मसि रूपं । 'ध्यै चिन्तायां'ध्यै, दिवादिस्, अप्कर्तरीत्यप्, अडागमः, ऐ आय् अध्यायः । 'णल गन्धे'आदेःष्णः'नल्, अनद्यतने स्, अप् अट्, अनलः। 'क्षर सञ्चलने' क्षर,, अनद्यतने अम्, दिवादावट्, अक्षरमिति'। इति समुच्चयरूपाणि भवन्ति ॥ **वेम नेम मम स्यामो, दाम विश्राम वाम च । बहुत्वं कथमेषां स्यादेकत्वं भवतामपि ॥ १ ॥ आदिदेवेत्यसम्बुद्धिः, पाथ इत्यनपुंसकम् । अजागाः कथमेकत्वं, कथं सिद्ध्येत्तथा मधुक् ॥ २ ॥** इदं श्लोकद्वयमवचूरिकृता कृतमस्ति प्रसङ्गतः ।

अशोकोऽनौस्तथा वाताद्श्रीणामरुणोऽवनम् । वनानि स्वोऽखिलं यानि, शुभानि च रणानि च ॥ १५ ॥

'अशोक०' इति स्याद्यन्ताः प्रायः सुगमा एवेति त्याद्यन्ता एव दर्श्यन्ते, 'शुक गतौ' शुक्, अनद्यतने स्, दिवादावट्, अप् कर्त्तरीत्यप्, उपधाया लघोरिति गुणः, स्रो०, अशोकः सिद्धं । न नौरिति अनौः-तरेरन्यत् इति स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं तु 'णु स्तुतौ' णु 'आदेः ष्णः स्नः' नु, अनद्यतने स्, दिवादावट्, 'ओरा' (७-४-८२) वित्यौकारः, अनौः सिद्धं । 'वा गतिगन्धनयोः' वा, तुप् अप् अदादेर्लुक्, 'तुह्योस्तातङाङि' ति तात् हेरपि वातात् । 'श्रीञ् पाके' श्री, दिवादि अम्, 'ना क्र्यादेः' दिवादावट्, सवर्णे दीर्घः सह, णत्वं प्वादिष्वपाठान्न ह्रस्वत्त्वं, नाप्रत्ययस्य ङित्त्वाद् गुणाभावः, अश्रीणामिति सिद्धम् । अरुणः सूर्यस्य सारथिः वर्ण-विशेषो वा, त्याद्यन्तं तु 'रुधिर् आवरणे' रुध्, 'रुधादेर्नम्' (७-१-१७) दिवादावट्, णत्वं, 'दिस्योर्हसा' दिति (७-३-३) स् लोपः, 'वाऽवसाने' (४-२-२७) इति धस्य दत्त्वे, 'दः स' (४-४-२४) इति सत्वं, अरुणः । 'वन षण संभक्तौ' वन् भौवादिकः,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिवादि अम्, अप्, अवनम्, एवमानिप्प्रत्यये वनानि सिद्ध्यति, यद्वा 'अन प्राणने' वनपूर्वः वनमनिति स्मोति' णिनिरतीते' (८-२-११) इति इन्, वनानि १-१, 'नपुंसकात् स्यमोर्लुगि' ति लुक्। 'अस भुवि' इति धातोर्वसि प्रत्यये 'नमसोऽस्ये' (७-३-२६)-त्यलोपे स्वः इति सिद्धम्। खिलमिवाचरं 'कर्तुर्यङ्डि' ति क्विप् लोपः, अनद्यतनेऽम्, अप् लुक् अखिलं सिद्धं। 'या प्रापणे' इत्यस्य आनिपि यानिरूपं । 'शुभ शुंभ् शोभार्थे' शुभ तुदादिः, 'रण शब्दे' रण् भुवादिः, आनिपि परे शुभानि रणानि सिद्धम् ॥ १५ ॥

उपलक्षणतो लोके, इति रूपस्य विभ्रमे । कुण्डे पिण्डे तथा मुण्डे, मुण्डे चण्डे च खण्डके ॥ १ ॥ 'कुडि दाहे' कुड्, 'पिडि सङ्घाते' पिड् 'मुडि मज्जने उद्यमे वा' मुड्, चडि कोपे चड् 'खडि मन्थने' खड्, सर्वत्र वर्त्तमाने ए प्रत्ययः, 'इदित' (७-४-९६) इति नुम्, कुण्डे पिण्डे इत्यादिरूपाणि स्युः, एतानि सप्तम्येकवचनप्रातिरूपकाणि प्रथमाद्वितीयाद्विवचनसदृशानि वा ।

सास्नाया अकृशोऽताता, अममा अवटोऽनृणाम् । रेफ वेष रवेऽपेपेरदोधूर्तानिलः कुतः ॥ १६ ॥

'सास्नाया' इति, इहापि प्रायः स्याद्यन्तप्रतिरूपकाः, सास्नाशब्दस्य षष्ठ्येकवचनान्तस्यादौ रूपं, क्रिया तु 'ष्णा शौचे' 'आदेः ष्णः स्नः' (७-४-७७) स्ना, अत्यर्थं स्नाति, 'अतिशये हसादे' (७-३-५७) रिति यङ्, यङो लोपे द्विर्वचनं 'पूर्वस्य हसादिः शेष' इति (७-४-२४) नस्य लोपे आशीर्यास्प्रत्ययः, सास्नायाः सिद्धं । 'कृश तनूकरणे' कृश्, अनद्यतने स्, दिवादावद् 'लित्पुषादे' (७-२-१५)रित्यप्रत्ययः, स्वर० अकृशः इति सिद्धम्। नास्ति तातो येषां तेऽताताः १-३ स्याद्यन्ते, क्रिया तु 'तर्द हिंसायां' तर्द, अत्यर्थं तर्दति यङ्, यङ् लुक्, द्विश्च, अनद्यतने स्, अद्, सौ पदान्ते रेफप्रकृत्त्योरपि दधो रत्वं, 'आत' इति (७-४-३५) पूर्वस्य ॥ ४३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीर्घत्वे 'दिस्योर्हसादि' ति स्लोपः, 'रिलोपो दीर्घश्चे' ति (२-४-१२) रलोपः, अताताः, अथवा 'तनूकरणे तन्' अत्यर्थं तनोति 'तनोतेर्नो वा' इति (तनोतेर्वा ७-४-७५) नस्यात्त्वं, शेषं प्राग्वत्। न विद्यते मर्म यासां ता इति विग्रहे 'टाडका' इति (६-३-१५) डप्रत्यये 'आबतः स्त्रिया' (६-२-१) मित्यापि अमर्म्माः १-३ रूपं, क्रिया तु 'मृद क्षोदे' मृद्, अत्यर्थं मृद्नाति यङ् लुक् द्विश्च रः 'ऋदुपधाना (रीगृ उपधायाः७-४-३७)' मिति ऋगागमः, अनद्यतने स् गुणः अर्, दकारस्य रत्वे 'दिस्योर्हसादि' ति सिपि लुप्ते 'रि लोपो दीर्घश्चे' ति अमर्मा इति सिद्धं । 'वट वेष्टने' वट्, अनद्यतने स् दिबादावट् अप् कर्त्तरीत्यप्, स्त्रो०, अवटः सिद्धं, 'वट परिभाषणे' इत्यस्य वा रूपं, अन्यथा तु 'अवटो गर्त्तः' । 'अनृणा' मिति, 'नृञ् नये' नृ, अनद्यतने अम्, 'ना ऋयादेः' (७-१-२०) 'प्वादेर्ह्रस्वः' (७-४-९३) णत्वं, सवर्णे०, अट् अनृणामिति सिद्धम्, नृशब्दः नञ्पूर्वः न नरोऽनरस्तेषामिति स्याद्यन्तं । 'वर्फ रफ रिफ गतौ' रफ्, परोक्षेऽप्रत्ययः, द्विश्च, 'लोपः पचां कित्ये चास्ये' (७-४-४५) ति पूर्वलोपः अकारस्यैकहसस्यैकारः, स्वर० रेफ सिद्धं । 'जिष् विष् मिष् निष् पृष् वृष् सेचने' विष्, तुदादि हिः, 'अप्कर्त्तरी' त्यप् 'उपधाया लघो' रिति (७-४-६०) गुणः, 'अत' इति (७-३-१३) हेर्लुक्, स्व०, वेष सिद्धं । केचित्तु 'वष हिंसाया' मित्यस्य णादिमध्यमपुरुषबहुत्वे वेषेत्याहुः, तदसत्, लोपः षचां कित्ये चास्येति सूत्रे चकाराद्वकारादित्वादेत्त्वपूर्वलोपयोरसम्भवात् । रविशब्दादामन्त्रणे सौ, यद्वा रवशब्दस्य सप्तम्येकवचनान्तस्य स्याद्यन्तता, क्रिया तु 'रुङ् रोषणे' रु, वर्त्त० ए, 'अप्कर्त्तरी' त्यप्, गुणः, 'अदे' (७-३-१४) इत्यलोपः, अइ ए, रवे सिद्धं । 'पि गतौ' पि इत्यस्माद्यङि लुकि द्वित्वे 'यङी' ति (७-४-३४) पूर्वस्य गुणे गुण इति परस्य गुणे दिबादिसिप्प्रत्यये स्रोर्वि० अपेपेः, यद्वा 'पिसृ पेसृ वेसृ गतौ' पिस्, अत्यर्थं पेसति 'अतिशये हसादे' रिति यङ् 'वाऽन्यत्रे' ति यङ्लुकि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिबादिसिप्, दिबादावट्, गुणः, 'दिस्योर्हसादि' ति सिप्लोपः 'स्रोर्विः' अपेपेरिति सिद्धम्। 'उर्वै तुर्वै थुर्वै दुर्वै धुर्वै जुर्वै अर्व भर्व शर्व हिंसायां' धुर्व्, ऐकार ऐदित्कार्यार्थः, अत्यर्थं धूर्वति 'अतिशये हसादे' रिति (७-३-५७) यङ् लुक् द्वित्वं 'झपानां जबच-(बाश्च) पा' इति (७-४-२७) पूर्वधस्य दः, 'यङी' ति (७-४-३४) पूर्वनामिनो गुणः, 'लोपो व्योर्वस' इति क्षेमेन्द्रकृतवृत्ति-सूत्रेण वकारलोपः, दो धुर् इति स्थिते दिबादितप्रत्ययः, दिबादावट् इत्यट्, 'यूवोर्विहसे' (७-४-१३) इति दीर्घत्वे रेफस्योर्ध्वग-मने द्वित्वे अदोधूर्त्त सिद्धं। अनिल इति 'णिल गहने' णिल्, तुदादिः, 'आदेः ष्णः स्नः' इति नत्वे दिबादिसिप्प्रत्यये 'तुदादेर' (७-१-१९) इत्यप्रत्ययेऽनिलः । कुत इति 'टु क्षु रु कुक् शब्दे' ककारः परस्मैपदार्थः, वर्त्त० तस्, अप्, अदादेर्लुगित्यपि लुकि कुतः सिद्धम्, स्याद्यन्तता सुगमेति न लिखिता ॥ १६ ॥

|| ४५ ||

अरये नभसे पयसे वयसे लोके नसे गवे वृक्षे। अह्वयोऽक्रवेऽयसे लेखे रेखे रजसि रेजेऽलिट् ॥ १७ ॥

'अरये' इत्यादि, स्याद्यन्ताः सुगमाः, क्रियारूपे तु साधनां ब्रूमः, 'अय वय पय मय नय रय गतौ' भ्वादिः रय्, दिबादि-इप्रत्ययः, अप्कर्त्तरीत्यप्, दिबादावट्, अइ ए अरये। 'णुभ णभ हिंसायां' णभ्, आदेः ष्णः स्नः, नभ्, वर्त्त० सेऽप् नभसे। 'अय वय पय मय गतौ' पय् वय्, नभसेवत् साधना, पयसे वयसे। 'लोकृ दर्शने' लोक्, वर्त्त० ए, अप्, अदे, अइए, लोके। 'णस् कौटिल्ये शब्दे वा' णस्, आदेः ष्णः स्नः, नस्, वर्त्तमाने ए, 'अप् कर्त्तरी'त्यपि नसे, नासिकाशब्दस्य चतुर्थ्येकवचने नसादेशे, यद्वा शकट-पर्याये अनस्शब्दे चतुर्थ्येकवचनान्ते ज्ञेयं स्याद्यन्तं। उङ् कुङ् घुङ् गुङ् घुङ् शब्दे, गु वर्त्तमाने ए, अप्, गुणः, ओ अव्, गवे सिद्धं।

|| ४५ ||

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'वृक्ष वरणे' वृक्ष्, वर्त्तमाने ए, अप्, वृक्षे, यद्वा अनयोरेव धात्वोः अनद्यतने इप्रत्यये अगवे अवृक्षे सिद्धं। अहय इति, हयशब्दान्नञ्पूर्वात् १-१ अहिशब्दाद्वा जसि, क्रिया तु 'हय गतौ' (क्रान्तौ वा) हय्, अनद्यतने सि, अप्, दिबादावट्, स्रो०, अहयः सिद्धं। 'उङ् कुङ्' कु, वर्त्तमाने इप्रत्यये (नञि) सिद्धं, त्याद्यन्तं, स्याद्यन्तं तु न कविः अकविस्तस्यामन्त्रणे, नञ्पूर्वात् कुशब्दाच्चतुर्थ्यां वा अकवे इति ज्ञेयम्। अयसे इति लोहवाची चतुर्थ्यन्तः, क्रिया तु 'अय गतौ' अय्, वर्त० से, अप्, अयसे सिद्धम्। 'उख नख णख० गतौ' 'लख् रख्' परोक्षे एप्रत्ययः, द्विश्च 'लोपः पचा'मितिपूर्वलोपः एकारश्च लेखे रेखे सिद्धं। रजसि इति पांशुरेणुः ७-१, क्रिया तु 'रंज रागे' रंज्, वर्त्त० सि, अप्, 'अपि रांजिदंशे'(?) ति नलोपः, स्वर० रजसि सिद्धं। 'रेजे अलिडि'ति लिट् इति परोक्षप्रत्ययानां संज्ञा पाणिनीयानां, परोक्षप्रत्ययं विना रेजे इति व्युत्पादनीयं, परोक्षे त्वेवं-'राजृ दीप्तौ' राज्, परतः णबाद्यात्मनेपदे ए द्विश्चेति द्वित्वं, रराज् ए इति स्थिते 'लोपः पचां कित्ये चास्ये' (७-४-४५) ति सूत्रस्थचकारात् पूर्वस्य रस्य लोपः अकारस्य एकारः, स्वरहीनं, रेजे इति सिद्धम् परोक्षं विना रेजे इति कथं सिद्ध्यतीति प्रश्नः, इहोत्तरं-'रेजृ दीप्तौ रेज्, ऋकार इत्, भुवादिः, तिबाद्यात्मनेपदोत्तमपुरुषैकवचनं ए, अप्कर्त्तरीत्यप्, अदे इत्यलोपः, यद्वा 'ऋजि गतिस्थानार्जनेषु' अमुं कश्चिद् व्यञ्जनादिं पठति, तन्मतमाश्रित्य प्रयोगोऽयं रिज्, गुणकृतस्तु विशेषः, शेषं प्राग्वत्, रेजे इति सिद्धम् ॥ १७ ॥

अद्यौर्न नञ्समासोऽयं, सर्वेषामिति चैकता। अन्येषामपरेषां च, केषां कासां तथा दश ॥ १८ ॥

'अद्यौ' रिति न द्यौरद्यौरिति नञ्समासः, प्रतिपक्षस्तु 'द्यु अभिगमने' द्यु, अन० सि दिबादावट् 'ओरा' (७-४-८२) वि-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्यौकारः, स्रो०, अद्यौः सिद्धं। सर्वेषामिति, सर्वा चासौ ईषा च सर्वेषा ताम् २-१, 'ईषा सीते तद्दण्डपद्धती' इतिहैमाभिधाने। अन्येषां अपरेषां च सर्वेषांवत् ज्ञेयौ। कस्य ईषा केषा तां २-१। कासामिति 'कासृ शब्दकुत्सायां' कास्, कासनं कासा, गुरोर्हसादि'(८-४-२०)-त्यप्रत्ययः, 'आबतः स्त्रिया' (६-२-१) मित्याप्, २-१। 'दंश दंशने' दंश, तुदादि हिः, अप्, 'अपि रंजिदंशे' ति नलोपः, 'अत' इति हेर्लुकि दश इति सिद्धिः । एते एकवचनान्तत्वाद्विभ्रमविषयाः, चस्य समुच्चयार्थत्वं दर्श्यते—**समुच्चयाच्चकारस्य, चक्र सम्बोधनं विना । अवस्था इति शब्दोऽपि, स्यादेकवचनः कथम् ?, ॥ १ ॥** तेन चक्र इति आमन्त्रणैकवचनान्तप्रतिरूपकम्, बहुवचनान्तं तु वच्मः-'डुकृञ् करणे' कृ, परोक्षे अ, द्विश्च, रः, 'कुहोश्चुः' (७-४-२६) 'ऋ र'मिति रत्त्वे चक्रेति सिद्धम्। 'वस आच्छादने' वस्, अनद्यतने थास्, दिबादावट्, अप्, अदादेर्लुगित्यपो लुक्, स्वर०, स्रोः. अवस्थाः ॥ १८ ॥

अगारं द्वे पदे स्यातां, प्रथमान्तं शुनस्तथा । कर्तृरूपे कथं स्यातां, दीयते धीयते तथा ? ॥ १९ ॥

अगारमिति गृहवाचि एकं पदं, द्वे पदे तु 'अग कुटिलायां गतौ' अग्, तुबा० हि, अप्, अतः, स्वर०, अग सिद्धं । 'ऋ गतौ' ऋ, अद्य० अम्, 'लित्पुषादे' (७-२-१५) रित्त्यप्रत्यये गुणे अटि आरं, अगारं सिद्धं, यद्वा 'इण गता' विति धातोर्दिबादिसिपि भूते सिरिति सौ 'दादेः पे' (७-३-१०) इणः सिलोपे गा इति कृते अटि अगाः, रमिति 'रः कामे तीक्ष्णे वैश्वानरे नरे । रामे वज्रे' इत्येकाक्षरोक्तेः रशब्दात् २-१, यद्वा अगशब्दात् सम्बुद्धौ अरमित्यत्यर्थं अगारमिति । शुनशब्दात्प्रथमैकवचने स्रो०, यद्वा 'शुन गता' वित्यस्य शुनतीति 'नाम्युपधात्क' (८-१-५) इति के १-१ शुनः । 'डुदाञ् दाने' 'दाप् दाने' 'दो अवखण्डने' 'देङ्

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पालने' इत्येतेषां चतुर्णां तेप्रत्यये भावकर्म्मणोर्यकि 'दादेरि' (७-४-१५) रितीत्त्वे दीयते इति स्यात्, 'धेट् पाने' 'डुधाञ् धारणपोषणयो' रनयोर्भावकर्म्मणोर्यकि धीयते इति भवति, तत्र कर्त्तरि कथं स्यातामिति प्रश्नः, 'दीङ् क्षये' 'दी धीङ् अनादरे' धी, वर्च० ते, 'दिवादेर्य' (७-१-१५) इति यप्रत्यये दीयते धीयते ॥ १९ ॥

त्याद्यन्तमालयं प्रोक्तमसमस्तमजापयः । अन्यान्योऽनालयश्चैव, ह्यश्वालयमशालयः ॥ २० ॥

'त्याद्यन्त' मिति, आलयशब्दो गृहवाची पुल्लिङ्गः,द्वितीयैकवचने आलयं इति स्याद्यन्तं, त्याद्यन्तं पुनरेवं 'अली भूषणपर्याप्तिवारणेषु' अल्,अलन्तं प्रयुंक्ते 'धातोः प्रेरणे' (७-४-८) इति ञिप्रत्ययः, ञित्त्वाद् वृद्धिः, आलि इति स्थिते परतो अन० अम्, 'अप् कर्त्तरी' त्यप् गुणायादेशौ, अटि, स्वर०, सवर्णे, आलयं सिद्धं । अजायाः पयोऽजापय इति षष्ठीसमासे प्रसिद्धमेतद्, असमस्तं तु कथमिति प्रश्नः, तत्र 'जप मानसे च' मनोनिर्वर्त्त्ये वचने इत्यर्थः, चाद् व्यक्ते वचने जप्, जपन्तं प्रेरयति 'धातोः प्रेरण' (७-४-८) इति ञिः, वृद्धिः, जापि, अन०स्, अप्, गुणे अयादेशे दिबादावडित्यटि स्व०स्रो० अजापयः, यद्वा 'जि अभिभवे' जिधातोः प्रेरणे ञिः, जयन्तं प्रयुंक्ते, 'इङादेर्जौ पुगि'ति पुक्, इकारस्य आ, जापि, शेषं प्राग्वत्, अजापयः सिद्धं । 'णीञ् प्रापणे' णी, नी, नञ्पूर्वः न नी अनी अन्याश्च ता अन्यश्चान्यान्यः १-३ प्रथमाबहुवचने सवर्णे० स्रो० । अश्वालयमिति अश्वानामालयः अश्वालयस्तमिति समासपदं, असमासे तु 'श्वल श्वल्ल गतौ' श्वल्, श्वलन्तं प्रेरयति धातोः प्रे० ञिप्र० वृद्धिः, श्वालि अन०अम् अपि गुणे अयादेशे अश्वालयमिति सिद्धं । चैव हीति छन्दःपूरणे निपातः । 'णल गन्धे' णल्, नलन्तं प्रयुंक्ते प्रेरणे ञिः वृद्धिः नालि अनद्य०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स् अपि गुणे अपि स्वर० स्रोर्वि० अनालयः । 'शल चलने वा' 'शाल कत्थने वा' 'पल फल शल गतौ' शल्, शलन्तं प्रेरयति अनालयवत् साध्यं अशालयः, ॥ "अजिनान्यधिक्षताधुक्षतेत्त्याद्यपराण्यपि। शेषे च देवता देवतामित्यादि चकारतः ॥१॥" अजिनानि 'ज्या वयोहानौ' ज्या क्रयादिः, आनिप् 'ना क्रयादे' रिति नाप्रत्ययः, 'ग्रहाङ्किति चे' (८-४-३१) संप्रसारणं यकारस्य इकारः, दीर्घस्य दीर्घः जी 'प्वादेर्ह्रस्व' इति जि नञ्पूर्वः, न जिनानि अजिनानि सिद्धं । 'धिक्ष धुक्ष सन्दीपनक्लेशनयाचनेषु' धिक्ष् धुक्ष्, अनद्य० तप्र० दिवादावद्, अप्कर्तरीत्यप्, स्वर० अधिक्षत अधुक्षत सिद्धं, यद्वा 'दिह उपचये' दिह्, 'दुह प्रपूरणे' दुह् अन० तन् प्र०, 'हशषान्तात् सगि (७-२-१३) ति सक् प्रत्ययः 'दादेर्घः' (४-४-१५) 'आदिजबानां झभान्तस्ये' ति (४-४-२८) दस्य धः, 'खसे चपा झसाना' मिति (४-४-२५) घस्य कः, कषसंयोगे क्षः अधिक्षत अधुक्षत । 'शीङ् स्वप्न' इत्यस्यात्मनेपदिनः वर्त्तमाने मध्यमपुरुषैकवचने शेषे । 'देवृङ् देवने' देव्, वर्त्त० ते, तुबादि तां, अप् , देवते देवतां सिद्धम् ॥ २० ॥

अव्याधयोऽसमस्तं स्यात्, येयेषांचक्रिरे पदम्। अक्षेपयस्तथा चान्यदक्षेवयममीवयम् ॥ २१ ॥

॥ इति कातन्त्रविभ्रमसूत्रं सम्पूर्णम् ॥

'अव्याधय' इति, न विद्यते व्याधिर्येषां ते अव्याधयः इति समस्तम्, असमस्तं तु 'व्यध ताडने' व्यध्, विध्यति कश्चित्तमन्यः प्रयुङ्क्ते 'धातोः प्रेरणे' ञिः, वृद्धिः, व्याधि, अनद्य०स् शेषं अशालयवत् साध्यम् अव्याधयः । येयेषांचक्रिरे इति पदत्रयसदृशमेकं पदं कथं स्यादिति साध्यते, 'येषृङ् प्रयत्ने' येष्, अत्यर्थं येषते 'अतिशये हसादे' रिति (७-३-५७) यङ् द्वित्वं येयेष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'कासादिप्रत्ययादाम् कसभूपर' इत्याम् प्रत्ययः, चक्रिरे 'डुकृञ् करणे' इति धातोः परोक्षे इरे प्र०, येयेषांचाक्रिरे पदं सिद्धं। 'क्षिप प्रेरणे' क्षिप्, क्षिपति कश्चित्तमन्यः प्रयुङ्क्ते प्रेरणे ञिः, गुणे क्षेपि अनद्य० स् अपि गुणे अयि अक्षेपयः सिद्धं। 'ष्ठिवु क्षिवु निरसने' क्षिव्, क्षिवन्तं प्रेरयति प्रेरणे ञिः, गुणे क्षेवि, अनद्य० अम्, अक्षेवयं सिद्धं। 'पीव मीव नीव स्थौल्ये' मीव, मीवन्तं प्रयुङ्क्ते, शेषं सुगमम्, अमीवयं सिद्धम् ॥ २१ ॥———अन्येऽपि केचिद्विभ्रमप्रयोगा लिख्यन्तेः **"असतीति कथं साधु, करतीति तथाऽपरम्। कथमेतानि साधूनि, वोच्यते भवते सह ॥१॥"** 'अस गतिदीप्त्यादानेषु' 'कृञ् करणे'इत्येतयोर्भौवादिकयोर्वर्त्तमाने परस्मैपदप्रथमैकवचने असति करतीति रूपे सम्पद्येते, वचर्यङन्ताद्भावकर्म्मणोरात्मनेपदे यकि उत्तरस्य सम्प्रसारणे पूर्वस्य तु 'न सम्प्रसारणे सम्प्रसारण' मिति निषेधे उ ओ वोच्यते इत्येतत् सम्पद्यते। 'भू सत्ताया'मिति धातोरुदात्तेत्त्वात् परस्मैपदित्वे आत्मनेपदाभावे प्रश्नः, भू प्राप्तौ आत्मनेपदी भू, वर्त्तमाने, ते, अपः पित्त्वाद् गुणे भवते, न चैतदशुद्धमित्याशङ्कनीयम्, 'उत्साहाद्भवते लक्ष्मी' रिति स्मरणात्। सहेरनुदात्तेत्त्वात् परस्मैपदानुपपत्तेः प्रश्नः, 'षह मर्षणे' तुबादिहौ सह, न तु सहेः परस्मैपदप्रयोगे शङ्का कार्या, तथा च प्रयोगः,–"नदीकूलं भित्त्वा कुवलयवदुत्पाट्य च तरून्मदोन्मत्तान् हत्वा करणदन्तैः (शनैश्च) प्रतिगजान्। जरानारीमाप्त्वा तरुणजनविद्वेषणकरीं, स एवायं नागः सहति कलभेभ्यः परिभवम् ॥१॥" **मारिरेकाम मामिमीमाम मामीमिले तथा। असीदामादिका ज्ञेया, प्रयोगा अनया दिशा ॥ २ ॥** 'रेकृङ् शकृङ् शङ्कायां,' रेक्, रेकते कश्चित्तमन्यः प्रयुङ्क्ते 'धातोः प्रेरणे' इति ञिः, रेकि, अन० मप्र० 'ञेरङ् द्विश्चे' (७-२-१४) त्यङ् प्रत्ययः, द्विश्च मापूर्वः 'मेट' (७-३-११) इत्यटो लोपः, ञे ह्रस्वः 'न ऋत' इति (७-४-४१) पूर्वलघोर्दीर्घस्योपधाह्रस्वस्य च निषेधः, 'व्मोरा' (७-३-१५)-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इत्यास्वे मारिरेकाम सिद्धं । 'अम द्रम हम मीमृ गमृ गतौ' मीम्, मीमन्तं प्रेरयति धातोः प्रे० ञिः, शेषं प्राग्वत्, न ऋतः, मामिमीमाम सिद्धं । ' मील स्मील क्ष्मील निमेषणे ' संकोचे इत्यर्थः, मील, मीलन्तं प्रेरयति प्रेरणे ञिः, अनद्य० इप्र० ' ' ञेरङ् द्विश्चे '-त्यङ् (७-२-१४) प्रत्यये द्विस्वे ' ञे ' रिति (७-४-७१) ञिलोपे लघोर्दीर्घः मामीमिले सिद्धं । ' षद् विशरणगत्यवसादनेषु, षद्, ' आदेः ष्णः स्नः ' अन० मप्रत्ययः अट् अप् ' दृशादेः पश्यादे ' रिति (७-४-८४) सदः सीदादेशे ' व्मोरा ' इत्यास्वे असीदाम सिद्धं । ' चादि आल्हादनादनयोः ' चद्, ' टुणादि समृद्धौ ' नत्वे नद्, ' वदि अभिवादनस्तुत्योः ' वद्, 'णिदि कुत्सायां' निद्, अत्यर्थं चन्दति नन्दति वन्दते निन्दति ' अतिशये हसादे ' रिति (७-३-५७) यङ् द्विश्च, ' वाऽन्यत्रे ' ति (८-२-२७) यङ् लुक् ' आत ' इति (७-४-३५) दीर्घः, चा, वा, ना, निदिधातोर्गुणः ' यङी ' ति (७-४-३४) पूर्वस्य गुणः अनद्य० स्, दिवादावट्, सौ पदान्ते रेफप्रकृत्योरपि द् र्, ' दिस्योर्हसा ' दिति (७-३-३) स्लोपः स्रो० अचाचः, अनानः अवावः अनेनेः इति सिद्धम् । 'शुच् शोके' शुच् 'क्रुध कोपे' क्रुध, 'क्रुध कुत्सायां' 'शृध् वृध वृद्धौ' वृध, 'गृध् अभिकाङ्क्षायां' गृध् अत्यर्थं शुध्यति क्रुध्यते शर्धते वर्धते गृध्यति, ' अतिशये ' (७-३-१५) हसादेरिति यङ् ' वाऽन्यत्रे ' ति यङ्लुक् द्विश्च 'यङी '-ति (७-४-३४) पूर्वनामिनो गुणः शो क्रो शृध्वृध्गृध्धातूनां ऋकारान्तानामिति वक्तव्ये न पूर्वस्य रुक् 'कुहोश्चु' रिति (७-४-२६) कुत्वस्य चुत्वं, दिवादावट्, गुणः, ' स धातु ' (७-४-१०) रित्यनद्य० स्, अप्, ' अदे ' (७-३-१४) इत्यलुक्, 'दधो रत्व '-मिति ध् र्, ' दिस्योर्हसा ' दिति (७-३-३) स्लोपः, ' रिलोपो दीर्घश्चे ' ति रलोपः, दीर्घत्वं, अशोशोः अचोक्रोः अशर्शाः अवर्वाः अजर्घाः इति रूपाणि सिद्धानि । ' कस गतिशातनयोः ' कस्, अतिशयेन कसति यङ् ' वाऽन्यत्रे ' ति यङ्लुक्,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' ह्वादिवच्च द्रष्टव्य ' मित्यनेन अवादि कार्यम्, अप्, द्विर्त्वं ' कुहोश्चुः ' (७-४-२६) अन० सू ' पदां नीगि ' ति पूर्वस्य नीक्. दिवादावट्, विपूर्वः, ' दिस्योर्हसादि ' ति (७-३-२) सू लोपः, स्रो०, व्यचनीकः सिद्धं ॥

बाणाश्विषडिन्दु (१६२५) मितिसंव्वति धवलक्कपुरवरे समहे । श्रीखरतरगणपुष्करसुदिवापुष्टप्रकाराणाम् ॥ १ ॥ श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्वभौमानाम् । पट्टे वरे विजयिषु श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिराजेषु ॥ २ ॥ गीतिः । वाचकमतिभद्रगणेः शिष्यस्तदुपास्त्यवाप्तपरमार्थः । चारित्रसिंहसाधुर्व्यदधादवचूर्णिमिह सुगमाम् ॥ ३ ॥ यल्लिखितं मतिमान्द्यादनृतं प्रश्नोत्तरेऽत्र किञ्चिदपि । तत् सम्यक् प्राज्ञवरैः शोध्यं स्वपरोपकाराय ॥ ४ ॥

॥ इति कातन्त्र(सारस्वत)विभ्रमावचूरिः सम्पूर्णा ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमद्राजशेखराचार्यकृता दानषट्त्रिंशिका सावचूर्णिः

अवतरणिका-बहवोऽपि हि देवाः क्षेत्रं मर्यादीकृत्य इन्द्रं यावत् तत्तद्वृद्धियुक्तास्तत्तत्स्थाननिवासिनस्तत्तत्कार्यकारिणः सन्ति, तेऽपि लोकोपकारनिरता धर्म्माद्युद्यमे सान्निध्यं पावित्र्यं संचिंत्य कुर्वन्ति, यथा भरते निधिस्था देवाः कृष्णे वैश्रवणः कर्णे सूर्यः नले युधिष्ठिरेऽपि रविः विक्रमे आगियाकः शालिवाहने भारती शेषौ जयसिंहदेवे बर्बरेश्वरौ, परं परमपु(पौ)रुषानुज्ञयैव विदधति, यतः-"कृतप्रतिज्ञस्य पुरुषस्य, देवा यान्ति सहायताम्" यस्य तु देवस्य स्थावराणामपि दातृणामुपकारकत्वं विलोक्य शृङ्गारादिसामग्रीं चकार, किं पुनर्विद्यावतां भाग्यवतां विशेषज्ञानां सत्क्रियाणां गुरुभक्तानां विवेकिनां ?, अत एवोच्यते--

दातुर्वारिधरस्य मूर्द्धनि तडिद्गाङ्गेयशृङ्गारणा, वृक्षेभ्यः फलपुष्पदायिनि मधौ मत्तालिबन्दिश्रुतिः ।
भीतत्रातरि वृत्तिदातरि गिरौ पूजा झरैश्चामरैः, सत्कारोऽयमचेतनेष्वपि विधेः किं दातृषु ज्ञातृषु ? ॥१॥

भाग्यवति उदयिनि कुले कश्चित्पुमानुत्पद्यते, सर्वगुणानां निधिः सः, यथा जले सर्वबीजानि यथा भूमौ सर्वान्नोत्पत्तिः, यथाऽग्नौ आहारशक्तिः, यथा इन्द्रे प्रभुत्वं, तथा सत्पुरुषे गुणाः, तेन महात्मना पुरुषेण सर्वं चित्ते ध्रियते, परं याचकेभ्यो दत्तं हृदयेन धार्यते, अतः श्रूयताम्-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पित्रोर्वत्सलता गुरोर्व्रतभृतः शिक्षाप्रसादः प्रभोः, सद्वृत्तं सुतकल्पभृत्यसुहृदां तत्तत्क्रियाभिग्रहाः ।
छन्दोज्योतिषतर्कलक्षणकथौचित्यं चिरं धार्यते, सर्वं सत्पुरुषैः क्षणादपि पराग् दत्तं तु नेत्यद्भुतम् ॥ २ ॥

पुरुषाहीनाः सेवका अपिकर्म्मकरा अपि निर्द्धना अपि कर्म्म कुर्वाणाः सर्वाणि सौख्यानि प्राप्नुवन्ति, परं श्रीभरतादिभिः सत्पुरुषैः समयं प्राप्य लोकोपकारः कृतः, तेन चासंसारं विश्वे कीर्त्तयः स्थिरतामानञ्चुः ॥ यतः--

आरोहन्ति सुखासनान्यपटवो नागान् हयाँस्तज्जुषस्ताम्बूलाद्युपभुञ्जते नटविटाः खादन्ति हस्त्यादयः ।
प्रासादे चटकादयोऽपि निवसन्त्येते न पात्रं स्तुतेः, स स्तुत्यो भुवने प्रयच्छति कृती लोकाय यः कामितम् ॥३॥

कलिकाले करालेऽस्मिन् सकलोपकारकाः कल्पद्रुमादयो लोकोपकारं न कुर्वन्ति, न च दृश्यन्ते, इन्द्रादयः सुखस्वादरसपरवशाः, पूर्वजास्तु भोगीभूय सन्तानिनां पीडां कुर्वते, तैः सार्द्धं सत्पुरुषस्य उपमा न घटते, सम्प्रत्यसत्त्वात्, जलधरस्तु सकलधरातलललितलावण्यकारी, उक्तञ्च-"सम्प्रति न कल्पतरवो न सिद्धयो नापि देवता वरदाः । जलद! त्वयि विश्राम्यति सृष्टिरियं भुवनकोशस्य ॥ १ ॥" तेन सार्द्धं सत्पुरुषस्योपमा युक्ता, जलधरस्य सत्पुरुषेण सहोपमा विद्यते, तथापि सत्पुरुष उत्तम एव, यतः-

स्फातिं बन्धुसरांसि यान्तु परितः कीर्त्तिश्रवन्त्यः स्फुरन्तूच्चैर्माद्यतु दीनदुर्दुरकुलं विद्वन्मयूरैः सह ।
म्लायन्त्याशु जवासकाः खलजनाः स्वर्णाम्बुदानोद्यते, सत्पाथोमुचि विस्मयोऽयमिह मे मालिन्यगर्जी न यत् ॥४॥

तिर्यक्षु सिंहादयो बले तुरङ्गास्तु शीघ्रगतौ भारोद्वहने वृषभाः दुग्धोत्पत्तौ गावः विषमे रणे राजद्वारे परमे लक्ष्मीविलासे महास्वप्ने उच्चत्वे गजा एव श्लाघ्यन्ते, तैः सार्द्धमुपमानं सत्पुरुषस्याहोश्विदाधिक्यं ?, आधिक्यमेव प्रतीमः, यतः-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुङ्गाः सत्कुलविन्ध्यजाः सुगतयः सद्भावनावल्लकीसक्ताः श्रीसहचारिणो बहुविधग्रन्थार्थभोज्योर्जिताः ।
गुर्वाधोरणशिक्षिताः शमगुडामिथ्यात्ववद्दौःस्थ्ये कलेः, प्राकारौ दलयन्त्युपासकगजाश्चित्रं मदान्धा न यत् ॥५॥

एकेनापि सिंहेन बहवः शृगाला इव सूर्येण ध्वान्तानीव गंगाप्रवाहेण वृक्षा इव कुठारेण तरव इव तथा एकेनापि सत्पुरुषेण दात्रा ज्ञात्रा विवेकिना कलिकालोऽपि निर्जीयते; यतः--

एकेनापि खरादयो भुजभृता रामेण निष्कन्दिता, एकेनापि हनूमता विदलिता नक्तंचराणां चमूः ।
एकेनापि धनञ्जयेन पृतना दौर्योधनी चूर्णिता, दात्रा तत्त्वविदा कलिर्बलवतैकेनापि निर्जीयते ॥ ६ ॥

चातका जलधरमिव चक्रवाकाः सूर्यमिव चकोराः शशिनमिव गजा विन्ध्याचलमिव देवा मेरुमिव तथा याचका दातारं दृष्ट्वा हृष्टा भवन्ति, वावदूकाः सन्तः स्तुवन्ति, मनोरथशतैर्ध्यायन्ति, काव्यश्लोकषट्पद्यादिभिः स्तुवन्ति, यथा--

किं वज्राकर एव दन्तनिवहो ? जिह्वाऽस्य किं देवता ?, दृक्किं कल्पलता? स्मितं किमु सुधा ? किं कल्पवृक्षः करः?।
किं चिन्तामणयो नखाः ? किमु मुखं चन्द्रः?स्वरः शान्तिकं?, दृष्टेष्वर्थिजनस्य येष्विति मतिर्नन्दन्तु ते दानिनः ॥७॥

कृतयुगत्रेताद्वापरकलिषु दातारो बहवोऽभुवन्, चक्रवर्त्तिभरतमान्धातृदुष्यन्तहरिश्चन्द्रपुरूरवाऐलनलनघुषरामकर्णयुधिष्ठिरादयः, ते श्लोकवर्णनार्हाः, परं यथैते दातारोऽपि यस्य याचका यद्दत्वा चन्द्रार्कं स्थिराः तदेव दानं वयं दातृ (तुः) स्तुमः, यतः

दत्ता भूर्बलिना धनं रविभुवा दैलेपिणा धर्मिणा, राज्यं लक्ष्मणबान्धवेन करणं जीमूतकेतोस्तुका ।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एवं विक्रमसातवाहनमुखैर्दातार एते ततो, मन्ये दानमपि प्रदात् यदमी तद्दत्तकीर्त्या स्थिराः ॥ ८ ॥

भटकोटिकोटेर्गर्ज्जद्गजगलगर्जिस्फुटत्कर्णकुहरे सहर्षहयहेषितत्रस्तकातरगणे रणरसविलोकनकौतूहलितसकलसुरासुरदेवदेवीवृन्दे रणे रणंति सुभटाः प्रविशन्ति कुहरान्तरं तरन्ति दुस्तरं पारावारं तपन्ति विषमं तपः आरोहन्ति दुर्गमं गिरिं भ्रमन्ति करिकेसरिद्वीपिचित्रकव्यालवदनज्वालाजटिलमरण्यं तेऽपि याचकचमूं दृष्ट्वा श्यामा इव जायन्ते, मन्येऽहं न केवलं ते रुद्रादयोऽचलशिखरशिखामारूढास्तद्भयादेव, परं किञ्चित्(कोचि)कुलधवला धन्या यशस्विन आसन्नसिद्धिकाः पुण्यवन्तो विषमेऽपि कलौ दानदयादाक्षिण्योपकारनिरता दृश्यन्ते, यतः

रुद्रोऽद्रिं जलधिं हरिर्द्दिविषदो दूरं विहायः श्रिताः, भोगीन्द्राः प्रबला अपि प्रथमतः पातालमूले स्थिता ।
लीना पद्महृदे सरोजनिलया मन्येऽर्थिसार्थाद् ह्रिया, दीनोद्धारपराः कलाविह खले सत्पुरुषाः केवलम् ॥ ९ ॥

न केवलं धनेनैव पुरुषस्य कीर्तिः, पश्यत मेरौ सुवर्णं लक्षयोजनसङ्ख्यं वैताढ्ये रूप्यानन्त्यं रोहणाचले वज्राकरत्वं ताम्रपर्ण्यां मुक्ताफलानि तथा सर्वासु खानिषु, अथवा एते अचेतना मूढाः पाणिपादवक्त्रविकला यदि न यच्छन्ति तदा न चित्रं, परमिन्द्रादयोऽपि विभवे सति न यच्छन्ति तच्चित्रं, अत एव किं वर्ण्यन्ते ते ?, सत्पुरुषस्तु वर्ण्यतां, य एवं सर्वोपकारनिरतः, यतः—

प्रायः सत्यपि वैभवे सुरजनः स्वार्थी न दत्ते धनं, तीर्थान्नोद्धरति क्वचिन्न हरति व्याधीन् न हन्त्यापदम् ।
अस्त्वात्मंभरिभिर्जनैर्युगालिभिर्धन्यास्तु केचिन्नराः, सर्वाङ्गीणपरोपकारयशसा ये द्योतयन्ते जगत् ॥१०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाता चिन्तयति-तावत् सूर्यस्य सर्वप्रकाशकत्त्वात् तिमिरध्वंसनात् लोकोपकारकारकात् स्तुतिः, चन्द्रस्यापि तथैव, समुद्रस्यापि व्यवसायिनां मनोरथपूरकत्त्वात् लक्ष्मीजनकत्त्वात् रत्नाकरत्त्वाच्च महाविस्तीर्णपृथ्वीकुण्डलास्तुतिः, एवं नदीनां पृथिव्याश्च सर्वोत्पत्तिताप्रशंसा, तथा कालस्य धर्म्मस्य ऋतूनां सर्वोपायैरुपकारकत्त्वात्, इन्द्रादीनां मनसा सर्वेच्छादायकत्वात्, ऋषीणां च वचनमात्रेण परेषां कार्यसाधकत्त्वात्, परं मम का प्रशंसाऽत एवोक्तिः—

दाता ध्यायति विष्टपं कियदिदं ? तत्रापि भागास्त्रयस्तत्राल्पा वसुधाऽम्बुधिर्यद्वधिस्तत्रापि खण्डान्यहो ।
तत्रैकत्र वसामि तद्गिरिसरित्कान्ताररुद्धं ततः, का शक्तिः? किमुपाददे? किमु ददे? यद्दातृशब्दो मयि? ॥११॥

सकलस्य विश्वस्य दाता एव धर्म्मः, यस्मादुदयं प्राप्य धर्म्मचक्रवर्त्तिचक्रवर्त्त्यादयो याच्यन्ते, यद्भाग्यमसामान्यं येन केवला श्रीर्भवति, भाग्यवतां तु श्रीमुञ्जवत् सरस्वत्यपि वदनकमलवासिनी भवति, तुष्टश्च धर्म्मः किं किं न प्रापयति?, अतः कारणात् सेवातुष्टेन धर्म्मेण दातुर्गृहे द्वयं दत्तं, अत एवाह--

दत्ता सत्पुरुषाय यद्यपि मया तुष्टेन सेवाभरात्, पुत्री श्रीर्विनयं नयं सुवचनं दानं विवेकं विना ।
काऽस्याः श्रीर्विनयादयश्च धिषणासाध्याः कुतः सा विना, ब्राह्मीं? तेन सखीयमस्त्विति युते ते तत्र धर्म्मो व्यधात् ॥१२॥

यो हि अहर्निशं सद्गुरुभक्तिं कुरुते आत्मनः शरीरस्य च साधनां विदधाति सर्वलोकोपकारी सर्वव्यापी स सिद्धः, यस्य शरीरं न बुभुक्षया नापि आतपेन शीतेनापि न नापि जलेन नापि ज्वलनेन नापि निद्रया नापि कोपेन, किन्तु समचित्तः सर्वत्र स महात्मा दाता सिद्धतां दर्शयति, सिद्धावस्थाकार्यं करोति, यतः—

॥ ५७ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राग्दारिद्र्यलिपिं भनक्ति लिखितां दैवेन भालेऽर्थिनां, प्रत्यक्षानिव दर्शयत्यतिगतान् प्राच्यानुदारान् कवीन् ।
धत्ते दुष्टयुगेऽपि शिष्टयुगतां लक्ष्मीं प्रकृत्या चलामाचन्द्रं स्थिरतां नयत्ययमहो दानेन सिद्धः कृती ॥ १३ ॥

मूलवशीकरणहेतोरौषधानि मेलयन्ति, तिलकादि कुर्वंति, मन्त्रान् गृह्णन्ति, पर्वतादौ जपध्यानहोमेन यत्नान् कुर्वन्ति, भूतप्रेतपिशाचजटिलामरण्यानीं भ्रमन्ति, सिद्धान् सिद्धौषधं प्रार्थयन्ति, देशान्तराणि भ्रमन्ति, निद्रां कुटुम्बं पत्नीं पुत्रान् मातापितॄन् मुक्त्वा जनं जनं पृच्छन्ति, तथापि सिद्धिस्तेषां सन्देहास्पदं, परं दानेनाऽऽमोक्षं सर्वमनोरथप्राप्तिः, यतः--

आदौ पात्ररतिस्ततः कृशदया निर्लोभता निर्मला, धर्म्मश्रीरथ कीर्त्तिरिन्दुकुमुदाहङ्कारसर्वंकषा ।
स्वर्भोगर्द्धिरथानघा नृपरमा चारित्रलक्ष्मीरथाकृष्टा मुक्तिरुपैत्यहो वितरणं स्त्रीवश्यसिद्धौषधम् ॥ १४ ॥

आदौ तावन्मनुष्याः सामान्याः कलाविदः, तदनु पातालवासिनो देवाः, ततो व्यन्तरज्योतिष्कसुरसुरपतिअहमिन्द्रगणधरादयः, तेभ्योऽपि त्रिभुवनस्वामी छत्रत्रयच्छायासुखशिराः तीर्थंकरस्तस्यापि करः यस्य करतार इत्याख्या पञ्चशाखः साक्षात् कल्पद्रुमः सोऽपि दातुः करादधो भवति, अत एवोच्यते—

यो बभ्राम ससंभ्रमप्रणतभूपालेन्द्रपृष्ठस्थले, विश्वं वात्सरिकप्रदत्तिसुधिया प्रोज्जीवयामास यः ।
यः साध्वाद्यनवद्यसंघशिरसि क्रीडोचितः सोऽर्हतः, पाणिः स्याद्यदनुग्रहाद् गृहिकराधस्तां स्तुमो दातृताम् ॥ १५ ॥

धन्यः कृती सर्वत्रोचितां पूजां करोति, आसनादिकां कुसुममयीं चाष्टम्यां रुद्रस्य एकादश्यां नारायणस्य चतुर्दश्यां ब्रह्मणः सन्ध्यायां सूर्यस्य विवाहादौ गणपतेः अभ्रोदये साधोर्यथा तीर्थेषु तीर्थनायकानां कुटुम्बस्य च, परं लक्ष्म्याश्रिताः सकलाः शोभा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्या भवन्ति उत्सवाः, अतस्तस्या एवागताया गृहपूजां वितन्वन्ति महान्तः, पूजया तुष्टा देवी तस्य गेहं न मुञ्चति, अत उच्यते—

औदार्यं कनकासनं सुवसनान्यक्रौर्यलज्जर्जुताः, श्रद्धाचन्दनलेपनं सुविनयन्यायौ मणीकुण्डले ।
मुक्तावल्लिरिरौचिती वितरणं कोटीरमेवं श्रियं, देव्याँ गेहगतां कृती महति यस्तस्य स्थिरा सा रसात् ॥ १६ ॥

ये शूरा ये च विद्वांसो, ये च सेवाविचक्षणाः । सर्वे ते धनवृद्धस्य, द्वारे तिष्ठन्ति किङ्कराः॥१॥ धनं कारणं, येनाविद्यमाना अपि गुणाः प्रकटीभवन्ति, विद्यमाना अपि यान्ति यस्याभावात्, "धनमर्जय काकुत्स्थः, धनमूलमिदं जगत् । अन्तरं नैव पश्यामि, निर्द्धनस्य मृतस्य च ॥१॥ लक्ष्मीः पूर्वपुण्यरज्ज्वाकृष्टा मम गेहं प्राप्ता, परं-या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता कष्टेन सा त्यज्यते, इतीयं कमला क्षणं कुमुदे क्षणं चन्द्रे क्षणं सूर्ये मान्धात्रादीनां गृहे चिरं नो वासः, अतोऽस्या अनुवृत्तिरेव क्रियते इति संचिंत्योवाच—

लक्ष्मीर्मे सुकृतेन यद्यपि गृहे न्यस्ता तथाऽप्येतया, नानास्थाननिवासशीलमनवं दुर्म्मोचमित्यग्र्यधीः ।
सत्रार्हद्गृहबिम्बपुस्तकवसत्युद्यापनाद्यैरिदं, तस्याः पुष्यति वश्यबीजमपरं भावानुवृत्तेर्न हि ॥ १७ ॥

महाकुले जलधावुत्पन्नः सर्वलोकप्रियः शीतलकरः कलावान् तेन चन्द्रमसा सार्द्धं उपमां दातुं विचारयामः, परं तेनापि सह न समीचीना राजते, दातरि विशेषदर्शनात्, यतः—

सङ्घाम्भोधिविवर्द्धनः शुभकरः सद्वंशपूर्वाचलोद्भिन्नः सज्जनकैरवप्रमदनः सौम्यस्तमःस्तोमहा ।
सम्प्रीतार्थिचकोरकः सुतसुहृन्नक्षत्रतारागृहो, दातेन्दुर्न पुनः क्षयी न च जडो नान्तः कुरङ्गोऽद्भुतम् ॥ १८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शर्करा मृष्टत्वात् सर्वेभ्यो रोचते, एवं चन्द्रस्तथा धनं तथैव सरसानि वस्तूनि, तथा रामा सकामा गीतं च स्नानं च, परं यथाक्रमं विरहिणः निःस्पृहस्य तृप्तस्य ऋषेः निष्कामस्य च तत्त्वज्ञस्य शीतज्वराक्रान्तस्य तत्र वाञ्छाया अभावः, परं दाता सर्वत्र सर्वेषां शीतलः, अत उच्यते—

आर्द्रौ दानजलैः करौ निखिलमप्यङ्गं सुधासिन्धुगं, वाक् सारस्वतदुग्धवार्द्धिविविधप्रोल्लेखकल्लोलभाग् ।
धीः कारुण्यसुधासरः सुखलहर्यालिङ्गनव्यापृता, सन्नेवं शिशिरस्ततो हृदि कृतो लोकस्य तापच्छिदे ॥ १९ ॥

पुरुषे पुरुषे च महान् विशेषः, 'वाजिवारणलोहानां, काष्ठपाषाणवाससाम् । नारीपुरुषतोयानामन्तरं महदन्तरम् ॥ १ ॥' स पुनः पुत्रो नरकात्पूर्वजानुद्धरति, तेनैव जातेन कुलं सुकुलं, दिनं सुदिनं, अपत्यशब्दोऽपि सार्थकः, शास्त्रेऽपि गीयते- 'वानेयं गृह्यते पुष्पमङ्गजस्त्यज्यते मलः ।" मुक्तानां सगुणत्वादेव मूल्यं, रत्नादीनां च, अतः स पुत्रः पवित्र उच्यते—

मूकः पूज्यसदस्युदारवचनो जल्पेषु दुर्वादिनां, पूज्यानां क्रुधि भीलुकः परचमूदृष्टौ प्रकृष्टायुधः ।
द्यूतादिव्यसनक्षणेषु कृपणः पात्रेषु दानेश्वरः, पश्चाद्भोजनकर्म्माणि प्रथमकः कार्ये सतां कोऽपि ना (पुमान्)॥२०॥

धनं सर्वस्य सुखदं, दारिद्र्यं महाकष्टादपि रोगादपि अन्धत्वादपि मूर्खत्वादपि एकाकित्वादपि परदेशवासित्वादपि असुभगत्वादपि कुरूपत्वादपि अतीव दुःखदायि, दाता तु तद् दारिद्र्यं समूलघातं हन्ति सर्वत्र दानवज्रप्रहारेण, यस्तु दातारं निन्दति, पुरुषं आत्मीयामित्रं ज्ञात्वा तस्य गृहे तिष्ठति, अत आह—

भावानुवृत्तिः निर्दोषता शिशिरता पावनता दारिद्र्य विपक्षता

For Private and Personal Use Only

दानाद्दिक्पतिभारतीहरिहरिप्रेष्ठा ग्रहग्रामपूः, पातालोदकगोत्रदैवतमुनिक्ष्मापाललोकप्रिये ।
पुण्याढ्ये स्वपरप्रभुत्त्वकरणोद्युक्ते प्रवेशः क्व मे, ध्यात्वेदं तदसूयकस्य सदने दारिद्र्यमालीयते ॥ २१ ॥

सूराः पण्डिताः कलाविदस्तार्किका उपविद्याचतुराः सन्ति सर्वेऽपि विमृश्यमानाः, दातारमेव कृतज्ञं सर्वविदं भुक्तिमुक्तिसाधकं पश्यामः, कलौ यः पूजयति कलाविदः श्रमं वेत्ति, अतः कलावत्सु विचरति रामकर्णनलमुञ्जभोजवद्, उच्यते--

विद्वद्भ्योऽजनि वाग्वशा परभवे विद्याविचारो घनः, सारासारविनिश्चयोऽथ करुणा धर्म्मस्ततः श्रीरियम् ।
इत्याहृत्य कृतज्ञतां सुमतिभिर्दानेश्वरैरन्वहं , युक्तं यद्विदुषामुपासनकृते श्रीः कर्म्मकारीकृता ॥ २२ ॥

समुद्रो रत्नाकरोऽपि क्षारत्त्वदोषदूषितः, चन्द्रः कलानिधिरपि सकलंकः, रविः प्रकाशात्मकोऽपि देहादिदाघकारी, मेघो महीपोषकोऽपि चपलाश्रयः, मेरुः सुवर्णमयोऽप्यदृश्यः, रुद्रमूर्त्तिरप्याकाशं शून्यं, सुधा सुधामयापि द्विजिह्वदंष्ट्राविषविकल्पा, सर्वमनोरथदात्र्यपि कामधेनुः पशुत्वाद् गुणग्रहणविकला, पारिजातोऽपि काष्ठरूपः, सुरमणिः कर्कर एव, अग्निस्तु रोगापहारकोऽपि दाघदः, जीवनं जीवनमपि बोलकं, पवनः सुखदोऽपि विरुद्धो दुःखदः, सर्वत्रैकैकमगुणं विना निर्वाहो न, परं दातरि सर्वदोषाभावः, यतः तुल्यमेवोपकारं करोति—

विश्वाश्वासकरो घनोऽपि तडिता गोर्धा मुधा बाधते, दत्तेऽर्कः कुमुदाय न श्रियमहो पद्माय नेन्दुर्द्विषे ।
क्षुद्राङ्गाय जनाय नो वितरति प्रायः फलं पादपो, दाता सत्पुरुषः परं परहिते बद्धप्रयत्नः समम् ॥ २३ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

'गतिरन्या गजेन्द्रस्य, गतिरन्या खरोष्ट्र्योः। गतिरन्यैव सिंहस्य, लीलादलितदन्तिनः ॥ १ ॥' तथा विदुषामन्यैव वाग्, मूर्खाणामन्यैव, अन्य एव रसो दुग्धस्य, अन्य एव दुग्धस्य भावः, यस्य कोशे यद्भवति स तस्य सत्रं विस्तारयाति, साक्षाद्दृश्यते च, यतः—

तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिवहस्याचार्यवृन्दारकैर्धर्म्मार्थं धनिभिर्विशालमतिभिर्भोज्यादिसद्वस्तुनः।
तल्लाभेन तदर्थिभिः प्रमुदितैः सम्यक् तदीयस्तुतेस्तान्निन्दोत्थितपातकस्य तु खलैः सत्रं कृतं स्पर्द्धया ॥२४॥

चतुर्षु युगेषु दातारोऽभूवन्, कृते मान्धातृमुकुन्दहरिश्चन्द्रनहुषादयः, त्रेतायां रामादयः, द्वापरे युधिष्ठिरादयः, कलौ विक्रमादयः, हीनकलौ कुराजकरकलिते दुष्टखलवचनमये विद्याविकले दैवतप्रसादशून्ये मन्त्रप्रभावहीने जलददयादारिद्र्ये कल्पद्रुमादिदानरहिते ये दातारो ददति तीर्थयात्रां वितन्वंति तीर्थानुद्धरंति जीवदयाद्युद्घोषणामुद्घोषयन्ति शासनमुद्दीपयन्ति शान्तिकपौष्टिकरथयात्राजलयात्रास्वजनोपकारमित्रपरिजनस्वामिकार्यं कुर्वन्ति ते वर्ण्यन्ते,—

अर्हच्चक्रभृतां सुरेन्द्रनिधयः षट्खण्डराज्यं वशे, सौरीणामपि तत्तदर्थनिचयाः कर्णस्य सौरो वरः।
जीमूतस्य कराग्रगः सुरतरुर्देवो विशालापतेर्दानं तैः सुकरं कलौ कृशधनान् सर्वस्वदातॄन् स्तुमः ॥२५॥

परमेश्वरस्य त्रिभुवनजनकामितदातुः कर्म्मरूपस्य तस्याक्षराणि शुभाशुभमयानि करलिखितानि सन्ति सर्वस्य, अतः सत्पुरुषास्तस्यैवाशां कुर्वन्ति, तमेव स्तुवन्ति, प्रातरुत्थाय तमेव पश्यन्ति, करतार इति या संज्ञा सा करस्यैव, करतारुहस्तस्यापि चाङ्गु-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेनेदं नवदेशनार्थिहृदयानन्दाय सारं मितं, प्रोक्तं सङ्घमहोत्सवप्रकरणं सुश्रावकश्रीकरम् ॥ ३५ ॥
लक्ष्मीः सत्पात्रलाभाद्भूत सुभगतां मर्त्त्यजन्मद्रुमोऽयं, साफल्यं प्राप हृष्टः सुगुरुमुखजुषामाशिषां सत्यभावः ।
मज्जन् कार्पण्यपङ्के सुचिरमतिजरन्नुद्धृतो दानधर्म्म-स्तन्वद्भिस्तीर्थयात्रामहमिह विहितः को न लब्धप्रतिष्ठः? ॥३६॥

इति श्रीराजशेखरसूरिकृता दानषट्त्रिंशिका सम्पूर्णा

For Private and Personal Use Only

श्रीजैनप्रवचनसुधासुधादीधिति श्रीजिनभद्रक्षमाश्रमणसूत्रिता विशेषणवती.

उस्सेहंगुलमेगं हवइ पमाणंगुलं सहस्सगुणं। उस्सेहंगुलदुगुणं वीरस्साऽऽयंगुलं भणियं ॥ १ ॥ (प्रज्ञा) ३००
एवं चायंगुलओ कहमट्ठसयं जिणो हवइ वीरो?। उस्सेहंगुलमाणेण किह व सयमट्ठसट्ठं सो? ॥ २ ॥
दो सोलसुत्तरसया उस्सेहंगुलपमाणओ एवं। अहवाऽऽयंगुलमाणेण होइ चुलसीइमुव्विद्धो ॥ ३ ॥
भरहायंगुलमेगं जइ अ पमाणंगुलं तु निद्दिट्ठं। तो भरहो वीराओ पंचसयगुणो न संदेहो ॥ ४ ॥

तत्थ जं भणियं-उस्सेहंगुलं सहस्सगुणियं पमाणगुलं हवइ तं भरहस्स आयंगुलंति, तत्थिमं करणं(2)—भरहो किर आयंगुलेण वीसुत्तरमंगुलसयं, उस्सेहंगुलेण पंच धणुसयाइं, तत्थ जइ वीसुत्तरेणं पमाणंगुलसएणं१२० सपाएण धणुणा१-१।४ पंच धणुसयाणि ५०० लब्भामो तो एगेण किं लब्भामो ?, आगतं सयाणि चत्तारि, एवं जमेगं पमाणंगुलं पमाणधणुं वा तमुस्सेहंगुलओ चउसयगुणं भवति सेढिगणिएणं, एअं चेव खेत्तगणिएणं सहस्सगुणं भवइ, कहं ?, पमाणंगुलं उस्सेहंगुलबाहुल्लं(3) अड्ढाइज्जंगुलविक्खंभं चउसयायामं, तत्थायामो चउसओ(4) अड्ढाइज्जंगुलेण विक्खंभेण गुणिओ सहस्समुस्सेहंगुलं हवइ, एवं उस्सेहंगुलं सहस्सगुणियं पमाणंगुलं भवइ ॥ भगवंपि वद्धमाणो वीसुत्तरमंगुलसयमायंगुलेण अट्ठसट्ठसयं १६० उस्सेहंगुलेणं, तत्थ जइ वीसुत्तरेणायंगुलसएणं

पाठान्तराणि—(१) होइ प्र० (२) कारणं (३) बाहल्लं (४) सआ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अट्ठसट्ठं अंगुलसयं लब्भामो एगेणं किं लब्भामो ?, आगयं-एगमुस्सेहंगुलं दो अ[1] आअंगुलपंचभागा, सवण्णिओ[2] सत्त पंचभागा, एवं भगवओ वीरस्स जमायंगुलं तमुस्सेहंगुलेण सत्त पंचभागा, बिउणं च सुत्ते भणियं, एयं पुण खेत्तगणियं पडुच्च बिउणं, सेढिगणिएण सत्त पंचभागा, कहं ?, इहायंगुलेण पंचहत्थो भगवं, उस्सेहंगुलपमाणेण सत्तहत्थो, एवं जाइं भगवओ पंच आयंगुलाइं ताइं सत्त उस्सेहंगुलाणि, एवं हत्थादओऽवि, तत्थ समणे० सत्तहत्थो, एवं जा चउरंसपंचगमायंगुलं बाहापडिबाहागुणं खेत्तगणिएणं पणवीसं रूवाइं, समचउरंससत्तगमुस्सेहंगुलं भगवओ बाहापडिबाहागुणं खेत्तगणिएणं एगूणपण्णं रूवाइंतिकाउं किंचूणबिगुणमुस्सेहंगुलाओ, उण्हीसाइसाहिअत्तणओ वा पण्णासं चेव रूवाइंतिकाउं बिगुणं चेव भण्णति, अहवा समचउरंसपंचगस्स उस्सेहंगुलस्स पण्णासकरणीओ कण्णो, एस महावीरायंगुलस्स बाहा बाहाए गुणिया गणियंतिकाउं पण्णासा करणीए गुणिया जायाइं पणवीसं सयाइं २५००, एएसिं मूलं पण्णासं रूवाणि महावीरस्सायंगुलखेत्तगणिअं, एयस्स उस्सेहंगुलखेत्तगणियाओ पणवीससयाओ बिगुणं । इयाणिं छेज्ज [प] णएणं पच्चक्खं दाइज्जइ, तत्थ ताव इमं समचउरंसं पंच समुस्सेहंगुलं ता इमं पुण समचउरंसं पण्णासकरणीयमायंगुलं भगवओ, ता इयाणिं एवं चेव जहा उस्सेहंगुलकण्णाओ णिप्फज्जइ तमेवमालिहिअत्ति, एवं जे उस्सेहंगुलप्पमाणंगुलाणं उस्सेहंगुलमहावीरायंगुलाण य विरोहाभिप्पाएणं पमाणविसंवायाइदोसा चोइआ ते परिहरिया भवंति १ ॥

---

(१) दो अ अं० (२) संचुण्णिआ.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोअणसहस्समहिअं वणस्सइसरीरमाणमुद्दिट्ठं । तं च किर समुद्दगयं जलरुहनालं हवइ णऽण्णं ॥ ५ ॥ उस्सेहंगुलओ तं होइ पमाणंगुलेण य समुद्दो । अवरोप्परओ दोण्णिवि कहमविरोहीणि होज्ज ण्हुं[1] ? ॥६॥ पुढवीपरिणामाइं ताइं किर सिरिनिवासपउमं व । तित्थेसु पुण वणस्सइपरिमाणाइंपि होज्ज णणु ॥ ७ ॥ जत्थुस्सेहंगुलओ सहस्समवसेसएसु य जलेसु । वल्लीलयादओच्चिय सहस्समायामओ होंति ॥ ८ ॥ २ (ठा. २९५)

पण्णत्तीए भणिया सोलसहस्सा सिहा समुद्दस्स । सच्चेव दीवसागरपण्णत्तीए सया सत्त ॥ ९ ॥ उस्सेहे सत्तसए गोअमदीवादओ जलंताओ । उव्विद्धा जावइअं तमेइ तेरासिएण फुडं ॥ १० ॥ उस्सेहे सोलसए गोयमदीवादओ निबुड्डिज्जा[2] । तहवि अ ण सो ण सच्चो तं पइ जं वुड्ढि[3] भणियाइं ॥ ११ ॥ किह पुण दोन्निवि सच्चा जं सत्त सओवरिं समा चेव । निट्ठाइ सोलससहस्सिया सिहा दस य विच्छिण्णा ॥१२॥ जीवाभिगमे वुड्ढी जा सा तं पप्प खेत्तगणियं च । कण्णगईए णेयं लवणाभव्वस्स खेत्तस्स ॥ १३ ॥ जइ पंचणउइजोअणसहस्साइं गंतूण सत्त जोअणसयाइं उस्सेहं लब्भामो बारसजोयणसहस्से गंतूण गोयमदीवे किमुस्सेहं लब्भामो ?, आगतं अट्ठासीइ जोअणाइं चत्तालीसं च पंचाणउइभागा जोअणस्स, एयं जंबुदीवंतेणं जले णिबुड्डं दीवस्स, उवरिंपि एत्तियं चेव ऊसियं जलंताओ अद्धजोअणं च, चउवीसं जोअणसहस्साइं गंतूणं लद्धं छावत्तरं जोअणसयं असीइं च पंचाणउइभागा जोअणस्स, एयं लवणसमुद्दंतेणं निबुड्डं दीवस्स, दो कोसे ऊसिओ जलंताओ, जीवाभिगमे पंचाणउइ पंचाणउइ अंगुलाइं

(१) णु उ (२) निबुइज्जा (३) बुद्धि०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णिग्गंतूणं सोलसअंगुलाइं उस्सेहवुड्ढी, इमा पुण एगरूववुड्ढी, जइ पंचाणउइ जोअणसहस्साइं गंतूण सोलस जोअणसहस्साइं उस्सेहं लहामो जोअणे किं लब्भामो?, आगतं सोलस पंचाणउइभागा जोअणस्स, एवमायंगुलाणंपि, एवं जंबुदीवपण्णत्तीकरणगाहासु ॥३॥

लवणस्स खेत्तगणियं पुव्वायरिओवणिबद्धं जंबुद्दीवलवणपरिरए दोवि एगओ मेलेऊण अद्धं घेप्पइ, तं पंचुत्तरजोअणसहस्सेणं विक्खंभेणं गुणिज्जइ, पुणो सव्वग्गेणं सत्तरसजोअणसहस्सेणं गुणिज्जइ, तओ एअं आगयफलं भवइ। सोलसकोडाकोडी तेणउइ कोडिसयसहस्साइं। ऊयालीस सहस्सा णव कोडिसयाइं पण्णासा ॥ १४ ॥ पण्णाससयसहसाइं जोयणाणं भवे अणूणाइं। लवणसमुद्दस्सेयं जोअणसंखाए गणिअपयं ॥ १५ ॥ एयं उभयवेइयंताओ ४ ॥

सोलससहस्सउस्सेहस्स य कण्णगईए जं लवणसमुद्दाभव्वं जलसुण्णंपि खित्तं तस्स गणियं, जहा मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारसभागपरिहाणी कण्णगईए आगासस्सवि तदाभव्वंतिकाउं भणिया तहा लवणसमुद्दस्सवि ५ ॥

आह-सोलसहस्सिआए सिहाए कहं जोइसविघाओ ण हवइ ?, तत्थ भण्णइ, जेण सूरपण्णत्तीए भणिअं-जोइसियविमाणाइं सव्वाइं भवंति फालिअमयाइं। दगफालियामया पुण लवणे जे जोइसविमाणा ॥ १६ ॥ जं सव्वदीवसमुद्देसु फालिआमयाइं लवणसमुद्दे चेव केवलं दगफालिआमयाइं तत्थ इदमेव कारणं-उदगेण मा विघाओ होउत्ति, जं सूरपण्णत्तीए चेव भणियं,-लवणम्मी जोइसिया उड्ढं लेसा हवंति णायव्वा। तेण परं जोइसिया अहलेसाया मुणेयव्वा ॥ १७ ॥ तंपि उदगमालावभासणत्थमेव, लोगट्ठिइ (एसा. जीवा ३०४ पत्रे) ६ ॥

सत्त य सत्तट्ठाणाईएसु (११-५५६) दस कुलगरा दसट्ठाणे (११-७६७)। पण्णत्तीए भणिया पण्णारस जंबुदीवस्स

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१२भ०-२०२) ॥१८॥ सत्तगहणेण जे विमलवाहण परेण ते ण संगहिया । अणिउंजिज्झिय ते कुलगरत्तणं जेण कयवंतो ॥ १९ ॥ पणरस कुलगरत्तणं सामण्णाउत्ति तेऽवि संगहिया । जत्थ दसण्हं सत्तगमणिअत्तं तत्थ तिगमाहू ॥ २० ॥ ७ ।

(भ. २९८ ज्ञा. १८३ प्रज्ञा.५३५) तिरियाणं चारित्तं णिवारिअं तो कओ पुणो तेसिं । सुव्वइ बहुआणं चिय महव्वयारोवणं समए ? ॥ २१ ॥ ण महव्वयसब्भावेवि चरणपरिणामसंभवो तेसिं । ण बहुगुणाणंपि जओ केवलसंभूइपरिणामो ॥ २२ ॥ ८ ।

(स्था. १७८ भ. ९६०) सुत्ते चउसमयाओ णत्थि गईओ परा विनिदिट्ठा । जुज्जइ उ पंचसमया जीवस्स इमा गई लोए ॥ २३ ॥ जो तमतमविदिसाए समोहओ बंभलोगविदिसाए । उववज्जए गईए सो नियमा पंचसमयाए ॥ २४ ॥ उज्जुया य एगवक्का दुहओवक्कागई विनिदिट्ठा । जुज्जइ अ तिचउवक्का विणा न चउपंचसमयाए ॥ २५ ॥ उववायाभावाओ ण पंचसमयाउऽहवा न संताऽवी । भणिया जह चउसमया महल्लबंधे ण संतावि ॥ २६ ॥ ९ ।

निरइंदा तेरस पत्थडाइया अउणपण्ण सव्वग्गा । अण्णे अ सोलसाइं पण्णासग्गा कहं गेज्झा ? ॥ २७ ॥ दस तिअसहिया एक्काहिया य णव सत्त पंच तिण्णेक्के । नरइंदए कमो खलु ओसरमाणो उ रयणाए ॥ २८ ॥ सोलस दसट्ठ छप्पंच चेव चत्तारि चेव

१ अवसर्पिण्यां सप्त उत्सर्पिण्यां दशेति स्थानाङ्गतात्पर्यं, भगवत्यां प्रस्तुतवाचनायां यद्यपि सप्तोक्ताः तथापि 'अथ चेह स्थाने कुलकरादि वक्तव्यता दृश्यते' इति वृत्तिपाठे न नियता वाचना, ततः क्वचित् 'पन्नरसे' त्यस्यापि संभवः, अत एव 'क्वचित् पंचदशापि दृश्यन्ते' इति स्थानाङ्गदशमस्थानवृत्तिरपि संगता ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक्कोऽयं । पण्णास पत्थडा खलु सत्तसु पुढवीसु णायव्वा ॥ २९ ॥ जे तेरसादओ किर ते सव्वंति गुरवो पभासंति । बोडिअ विणिग्गया सोलसादओ ते न ते गेज्झा ॥ ३० ॥ ॥ १० ।

सामाइयचुन्नीए उसभस्स धणादओ भवा सत्त । होन्ति अ पिंडिज्जंता बारस वसुदेवचरिअम्मि ॥ ३१ ॥ संखेवत्था चुन्नीए सत्त इयरे सहाणुभूइत्ति । सिज्जंसेणऽक्खाया दोसुवि संपिंडिआ सव्वे ॥ ३२ ॥ ११ ।

सीहो सुदाढनागो आसग्गीवो य होइ अण्णेसिं । सिद्धो मिगव्वओत्ति य होइ वसुदेवचरिअम्मि ॥ ३३ ॥ सीहो चेव सुदाढो जं रायगिहम्मि कविलबडुओत्ति । सीसइ ववहारे गोयमोवसमिओ स णिक्खंतो ॥ ३४ ॥ १२ ।

साईअपज्जवसिआ सिद्धा ण य णामऽतीतकालम्मि । आसी कयावि सुण्णा सिद्धी सिद्धेहिं सिद्धंते ॥ ३५ ॥ सव्वं साइ सरीरं ण य णामाइमयदेहसब्भावो । कालअणाइत्तणओ जहाव राइंदियाईणं ॥ ३६ ॥ भ. २५५ सव्वो साई सिद्धो णयाइ सो विज्जए तहा तं च । सिद्धा सिद्धी अ सया णिद्दिट्ठा रोहपुच्छाए ॥ ३७ ॥ १३ ।

उक्कोसपंचधणुसय जहण्णओ सत्तरयणि सिद्धंते । कुम्मासुअमरुदेवीण देहमाणं कहं गेज्झं ? ॥ ३८ ॥ एमेवुक्कोसयपुव्वकोडि-जीविसु णरेसु णेअव्वं । तत्तो समहियजीवीवसुदेवाईसु तं किह णु ? ॥ ३९ ॥ ससरीरतिभागूणं भणियं सिद्धावगाहणामाणं । संकुइयाइअमरणे जहण्णमुक्कोसए कहणु? ॥ ४० ॥ जं किर तित्थगराणं जहण्णमुक्कोसयं च जं भणियं । उच्चत्तं तो कुम्मयमरुदेवीणं ण लग्गहणं ॥ ४१ ॥ अहवा पंचसउच्चिय मरुदेवी जेण किंचि ऊणा ऊ । इत्थी पुरिसेहिंतो अहिया वा णायंतो सिद्धा ॥ ४२ ॥ अहंगुलाहियकरा सिद्धजहण्णावगाहणा जेणं । तेणातित्थगराणं अत्थि विहत्थाण निव्वाणं ॥ ४३ ॥ तं कुम्मसुयाईणं अच्छेरयत्ति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नियमा य ते अ सिज्झंति । तेणं अङ्गुलाहिअकरावगाहणा सिद्धा ॥ ४४ ॥ अहवाऽऽऊ जमुच्चत्तं च सुत्तभणियं जहण्णमियरं च । सामण्णं ण विसेसा पंचसयादेसवयणं व ॥ ४५ ॥ ॥ १४ ।

(प्र.३७९)जइ पोग्गलपरियट्टा संखाईआ वणस्सईकालो। तो अच्चंतवणस्सइजीवा कहं णाम मरुदेवा?॥४६॥ होज्जव वणस्सईणं व अणाइमिच्चमत एव हेऊओ । जमसंखेज्जा पोग्गलपरिअट्टा तत्थऽवत्थाणं ॥ ४७ ॥ कालेणेवइएणं तम्हा कुव्वंति कायपल्लटं । सव्वेऽवि वणस्सइणो ठिइकालंते जह सुराई ॥ ४८ ॥ पइसमयमसंखेज्जा जेणुववट्टंति तो तदब्भत्थ । कायठिईए समया वणस्सईणं परीमाणं ॥ ४९ ॥ कायठिईकालेणं तेसिमसंखेज्जयावहारेणं । णिल्लेवणमावण्णं सिद्धीविय सव्वभव्वाणं ॥ ५० ॥ णय पच्चुप्पण्णवणस्सईण णिल्लेवणं न भव्वाणं । जुत्तं होइ न तं [न] जइ अच्चन्तवणस्सई णत्थि ॥५१॥ एवं चाणाइवणस्सईण अत्थित्तमत्थओ सिद्धं । भण्णइ इमावि गाहा गुरूवएसागया समए ॥५२॥जी.५०प्र.३८० अत्थि अणंता जीवा जेहिं न लद्धो तसाइपरिणामो। तेऽवि अणंताणंता णिगोअवासं अणुवसंति ॥५३॥ अच्चंतवणस्सइणोवि संति एवं फुडेवि सिद्धम्मि । भावेअव्वो कहं णहु तेसिं कायट्ठिइकालो ? ॥५४॥ सव्वेहिं कह व जीवेहिं फासिअं सुअमणंतसो समए । पत्ताइ कहव बहुसो ठाणाइं णारगाईणि ? ॥५५॥ दव्विंदियभाविंदिय पोग्गलपरियट्ट रागदोसाई । भावेअव्वाइं कहं सुत्ताइं एवमाईणि? ॥५६॥ कहं भविआणाईया सपज्जवसिअत्ति देसियं सुत्ते । ण य भविएहिं विरहिओ होही लोगोत्ति भणियमिणं ॥५७॥ गम्मइ जे सिज्झिस्संति ते अणाइसपज्जवसिअत्ति। तह बहुसो सुत्ताइं सिद्धंते देसविसयाइं ॥५८॥ तह कायठिईकालादओ विसेसे पडुच्च किर जीवे । णाणाइवणस्सइणो जं संववहारबाहरिआ ॥ ५९ ॥ (जी.५१) सिज्झंति जेत्तिया किर इह संववहारजीवरासीओ । एंति अणाइवणस्सईरासीओ तेत्तिआ तम्मि ॥ ६० ॥ १५।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(भ.६१२)धम्माइपएसेहिं दुपएसाई जहण्णयपयम्मि। दुगुणदुरूवहिएणं तेणेव कहणु हु फुसेज्जा? ॥६१॥ एत्थ पुण जहण्णपयं लोगंते तत्थ लोगमालिहिउं । फुसणा दाएअव्वा अहवा खंभाइकोडीए ॥ ६२ ॥ १६ ।

(भ. ७८४) वीसइमसउद्देसे चउप्पएसाइए चउप्फासे । एगबहुवयणमीसा बीयाईआ कहं भंगा ? ॥ ६३ ॥ देसो देसा व मया दव्वखेत्तवसओ विवक्खाते '। संघाइयभेयतदुभयभावाओऽवी वयणकाले ॥ ६४ ॥ १७ ।

(भ. ८६५) परिमंडलं जहन्नं भणियं जुम्मेणवट्टिओ लोओ। तिरियाययसेढीणं संखेयपएसया कहणु? ॥६५॥ दो दो दिसासु एक्केकओ य विदिसासु एस कडजुम्मो । पढमपरिमंडलंते वुड्ढी किर जीवलोअंतो ॥ ६६ ॥ अट्ठसया पसज्जइ एवं लोगस्स ण परिमंडलया । वट्टालेहेण तओ वड्ढी कडजुम्मिया जुत्ता ॥६७॥ जइ लोगतिरिअसेढो संखेज्जपएसियावि वज्जंति । किमलोगतिरिअसेढी संखपएसा ण सिद्धा उ ॥६८॥ एवं वा दव्वट्ठा जइ सव्वा कडजुम्माओ कहं पएसतया ? । लोगतिरिअसेढीओ भणिया कडबायरपएसा ? ॥ ६९ ॥ जइवि तिरिआययाओ णियमा कडबायरा पएसतया । उड्ढाइया कहं तो कडजुम्मा होंति दव्वतया ? ॥७०॥ उड्ढाययाण जा खलु पएसदव्वट्ठया विणिद्दिट्ठा । होअव्वं तिरियाणं ताए दव्वप्पएसतया ॥ ७१ ॥ पच्चक्खं दाइज्जइ सेढीणं पयरलोगनालीए । दव्वपएसट्ठयया जुम्मविभागे जहा जेसिं ॥ ७२ ॥ १८ ।

कोडाकोडी अयरोवमाण तित्थंकरणामकम्मठिई । बज्झइ य तयणंतरभवम्मि तइयम्मि निद्दिट्ठं ॥ ७८ ॥ ताट्ठिइमोसक्केउं तइयभवो अहव जीवसंसारो । तित्थयरभवाओ वा ओसक्केउं भवे तइए ॥ ७९ ॥ जं बज्झइत्ति भणियं तत्थ निकाइज्जइत्ति णियमोऽयं । तदवंझफलं नियमा अण्णा अणिकाइआवत्थे ॥ ८० ॥ १९ ।

For Private and Personal Use Only

(प्र.४८४) तिरिएसु णत्थि तित्थयरणामसंतंति देसिअं समए । कह व तिरिओ न होही अयरोवमकोडिकोडीए? ॥८१॥ तंपि सुनिकाइ यस्सेव तइअभवभाविणो विणिद्दिट्ठं । अणिकाइयम्मि वच्चइ सव्वगईओवि ण विरोहो ॥ ८२ ॥ २० ।

तिरिअनरसम्मदिट्ठी ण बंधई विमाणवज्जमाउंति । मणुएसु बंधइच्चिय कम्मप्पयडीण णिद्दिट्ठं ॥ ८३ ॥ दरिसणविसेसओ तं जहेह सासाणदरिसणस्सावि । सम्मत्तब्भंतरया ण य तेणामरगई नियमो ॥ ८४ ॥ २१ ।

छेवट्ठं संघयणं सुत्ते एगिंदियाण पण्णत्तं । कम्मप्पगडीए कह बंधे उदए य तं नत्थि ? ॥८५॥ सण्णी अ असण्णियत्ति य जह कालिअहेउदिट्ठिवायाओ । एगिंदियाणमेवं संघयणं ण य विसेसाओ ॥ ८६ ॥ २२ ।

(भ.३९१) मोहनिमित्ता अट्ठवि बायरराए परीसहा कहणु ?। कीस व सुहुमसरागे न होंति उवसामगे सव्वे? ॥८७॥ सत्त य परउच्चिय जेण बायरो जं च सावसेसम्मि । मग्गिल्लम्मि पुरेल्ले लग्गइ तो दंसणस्सावि ॥८८॥ लग्गइ पएसकम्मं पडुच्च सुहुमादओ गुणे अट्ठ । तस्स भणिया ण सुहुमे ण तस्स सुहुमोदओऽवि जओ ॥ ८९ ॥ २३ ।

सयरीए मोहबंधट्ठाणा पंचादओ कया पंच । अनिअट्टिणो छलुत्ता णवादओदीरणापगए ॥९०॥ सयरीए दो विगप्पा सम्मा-मिच्छं समोहबंधम्मि । भणिया उईरणाए चत्तारि कहंणु होज्जाहि ? ॥ ९१ ॥ सयरीए पंचविहबंधगस्स दोण्ह उदओ विणिद्दिट्ठो। चउराई छण्ह उदओ उदीरणाए पुणो भणिओ ॥९२॥ एक्को व दो व चउबंधगस्स सयरीए देसिया उदया । एक्को य बिचउ पंच य छच्चेवोदीरणा देसे ॥ ९३ ॥ सग बायरस्स संते ठाणा सयरीइ मोहणिज्जस्स । बारस उईरणाए दुगतेवीसाहिआ भणिया ॥ ९४ ॥ संजलणलोहचरिमत्तिभागसंखेज्जभागमेत्तेवि । वट्टंतस्स कहं बायरस्स णेक्को हवइ संतं ॥ ९५ ॥ जइ बायरस्स बारस

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीस णिअट्टिस्स पंच पडिसिद्धा । संता चउविहणिब्बंधगस्स किह वा भवे सत्त ? ॥ ९६ ॥ संजलणलोहचरिमत्तिभागसंखेज्जभाग-मेत्तोऽवि । सत्तावीसोवसमो बायररागस्स किं ण भवे ? ॥ ९७ ॥ संजलणाणं वीसुं सयरीए उवसमो समक्खाओ। मज्झिमकसाय-मीसे उईरणाईसु परिकहिओ ॥ ९८ ॥ धुवमणुधावंति माया धुवा सयं किंचि बायरत्तेवि । सत्तावीसोवसमे ण तस्स तो संतमेक्को य ॥ ९९ ॥ बंधाइविहाणविचित्तयावि रोगंभि भेसजोवमया । परिणामविचित्तत्तणभावाओ जुज्जए सव्वे ॥ १०० ॥ २४ ।

भणियं सुत्ते छिन्नं चोद्दसपुव्विम्मि पढमसंघयणं । तम्मि अ अवट्टमाणे सव्वट्ठं कह गओ वइरो? ॥ १०१ ॥ न य भणिअमियं वइरो सव्वट्ठमितो न सुत्तणिद्दिट्ठं । तेण तमनारिसच्चिय फुडं च णाणुत्तरविमाणं ॥ १०२ ॥ २५ ।

एगाई एगन्ता जवमज्झा सत्त तित्थवोच्छेया । अण्णेसिं पलितपया एक्केक्कगदुतिदुवेक्केक्का ॥ १०३ ॥ २६ ।

(प्र.३९१) सुत्ते विब्भंगस्सवि परूविअं ओहिदंसणं बहुसो। कीस पुणो पडिसिद्धं कम्मप्पयडीइ पगयम्मि? ॥१०४॥ विब्भंगेविहु दरिसण सामण्णविसेसविसयतो सुत्ते । तं ता विसिट्ठमणगारमेत्तत्ताऽवहिविभंगाणं ॥ १०५ ॥ कम्मप्पयडी मयं पुण सागारेयरवि-सेसभावम्मि । ण विभंगणाणदंसणविसेसणमणिच्छितत्तणओ ॥ १०६ ॥ २७ ।

संमुच्छिमोरगाणं काओ जोअणपुहुत्तमुक्कोसं । तं च णव जाव भणियं बारस आसालियाकाओ ॥ १०७ ॥ अवगाहणाअवसरे माणं णिद्दिसइ जेण तस्सेव । तो भण्णइ तं मोत्तुं सेसाणं जोअणपुहुत्तं ॥ १०८ ॥ २८ ।

होऊणं देवकया चउतीसाइसयबाहिरा कीस । पागारंबुरुहाइ अणण्णसरिसावि लोगम्मि ॥ १०९ ॥ चोत्तीसं किर णियया ते गहिआ सेसया अणिययत्ति । सुत्तम्मि ण संगहिआ जह लद्धीओ विसेसाओ ॥ ११० ॥ २९ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(सूर्य. २९० भ. ५७७) वट्टच्छेदो कइवयदिवसे धुवराहुणो विमाणस्स । दीसइ परं न दीसइ जह गहणे पव्वराहुस्स ॥१११॥ अच्चत्थेण हि तमसा भिभूय तेजं ससी विसुज्झंतो । तेण ण वट्टच्छेओ गहणे उ तमो उ तमबहुलो ॥ १२२ ॥ ३० ।

(जी.३७९सूर्य २६३) अद्धकविट्ठागारा उदयत्थमणम्मि किं न दीसंति। ससिसूराण विमाणा तिरिअक्खेत्तट्ठियाणंपि ? ॥११३॥ उत्ताणद्धकविट्ठं पेढं किर तदुवरिं च पासाओ । वट्टालेहेण तओ समवट्टं दूरभावाओ ॥ ११४ ॥ ३१ ।

तिरिअट्ठिओ मयंको राहुविमाणोवरि ट्ठिओ कहणु । उवरिं खंडो दीसइ हेट्ठा खंडो कहं ण भवे ? ॥११५॥ आईइ कालपक्खस्स उवरिमारद्धमक्कमइ चंदं । जं तेण णज्जइ फुडं हेट्ठा राहू न चंदस्स ॥११६॥ हेट्ठा तमसो सूरो जं किर पुव्वावरि ट्ठिओ सोमं । भासइ य तेण दीसइ उवरिं खंडो दुपक्खेऽवि ॥ ११७ ॥ ३२

चउरंगुलमप्पत्तं देसूणं जोअणं तयद्धेण । कह राहुविमाणेणं ससिणो छाइज्जइ विमाणं ? ॥ ११८ ॥ सव्वे गहणक्खत्ता रविससिमज्झम्मि अह य गहणम्मि । वच्चइ राहुविमाणं सूरविमाणस्स हेट्ठेणं ॥ ११९ ॥ जं गहविमाणमाणं रविससिमज्झम्मि जं च गहभगणो । उस्सग्गविहिअमेत्तं सुअम्मि तमसोऽपवाओ अ ॥ १२० ॥ ३३ ।

कह व दसुत्तरजोअणसयबाहल्लम्मि जोइसे खेत्ते । जंबुद्दीवाईणं माएज्ज गणिज्जमाणमिणं? ॥१२१॥ (जी. ३३४) कोडाकोडी सण्णंतरन्ति मण्णंति केइ थोवयरा । अण्णे उस्सेहंगुलमाणं काऊण ताराणं ॥ १२२ ॥ ३४ ।

कह होंति समहिआइं चरिमाऽचरिमप्पएसरासीओ । दव्वाइं कह व जुज्जइ दव्वुवयारो पएसेसु ? ॥१२३॥ उजुसुत्ताइमयमिदं पइप्पएसमिह दव्वपडिवत्ती । देसप्पएसभेओ जह वा धम्मत्थियाईणं ॥ १२४ ॥ ३५ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दव्विदियाइ सोलस जस्साणुत्तरसुरस्स एसाइं । सो वच्चइ मिच्छत्तं कहण्णु आराहणा तस्स ? ॥ १२५ ॥ णणु कम्मपय-डियमयं सम्मदिट्ठी णरो णराउंपि । बंधइ तो एगंतो ण तस्स मिच्छत्तगमणम्मि ॥ १२६ ॥ मिच्छोदयमेत्ताओ कात्ताऽणाराहणा जओ तिविहा । आराहणा जहण्णाइया तदब्भन्तरो सो अ ॥ १२७ ॥ ३६ ।

उस्सेहंगुलमाणेण विण्हुणो सयसहस्समुस्सेहो । मेरुम्मि पमाणंगुलमाणेण कहं कमं कुज्जा ? ॥ १२८ ॥ कह वा सोहम्मत्थ च घट्टए उडुवरं विमाणं सो । संगमयसंतिअंति व तं च कहं विण्हुकालम्मि ? ॥ १२९ ॥ मेरुम्मि कमो उडुघट्टणं च सुइमेत्तयं ण सुत्ताणा । होज्ज व संचरमाणं विमाणमुडुसन्नियमदोसो ॥ १३० ॥ ३७ ।

चक्खिंदिअस्स विसओ जं जोयणसयसहस्समब्भहिअं । विण्हुच्चिय णिदरिसणं तत्थवि केई पभासंति ॥ १३१ ॥ ३८ ।

अह य पमाणंगुलओ सीआलीसाय समइरेगेहिं । भणियं उदयत्थमणे दीसइ सूरो सहस्सेहिं ॥ १३२ ॥ एवं जंबुद्दीवे व पोक्खरे माणुसुत्तरासन्नं । लक्खेहिं एकवीसाए दीसइ समयाइरेगेहिं ॥ १३३ ॥ चक्खिंदियस्स तम्हा विसयपमाणं जहा सुए ऽभिहियं । आउस्सेहपमाणंगुलाणमेकेणवि ण सज्झं ॥ १३४ ॥ (प्र.३०१) सुत्ताभिप्पाओऽयं पयासणिज्जे अ न उण अपयासे । आरिसमायंगुलओ अहियं लक्खं ण सेसेहिं ॥१३५॥ ण सदेहविसेसहिअं इयरा विण्हुं न जुज्जए दट्ठुं । जमणेगसहस्सगुणं पेच्छंति णरा सदेहाओ ॥ १३६ ॥ ३९ ।

संतिजिणस्सुच्चत्तं चत्तालीसं धणूणि भणियाइं । सङ्घत्तेयालीसं अण्णेहिं पुणो पणीयाइं ॥ १३७ ॥ ४० ॥ णमिसुव्वएसु हरि-सेणपउमणामा हवंति दो चक्की । णमिणेमिणो अ मज्झे जयणामो जिणमए भणिओ ॥ १३८ ॥ णमिसुव्वयंतरे पउमणामहरिसेण-

For Private and Personal Use Only

चक्किणोत्ति दुवे । जयणामा य णमिंमि अण्णेहिं पकप्पियं एयं ॥ १३९ ॥ तिण्ह महापउमाईण वीस पण्णरस बारस धणूणि। बावीसवीसचउद्दस धणूणि उच्चत्तमण्णेसिं ॥ १४० ॥ ण त्रिसंवयंति पढमं उच्चत्ताईणि तेण सपमाणं । विघडंति जिणेहिं समं बीयादेसम्मि तो वज्जो ॥ १४१ ॥ ४० ।

बंधिसयबीयभंगो जुज्जइ जइ किण्हपक्खियाईणं । तो सुक्कपक्खियाई पढमे भंगे कहं गेज्झा ? ॥१४२॥ पुच्छाणंतरकालं पइ पढमो सुक्कपक्खियाईणं । इयरेसिं अवसिट्ठं कालं पइ बीओ भंगो ॥ १४३ ॥ ४१ ॥ (भ. ९२९)

पट्ठवणसए स किण्हु हु समासओ वण्णिओ उ चउब्भंगो । कहव समज्जिणणसए गमणिज्जा अत्थओ भंगा ॥१४४॥ पट्ठवणसए भंगा पुच्छा भंगाणुलोमओ वच्चा । कम्मसमज्जिणणसए बाहुल्लाओ समाओज्जा ॥ १४५ ॥४२॥ (भ. ९४१)

अप्पडिलेहाईसु अ णवण्ह भंगाण संभवे सत्त । उवहिस्स य उवघाया[1] पुणरुत्ता कीस णिद्दिट्ठा? ॥१४६॥ पगडो[2] दगतीराइसु पच्छित्तादेसबहुलया कीस । तेसिं तिविहो य कहं पूरइ कप्पो अपुणरुत्तो? ॥ १४७ ॥ दो किर समाणरूवा बीय तइअ अब्भिंतरात्ति णाभिहिया । जह पच्छित्तवसाओ पुरिसाणं भेयसंयोगा ॥१४८॥ आएसविसेसा किर उवघाया उवहिणो तहा कप्पो । तेसिंति जहा सुत्ते पण्णरसाणंतरा सिद्धा ॥१४९॥ एकम्मिवि अवराहे परिणामविसेसओ जओ बहुधा[3] । तो तयणुवत्तिओ च्चिय पच्छित्तादेसबाहुल्लं ॥ १५० ॥ ॥ ४३ ॥

---

१ संघाया. २ पडगा. ३ बहुया.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तइयाए ठवणाए पढमबीयाण संभवो णियमा । एमेवारूवणाए पढमयबिइयाहिं किं कज्जं ? ॥ १५१ ॥ चरिमाए वा तिण्हंपि संभवो ते[2]हवि बोहे[3]णत्थं च । सुइगहणत्थं च तहा चरिमाए तदभिहाणंपि ॥ १५२ ॥ ४४ ॥

(नन्दी. १३४) केई भणंति जुगवं जाणइ पासइ य केवली नियमा । अण्णे एगंतरिअं इच्छंति सुओवएसेणं ॥१५३॥ अण्णे ण चेव वीसुं दंसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स । जं चिय केवलणाणं तं चिय से दरिसणं विंति ॥ १५४ ॥ जह किर खीणावरणे देसणाणाण संभवो ण जिणे । उभयावरणाईए तह केवलदंसणस्सावि ॥ १५५ ॥ देसण्णाणोवरमे जह केवलणाणसंभवो भणिओ । देसद्दंसणविगमे तह केवलदंसणं होउ ॥ १५६ ॥ अह देसणाणदंसणविगमे तुह केवलं मयं णाणं । ण मयं केवलदंसणमिच्छामित्तं णणु तवेयं ॥१५७॥ देसण्णाणाभावो जे[4]ह य कसिणविसयलिंगलिंगित्ता । जुत्तं जिणम्मि एयं ण उ केवलदंसणाभावो ॥१५८॥ अहवा ण चेव देसण्णाणाभावो जिणम्मि, किं कज्जं?। जाणाइ जि[5]णवरिंदो तेसिं विसए अ[6]परिसेसे ॥१५९॥ तहविय न पंचणाणी भण्णइ समयम्मि मा हु होज्जाहि । केवलणाणाकसिणप्पसंगदोसो जिणिंदस्स ॥१६०॥ पुण्णे महातलाए णत्थि पभूतं (पुहुत्तं) तदंतव[7]त्तीणं । जह सेसतलागाणं जिणम्मि तह सेसणाणाइं ॥१६१॥ अहवा जह संताणवि गहताराईण दिनकरब्भुदए । न पुहुत्तमेवमण्णण्णाणाणं केवलब्भुदए । ॥१६२॥ अहवा खओवसमियत्तणेण छउमत्थभाववत्तीणि । केवलणाणं खइयं जेण जिणे संभवो तस्स ॥१६३॥ केवलदंसणमेव (उ) छउमत्थे णत्थि तं जओ खइयं । जइ तं णत्थि जिणम्मिवि तो कत्थ तयं गहेअव्वं ? ॥ १६४ ॥ छउमत्थम्मि जिणम्मिवि जं नत्थी

१ भवणाए. २ सब्भावो. ३ मइबोह. ४ ब्भावा. ५ जाणइ जेण जिणिंदो. ६ असेसेऽवि. ७ वत्थीणं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्वहेव तं णत्थि । सिद्धं चउविअप्पं च दंसणं सासणे बहुसो ॥ १६५ ॥ आह णउ सव्वसोच्चिय केवलिणो णत्थि दंसणं किंतु । णाणंति दंसणं ति अ एक्कं चिअ केवलं तस्स ॥ ॥ १६६ ॥ जइ एगत्तं दोण्हवि ता एगयरोवओगया जुत्ता । इयरा फुडमण्णत्तं पुणरुत्त निरत्थया वावि ॥ १६७ ॥ पत्तेयावरणत्तं कह वा बारसविहोवओगत्तं । सागाराणागारं सिद्धाण य लक्खणं कह णु ? ॥१६८॥ णाणस्स जाणिअव्वे विसओ जइ दंसणस्स दट्ठव्वे । जुत्तं ते इहरा पुण लक्खणवेहम्ममावहणं ॥१६९॥ अहवा जइ णाणेणवि दीसइ णज्जइ य दंसणेणावि । एवं खु णाणदंसणपरूवणा कप्पणामेत्तं ॥ १७० ॥ एवं च सेसदंसणणाणाणवि णाम पत्तमेगत्तं । सिद्धाणि अ पत्तेयं दंसणणाणाणि समयम्मि ॥१७१॥ कह वा जिणेण भणिअं दोण्णि अहं णाणदंसणट्ठाए । सोमिलपुच्छाए जइ दंसणणाणाणमेगत्तं ॥ १७२ ॥ आह--जत्तोच्चिय[2] जीवाणं अणाइं (नण्णाइं) तेण तेसिमेगत्तं । भण्णइ तो सेसाणवि णाणाणं पत्तमेगत्तं ॥ १७३ ॥ ताइंपि जीवभावाणण्णाइं जे य सेसया भावा । अण्णोऽण्णलिंगभिण्णा खओवसमियादओ पंच ॥ १७४ ॥ सइ जीवाणण्णत्ते णाणत्तं तव मयं अहो तेसिं । ण मयं केवलदंसणणाणाणं एवमिच्छा ते ॥१७५॥ जह जीवाणन्नाणं णाणत्तं सेसभावभेयाणं । तह जीवाणऽण्णाणं णाणत्तं केवलाणंपि ॥ १७६ ॥ अह भणियं च जिणमए जाणइ पासइ अ केवलण्णाणी । णवि दंसणंत्ति[3] तम्हा णाणं चिय दंसणं तस्स ॥ १७७ ॥ भण्णइ जहोहिणाणी जाणइ पासइ य भासियं सुत्ते । ण य णाम ओहिदंसणणाणेगत्तं तह इमंपि ॥ १७८ ॥ जं पासइत्थ भणियं तम्हा तं दंसणेण घेत्तव्वं । जेणं[4] विसेसियमेअं पण्णवणदसाइसुत्तेसु ॥ १७९ ॥ खीणे पंचविह-

१ तो, २ आह जओ जीवाणं णाइ. ३ दंसणित्ति. ४ जाण.

For Private and Personal Use Only

म्मिवि णाणावरणम्मि जाणइ जगंति । पासइ य दंसणावरणविप्पणासम्मि सव्वण्णू ॥ १८० ॥ मइणाणा अणत्थंतरभूयस्सवि चक्खुदंसणस्सेह । जह दंसणोवयारो जुत्तो तह केवलस्सावि ॥ १८१ ॥ भण्णइ चक्खुदंसणमइणाणत्तम्मि कालभेयकयं । जं जत्थ दंसणं तत्थ णत्थि कालम्मि नाणं तु ॥ १८२ ॥ जइ वा जुगवं चक्खुदंसणमइणाणविसयया होज्जा । तो जुगवं छउमत्थेऽवि होज्ज उवओगदुगमेवं ॥ १८३ ॥ तम्हा अचक्खुदंसणमिह दंसणमिट्ठमोग्गहेहाओ । सव्वत्थ अवाओ धारणा य सुद्धं मइण्णाणं ॥ १८४ ॥ आह किमोग्गहमेत्तं ण दंसणं होइ सेसयं णाणं । भण्णइ एगसमइओ जमोग्गहो णोवओगो उ ॥१८५॥ अंतोमुहुत्तमेत्तं उवओगो णिअमिओ जओ सुत्ते । तम्हा दंसणकालो सिद्धो फुडमोग्गहेहाओ ॥ १८६ ॥ जह सेसणाणदंसणणाणत्तं तह जिणम्मि किमणिट्ठं ? । णाणत्तं केवलणाणदंसणाणं सलक्खणओ ॥ १८७ ॥ णाणं वत्तं दंसणमव्वत्तं भणइ देसियं समए । तो णाणदंसणाणं जिणम्मि सविसेसणं जुत्तं ॥ १८८ ॥ भण्णइ केवलदंसणमव्वत्तं जेण होज्ज को हेऊ ? । जइ णाणाओ[1] अण्णं वत्तं च हवेज्ज को दोसो ! ॥ १८९ ॥ जह सव्वं विण्णेयं नाणेण जिणोऽमलं विजाणाइ[3] । तह दंसणेण पासइ णिययावरणक्खए सम्मं ॥ १९० ॥ जेसिमणिट्ठं दंसणमण्णं णाणाहि जिणवरिंदस्स । तेसिं न पासइ जिणो सविसयणिययं जओ नाणं ॥ १९१ ॥ जह पासइ तह पासउ पासइ सो जेण दंसणं तं से । जाणइ अ जेण अरहा तं[4] से णाणं निउत्तव्वं[5] ॥ १९२ ॥ जं केवलाइं साई अपज्जवसियाइं दोऽवि भणियाइं । तो बिंति केइ जुगवं जाणइ पासइ य सव्वण्णू ॥१९३॥ इहराईणिहणत्ते मिच्छावरणक्खओत्तिवि जिणस्स ।

१ नाणं तमिह. २ णाणाओ अ अण्णं. ३ जाणेइ. ४ ते ५ तिघेत्तव्वं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इयरेयरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं ॥ १९४ ॥ तह य असव्वण्णुत्तं असव्वदरिसणत्तणप्पसंगो य। एगंतरोवओगे जिणस्स दोसा बहुविहीया ॥ १९५ ॥ ठिइकालं जह सेसदंसणणाणाणमणुवओगेवि। दिट्ठमवट्ठाणं तह ण होइ किं केवलाणंपि ? १९६ ॥ तुल्लेऽवि णाणदंसणसब्भावे किह णु जुगवउवओगो । छउमत्थस्साणिट्ठो इट्ठोवि जिणस्स दुविहोऽवि? ॥१९७॥ सव्वक्खीणावरणो अह मण्णइ केवली ण छउमत्थो । तो जुगवमजुगवंपि चं उवओगविसेसणं तेसिं ॥ १९८ ॥ देसक्खए अजुत्तं जुगवं कसिणोभओवजोगित्तं । देसोभओवओगो पुण इय पडिसिज्झए कीस ? ॥ १९९ ॥ अह णेवेस उ घेप्पउ जह छउमत्थस्स तह जिणस्सावि । दोण्हवि उवओगाणं एगस्स य एगसमयम्मि ॥ २०० ॥ तो भणइ एव मिच्छा उभयावरणक्खओत्ति केवलिणो । उवउत्तस्सेगयरे जेणेगयरस्स आवरणं ॥ २०१ ॥ भण्णइ भिण्णमुहुत्तोवओगकालेऽवि तो तिणाणस्स । मिच्छा छावट्ठीसागरोवमाइं खओवसमो ॥ २०२ ॥ अह णवि एवं तो सुण जहेव खीणंतराइओ अरहा । संतेवि अंतराइयखयम्मि पंचप्पयारम्मि ॥ २०३ ॥ सययं ण देइ लहइ व भुंजइ उवभुंजई य सव्वन्नू । कज्जम्मि देइ लहइ अ भुंजइ अ तहेव एयम्मि ॥ २०४ ॥ देंतस्स लभंतस्स व भुंजंतस्सवि जिणस्स एस गुणो । खीणंतराइयत्ते जं से विग्घो ण संभवइ ॥ २०५ ॥ उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स । खीणावरणगुणोऽयं जं कसिणं मुणइ पासइ वा ॥ २०६ ॥ तो भणइ केवलाणं पत्तो इयरेयरावरणदोसो । भण्णइ चउणाणिस्सवि स एव दोसो समाविसइ ॥ २०७ ॥ एवं विणावि णामं कारणमुप्पायविगमया पत्ता । एवं च सइ विण्णाणुब्भवो कह णु

१ सेसं. २ य. ३ मण्णासि. ४ व. य. ५ पुणाइ प. ६ एययरो. ७ स्स य. ८ विग्घे विग्घं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिद्धाणं ? ॥ २०८ ॥ जुगवाणुवओगित्ते वुच्चइ चउणाणिणो विणा हेउं । विगमुप्पायं[1] जह तह जिणस्स जइ होज्ज को दोसो ? ॥२०९॥ अहवा खीणावरणे जिणम्मि णिक्कारणावरणदोसो । ण उ जुज्जइ छउमत्थे संतावरणेत्ति ते बुद्धी ॥२१०॥ भण्णइ छउमत्थस्सवि णाणेगयरोवओगभावित्ते । संतेऽवि खओवसमे सेसावरणं न संभवइ ॥ २११ ॥ जेणं जया ण जाणइ णूणमुइण्णं तदा तदावरणं । अध संतेण ण जाणइ मिच्छावरणक्खओवसमे ॥ २१२ ॥ एवं जं जं कालं उवउज्जइ जम्मि २ णाणम्मि । तं तं कालं जुत्तो तस्सावरणक्खओवसमो ॥ २१३ ॥ ठिइकालविसंवाओ नाणाणं णविअ ते चउण्णाणी । एवं सति छउमत्थो अत्थि ण जइ दंसणी समए ॥ २१४ ॥ पासन्तो णवि जाणइ जाणं व ण पासई जइ जिणिंदो । एवं ण कयाइवि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ २१५ ॥ जुगवमजाणंतोऽविहु चउहिवि णाणेहिं जह चउण्णाणी । भण्णइ तहेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ २१६ ॥ तुल्ले उभयावरणक्खयम्मि पुव्वयरमुब्भवो कस्स? । दुविहुवओगाभावे जिणस्स जुगवंति चोएइ ॥ २१७ ॥ भण्णइ ण एस णियमो जुगवुप्पण्णेसु जुगमेवेह । होयव्वं उवओगेण एत्थ सुणे ताव दिट्ठंतं ॥ २१८ ॥ जह जुगवुप्पत्तीइवि सुत्ते सम्मत्तमइसुयाईणं । णत्थि जुगवोवओगो सव्वेसु तहेव केवलिणो ॥ २१९ ॥ भणियंपि य पन्नत्तिपण्णवणाईसु जह जिणो समयं । जं जाणइ णवि पासइ तं अणुरयणप्पभाईणि ॥ २२० ॥ इवसहमतुप्पच्चयलोवा तं[3] बिंति केइ छउमत्थो[4] । अण्णे पुण परातित्थियवत्तव्वामिणंपि जंपंति ॥ २२१ ॥ जं छउमत्थाऽऽहोहियपरमावहिणो[5] विसेसिउं कमओ[6] । णिद्दिसइ केवलित्तेण तस्स छउमत्थया नत्थि ॥ २२२ ॥ ण य पासइ अणुमण्णो[7]

१. ०प्पाओ. २ पुण. ३ तो. ४ ०मत्थे. ५ बोहि. ६ कमसो. ७ मण्णे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छउमत्थो मोत्तु ओहिसंपुण्णं । तत्थवि जो परमावहिणाणी तत्तोऽवि किं नूणो ? ॥२२३॥ ते दोऽवि विसेसेउं अण्णो छउमत्थकेवली को सो । जो पासइ परमाणुं गहणमिदं जस्स होज्जाहि ? ॥ २२४ ॥ तेसिं चिय छउमत्थाइयाण मग्गिज्जए जहिं सुत्ते । केवल-संजमसंवरबंभाईएहि निव्वाणं ॥ २२५ ॥ तिण्णिवि पडिसेहेउं तीसुवि कालेसु केवली तत्थ । सिज्झिंसु सिज्झई या सिज्झिस्सइ यावि णिद्दिट्ठा ॥ २२६ ॥ एवं विसेसियम्मिवि पर[1]मयमेगन्तरोवओगोत्ति । ण पुण जुगवोवओगे परवत्तव्वात्ति का बुद्धी ? ॥ २२७ ॥ अण्णं च इमा गाहा समए सिद्धाहिगारपरिपढिया । फुडविअडत्थं साहइ जिणस्स एगंतरुवओगं ॥२२८॥ णाणम्मि दंसणंमि य एत्तो एगतरयम्मि उवउत्ता । सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो नत्थि उवओगा ॥ २२९ ॥ सिद्धाणवि एगयरोवओगवत्तित्तणंति तइ[2]ए से । पुव्वद्धेणं सिद्धं अत्थउ पच्छद्धमिह ताव ॥ २३० ॥ परवत्तव्वमिणंति य भणिज्ज एवंपि कोइ तं ण भवे । पण्णत्तीए विसेसिय-मेयं[3] जम्हा णियंठेसु ॥ २३१ ॥ उवओगो एगयरो पणुवीसइमे सए सिणायस्स । भणिओ विअडत्थोऽवि य छट्ठुद्देसे विसेसेउं ॥ २३२ ॥ पण्णवणाचरिमंपए भणिओ सिद्धोऽवि सुद्धनाणीहिं । सागारे उवउत्तो सिज्झइ जह तत्थ गंतूणं ॥२३३॥ अह भणसी सव्वं चिय सागारं से अओ अदोसोत्ति । तो सिद्धलक्खणं कह भणियं सागारणागारं ? ॥ २३४ ॥ एवं फुडविअडम्मिवि सुत्ते सव्वण्णुभासिए सिद्धे । कह तीरइ परतित्थियवत्तव्वमिणंति वोत्तुं जे? ॥२३५॥ सव्वत्थ सुत्तमत्थि य फुडमेगयरोवउत्तसत्ताणं । उभ-ओवउत्तसत्ता सुत्ते वुत्ता ण कत्थइवि ॥ २३६ ॥ कस्सइवि णाम कत्थइ कालं जइ होज्ज दोऽवि उवओगा । उभओवउत्तसुत्ताण

१ वरमय. २ एई. ३ ०मेवं. ४ समए.

४१-४५
विशेषाः
केवल ज्ञान
दर्शन तदु
पयोग
विशेषः

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विशेषः केवलज्ञान-दर्शन तदु-पयोग विशेषः

सुत्तमेगंपि ता होज्जा ॥ २३७ ॥ दुविहाणं चिय जीवाण भणियमप्पबहुयं ससमयम्मि । सागारणगाराण य न भणियमुभओ-वउत्ताणं ॥२३८॥ जइ केवलीण जुगवं उवओगो होज्ज तो (भवे) एवं । सागारणगाराण य मीसाण य तिण्हमप्पबहुं ॥२३९॥ अहवा मइ छउमत्थे पडुच्च सुत्तं ण णाम केवलिणो । तंपि ण जुज्जइ जं सव्वसत्तसंखाहिगारोऽयं ॥ २४० ॥ काउं सिद्धग्गहणं बहुवत्तव्वयपएसु सव्वेसु । इह केवलमग्गहणं जइ ते तं कारणं वच्चं ॥२४१॥ अहवा विसेसियं चिय जीवाभिगमम्मि एतमप्पबहुं । दुविहत्ति सव्वजीवा सिद्धासिद्धादिया तत्थ ॥ २४२ ॥ सिद्धगइंदियकाए जोए वेए कसायलेसा य । णाणुवओगाहारग भासा य सरीर चरिमे य ॥२४३॥ अंतोमुहुत्तमेव य कालो भणिओ तओवओगस्स । साईअपज्जवसिओत्ति णत्थि कत्थइ विणिद्दिट्ठो ॥२४४॥ जह सिद्धाणऽइयाणं भणियं साईअपज्जवसियत्तं । तह जइ उवओगाणं हवेज्ज तो होज्ज ते जुगवं ॥ २४५ ॥ कस्स व णाणुमयमिणं जिणस्स जइ होज्ज दोऽवि उवओगा । णूणं न सि होंति जुगवं जओ निसिद्धा सुए बहुसो ॥ २४६ ॥ णवि अभिणिवेसबुद्धी अम्हं एगंतरोवओगम्मि । तहवि भणिमो न तीरइ जं जिणमयमण्णहा काउं ॥ २४७॥ मोत्तूण हेउवायं आगममेत्तावलंबिणो होउं । सम्ममणुचिन्तणिज्जं किं जुत्तमजुत्तमेयन्ति ? ॥ २४८ ॥ अहवा ण सव्वसोच्चिय सव्वं जिणमयमहेउयं भणियं । किंनु अणुअत्तमाणो अण्णत्तं हेउओ भणइ ? ॥ [1] २४९ ॥ ४५ ।

जेणं किर सुक्कबीएसु नोवलब्भन्ति जीवलिंगाइं । तो के भणंति बीआ जोणिब्भूया ण सज्जीवा ॥ २५० ॥ भण्णइ जह सव्वन्नू-

१ केई णाउंवि (णाओ).

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वएसओ जीवलिंगरहियावि । घेप्पइ मही सजीवा तह बीआ किं न घेप्पंति ? ॥ २५१ ॥ आयारप्पणिहीए तणरुक्खसबीअगा सजीवत्ति । सबियाईचित्तमंतो छज्जीवनिकाय अक्खाया ॥ २५२ ॥ अण्णेसुवि सुत्तेसु णोउंपि वणप्फईसु णो बीएं । आवस्सकाइएसुं भणइ सजीवत्ति सिद्धत्थं ॥ २५३ ॥ भणिअं पण्णत्तीए बीअजीवाणमाउमुक्कोसं । वासा ति पंच सत्त य सयम्मि फुडमेकवीसम्मि ॥ २५४ ॥ ण य संवच्छरमच्छंति ताव एक्कंपि जेण नीलाइं । सुक्काणंवि सजीवत्तमत्थि तम्हा धुवं सिद्धं ॥ २५५ ॥ आह जहऽग्गाईणं सुक्काणमचेअणत्तणं सिद्धं । सइविहु बीयकाए तहेव सुक्काण बीआणं ॥ २५६ ॥ सुक्का बीआ ण दीसइ विसेसधम्मित्तमंकुरुप्पत्ती । ण उं सुक्कग्गाईणं तेण सजीवाई बीयाई ॥ २५७ ॥ जइ वा णिज्जीवाइं तो किमगम्माइं संजयजणस्स । मज्जहिरण्णाईण व न अण्णदोसुब्भवकराइं ॥ २५८ ॥ जोणित्ति परिहरिज्जति अह मई ण य सजीवदोसाओ । सावि सजिएयरा वा पुणोवि ते चेव दो दोसा ॥२५९॥ अहवा तसजोणीणं कुल(फल)गोरसवंजणोदणाईणं । एत्तो परिहारो ते गुरुतरिया जेण तज्जोणी ॥ २६० ॥ अच्चित्तेयरमीसत्तणम्मि जोणी य जीवणियमो य । सच्चित्तेयरमीसत्तणम्मि जोणी उ सच्चित्ता ॥ २६१ ॥ जोणीमेत्तत्थे वा बीयाणं चेव जुत्तमग्गहणं । दुगुणेक्कछडाणं च तंदुलाणं किमग्गहणं ? ॥ २६२ ॥ कुक्कुसपिट्ठाईणं तंह तिगुणुक्कडतंदुलाणं च । किंमणिहताणऽग्गहणं पोरिसिकाले अईयम्मि ? ॥ २६३ ॥ मोत्तुं देहावयवे जह देहावयवमाणमाविसइ । घरकोइलियापुच्छं छिन्नं पत्तेयपत्तं वा ॥ २६४ ॥ तह किर सबीअकाओ समोहओ होज्ज देहदेसऽवि । अच्छेज्ज किंचि कालं तो

२ (णाओ) ३ बीओ ४ मालाइं ५ ण बीज. ६ एमित्त ७ णहु ८ सजीवाण ९ जण्णाइनिव्विण्णे १० तह तह ११ णिहिणो ते गह.

For Private and Personal Use Only

पिट्ठाईणमग्गहणं ॥ २६५ ॥ पच्छित्तंपि य तुल्लं बहुसो बीअहरिओवरोहम्मि । दिण्णं ण य तं जुज्जइ जइ णिज्जीवाइं बीयाइं ॥ २६६ ॥ आह अणेगंतोऽयं पच्छित्तस मग्गणा सजीवम्मि[1] । जं[2] पलमज्जाईसुवि दीसइ पच्छित्तसाहम्मं ॥ २६७ ॥ भण्णइ मया य दोसा जह मज्जाईसु तह ण बीएसु । दीसंति केइ दोसा सजीवत्तं पमोत्तूणं ॥ २६८ ॥ अहव मई पच्छित्तं अणवत्थावारणत्थमेयंति । पिट्ठाईणं[3] गहणं ण होज्ज तो सव्वकालंपि ॥ २६९ ॥ होज्जा व काणिवि जइ तव सजीवाइंपि सुक्कबीयाइं । तो तप्परिहरणत्थं जुज्जेज्ज व सेसपरिहारो ॥ २७० ॥ जम्हा पुण सव्वाइं निज्जीवाइं च सुक्कबीयाइं । तेणाजुत्तं वज्जणमणवत्थावारणत्थं भो ! ॥ २७१ ॥ अहव मइ सुक्कबीए गेण्हंतो मा कयाइं णीलेऽवि । गेण्हेज्ज तंपि तो तप्पसंगविणिवारणमिणंति ॥ २७२ ॥ एवं तो सुक्काणं मूलाईणंपि जुत्तमग्गहणं । माऽइप्पसंगदोसा सज्जीवाइंपि गेण्हेज्जा ॥ २७३ ॥ को वाऽभिणिवेसो ते जेणच्छसि जिणमयं सतक्काए । ण य जुत्तं तक्काए सव्वण्णुमयं णिसेहेतुं ॥ २७४ ॥ आह फुडं चिय भणियं णणु पण्णवणापए विसेसेउं । जोणीमित्तं बीयं ण सजीवमिमाए गाहाए ॥ २७५ ॥ जोणिब्भूए बीए जीवो वक्कमइ सो अ अण्णो वा । जोऽवि य मूले जीवो सोऽवि अ पत्ते पढमयाए ॥ २७६ ॥ भण्णइ सइ जोणीए सच्चित्ताचित्तमीसभावम्मि । जइ जोणी सज्जीवं व होज्ज बीअत्ति को दोसो ? ॥२७७॥ सब्भावे सारिक्खे वसुंधराईसु जीवदेहत्ते । समईयसंभवाइसु भूअसद्दं बुहा बेंति ॥ २७८ ॥ जोणीब्भूयं बीयंति जमुत्तं तत्थ भूयसद्दोऽयं । जीवत्ते सारिक्खे सब्भावे वा समाउज्जो ! ॥ २७९ ॥ जोणिब्भूयं जस्स उ जोणीभूयंति जंति जीवत्ते । जोणी चेव सरूवं

---

१ मत्तेणि सजीवंत्तं. २ तं. ३ पिंडाईणं

For Private and Personal Use Only

जोणिब्भूयं तु वा बीअं ॥ २८० ॥ अफुडं लिंगत्ताओ जोणीसरिसात्ति वा सजीवंपि । ण उ जोणीमेत्तं चिय जोणीभूतं चयइ बीजं[1] ॥ २८१ ॥ जोणी विज्जइ जस्स उ जोणीभूयंति एस सब्भावो । जं भणियं निरुवहयं सजीवमियरं व होज्जाहि ॥ २८२ ॥ जंपि य सो वऽण्णो वा तस्सत्थोऽयं गुरूवएसेणं । सोत्ति स एवान्नोऽविय जीवो जो तत्थ सण्णिहिओ ॥२८३॥ जइ णाम किह व परिणयजीवं बीयं हवेज्ज तो अण्णो । निरुवहए उववज्जए पउट्टपरिहारसामत्था ॥ २८४ ॥ अहवा पच्चाविऊणं स एव जीवो पुणोऽवि तं बीयं[2] । पज्जविरोहणकाले एवंपि कयाइ होज्जा हि ॥ २८५ ॥ जं पुण णिज्जीवं चिय सुकबियं णिच्चमयमणेगंतो[3] । वासाइ सत्त भणियं जेणाऊ तेसिमुक्कोसं ॥ २८६ ॥ मूलं जीवो सो जेण बीअं देहं तयं[4] विणिम्मवियं । अण्णेण वा जेण तयं विरोहकाले परिग्गहिअं ॥ २८७ ॥ सो किर पढमे पत्ते[5] वच्चइ अण्णे य सो व सेसाइं । णिव्वत्तयंति मूलाइयाइं जीवा कमेणेत्र[6] ॥ २८८ ॥ णिरुवहयंपि हु वकंतजीविअं होज्ज किंचि बीयं तु । तं अइसइणो जुज्जइ णिज्जीवामिणंति णाउं जे ॥ २८९ ॥ अणइसइण पुणाइ णिरुवहयाइं हवंति बीआइं । ठिइकालब्भंतरतो घेतव्वाइं सजीवाइं ॥ २९० ॥ वकंतजीविया पत्थिवादओ संति ण य असत्थहया । जुत्तमजीवा णाउं जह णिरइसयस्स तह बीअं ॥ २९१ ॥ ४६ ॥

हत्थिणापुरि सोमप्पभपुत्तो सेज्जंस जाइसंभरणं । वसुधारदाणघोसण हवइ य पुप्फोघवासो अ ॥२९२॥ अमयकलसाभिसेओ रस्सिसमुद्धरणजुद्धसाहिज्जं । मंदररविपुरिसाणं सुविणं दिट्ठं तिहिं जणेहिं ॥ २९३ ॥ पडिलाभिए जिणवरे रायरिसीएत्ति जिण-

१ जोणीभूयं हवइ जम्हा २ चइयं ३ सुक्कबीयं निव्वसयमणे एगंते-णिच्चमणणय. ४ देयं ५ पढमं पत्तं ६ णेया ७ ०इसएण

For Private and Personal Use Only

वरसगासे । सेज्जंसो च्चिय साहइ अट्ठ भवे सामिणा समयं ॥ २९४ ॥ जंबुद्दीवुत्तरकुरुसण (सुर) दंसण मिहुण जाइसंभरणं । तह ईसाणसिरिप्पभविमाणललियंगओ देवो ॥ २९५ ॥ देवी सयप्पभाऽहं सुरज्जइ परिहाणि पुच्छणा कहणं । जंबुद्दीवे अहयं अवरविदेहे अहेसीय ॥ २९६ ॥ विजयम्मि गंधिलावइवेयड्ढे दाहिणिल्लसेढीए । गंधारजणवयम्मी गंधसमिद्धे पुरवरम्मि ॥ २९७ ॥ अइबलपुत्ता सयबलपुत्तो राया महाबलो णाम । संभिन्नसोयमंती सड्ढोऽमच्चो य संबुद्धो ॥ २९८ ॥ नट्टम्मि सयंबुद्धाववोहणं गीयविलइयाईहिं । रसभंग कोव संभिन्नसोय वाए जिओ सो य ॥ २९९ ॥ टिट्टिभि-रयणागर-काक-जंबु-इंगालदाहगाईहिं । अइबलसुरदंसणभद्दसालसंबोहसारणया ॥ ३०० ॥ हरियंददेवकुरुमई कुरुचंदामच्चदेवसंबोहो । नंदण अमिअजसामिअतेयकहणमासससाऊ ॥ ३०१ ॥ संवरण मरण देवो इहंति नंदीसरागमो चयणं । देवस्सई तुह मज्झवि जंबुद्दीवे विदेहम्मि ॥ ३०२ ॥ विजयम्मि पुक्खलावई नामे णयरीइ पुंडरगिणीए । णिववइरसेण गुणवइ धूयाऽहं सिरिमई जाया ॥ ३०३ ॥ जइकेवलदेवालोय जाइसंभरणमाणेव इच्छा । धाई पुच्छणकहणं धायइसंडम्मि पुव्वद्धे ॥ ३०४ ॥ णंदिअगामे णिण्णामियत्तहं मंगलावईविजए । अंबरतिलग युगंधर संवरण सुरवरागमणं ॥ ३०५ ॥ सणिआण मरण देवी सविमाण जुगंधराहिगमणं च । चयणमिहं चित्तपडो धाई णयणं णिअत्ता य ॥ ३०६ ॥ निवसमुदय णयणागम कहणं ध वयरजंघसंभरणं । णिवकहण जंबुदीवे सलिलावइवीयसोगाए ॥ ३०७ ॥ जियसत्तुमणोहरिकेकईण· अयलो विभीसणोऽवि सुया । णिवमरणदेविदिक्खा संगारा लंतगसुरोऽहं ॥ ३०८ ॥ निग्गम-

१ ०सणंमि मिहुणेण २ सुत्थणं ३ भत्ता ४ व ५ आइच्चजसामि० ६. इओ ७ ०त्ति अह

For Private and Personal Use Only

श्रीऋषिवर्धनसूरिकृता यमकमयी नेमिस्तुतिः

समुल्लसद्भक्तिसुराः सुरासुराधिराजपूज्यं जगदंगदं गदम् । हरंतमीहारहितं हि तं हितं, नेमिं स्तुवे रैवतके तकेतके ॥ १ ॥
बिभर्त्ति यस्य स्तवनेऽवनेऽवनेरीशे रसं यद्रसना स ना सना । सिद्धेर्भवन्नन्ववरोऽवरो वरः, ने० ॥ २ ॥
यशःपटस्य प्रभवे भवे भवेऽभवन् स्वभावप्रगुणा गुणा गुणाः । यस्यातिहर्षं सुजनं जनं जनं, ने० ॥ ३ ॥
जिगाय खेलिं तरसा रसा रसातिरेक जाग्रन्मदनन्दनन्दनम् । यो बाहुदंडं विनयं नयंनयं ने० ॥ ४ ॥
येनांगराजी भयतो यतो यतोऽवगत्य तत्त्वं दुरितारि तारिता । स कस्य नेष्टः सदयो दयोदयो ने० ॥ ५ ॥
सुरा अपि प्रोन्नतया तया तया, रूपस्य यस्या मुमुहुर्मुहुर्मुहुः । यस्योग्रजाताऽप्यजनीजनी जनी, ने० ॥ ६ ॥
भवेऽत्र नाऽऽभा नवमेऽवमेव मे, जहासि तत् किंवदऽमाद माऽदमा । यं स्मेति भोज्या सहसाहसाह सा ने० ॥ ७ ॥
वनेऽत्र दीक्षा जगृहे गृहे गृहे, स्थित्वाऽथ दत्त्वा कनकं न कं ? न कम् ? । संतोष्य येनाममताऽमताऽमता, ने० ॥ ८ ॥
धर्मस्य तत्त्वे भवतोऽवतो बतोद्यमो विधेयो जगदेऽगदे गदे । येनांगिनां संयमिनामिनामिना, ने० ॥ ९ ॥
शरीरशोभाऽतिघना घना घना प्रतापदीप्तिस्तरुणारुणारुणा । वाणी च यस्योल्लसिता सिता सिता ने० ॥ १० ॥
तर्कव्याकरणागमादिचतुर स्फूर्जत्सुधासारवाक्पूज्यश्रीयशकीर्तिगुरुणा ध्यानैकतानात्मना ।
सूरिश्रीऋषिवर्धनेन रचिता त्रैलोक्यचिन्तामणेः, श्रीनेमेर्यमकोज्ज्वला स्तुतिरियं देयात् सतां मंगलम् ॥ ११ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णभीसण मरणमयल संबोहणं व दिक्खा य। मरणसिरिप्पहललिअंगयत्तणं लंतगाणयणं ॥३०९॥ सत्तरसण्हयमेयणं अट्ठारसमो विणीयपुव्वोत्ति। दाणं पाणिग्गहणं पूइअलोहंग्गले णयणं ॥३१०॥ णिवलोगंतिअबोहणपुक्खलंसालाभिसेअसुयजम्मं। णरवइविरोह पेसण सरवण परिहरण णिव पडणं ॥ ३११ ॥ सक्कार गमण सरवण सागरसेणमुणिसणदाणं च। वेरग्गपुत्त वासघरजोग मरणं इहं जम्मं ॥ ३१२ ॥ सोहम्मगमण चयणं वत्थवइ पहंकराए दुण्हंपि। भिससेट्ठिसुअभयघोसकेसवाणं इमे मित्ता ॥ ३१३ ॥ णिवसेट्ठिसत्थवाहामच्चसुआ रोगमोअणा जइणो। सामण्णमच्चुअसुरा चयणं पुव्वे विदेहंमि ॥ ३१४ ॥ विजयम्मि पुक्खलावइ नामे नगरीए पुंडरगिणीए। जिणवइरसेणधारणिपुत्ता तो वइरणाभाई ॥ ३१५ ॥ अहयं च सारहिसुओ दिक्खा सव्वट्ठगमणमिह जम्मं। एयाइं अट्ठ जम्माइं आसि अहं सामिणा समयं ॥ ३१६ ॥ तिण्हवि सुमिणाण फलं एयं भणियं गुणित्तिय गुरुस्स। रयणमयमाइपेढं कालेणाइच्चपेढंति ॥ ३१७ ॥ ग्रन्थाग्रम् ३८० ॥

॥ इति विशेषणवती सम्पूर्णा। कृतिराचार्यशिरोमणेर्जिनभद्रगणिक्षमाश्रमणस्य ॥

१ ण्हं संघनय २ पूअण, हग्गलं णयणा ३ बोहणफल, ४, मुत्तवासे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमद्धरिभद्रसूरिवर्यनिर्मिता विंशतिः विंशिकाः—

नमिऊण वीयरायं सव्वन्नुं तियसनाहकयपूयं । जहनायवत्थुवाइं सिद्धं सिद्धालयं वीरं ॥ १ ॥ वुच्छं केइ पयत्थे लोगिग-लोगुत्तरे समासेण । लोगागमाणुसारा मंदमइविबोहणट्ठाए ॥ २ ॥ सुंदरमिइ अन्नेहिवि भणियं चक य च किंचि वत्थुंति । अन्नेहिंवि भणियव्वं कायव्वं चेति मग्गोऽयं ॥३॥ इहरा उ कुसलभणिईण चिट्ठियाणं च इत्थ वुच्छेओ । एवं खलु धम्मोऽवि हु सव्वेण कओ ण कायव्वो ॥४॥ अन्ने आसायणाओ महाणुभावाण पुरिससीहाण । तम्हा सत्तऽणुरूवं पुरिसेण हिए पयइयव्वं ॥ ५ ॥ तेसिं बहुमाणाओ ससत्तिओ कुसलसेवणाओ य । जुत्तमिणं आसेवियगुरुकुलपरिदिट्ठसमयाणं ॥ ६ ॥ जत्तो उद्धारो खलु अहिगाराणं सुयाओ ण उ तस्स । इय वुच्छेओ तद्देसदंसणा कोउगपवित्ती ॥ ७ ॥ इक्को उण इह दोसो जं जायइ खलजणस्स पीडत्ति । तहवि पयट्टो इत्थं दट्ठुं सुयणाण मइतोसं ॥ ८ ॥ तत्तोविय जं कुसलं तत्तो तेसिंपि होहिइ ण पीडा । सुद्धासया पवत्ती सत्थे निद्दोसिया भणिया ॥ ९ ॥ इहरा छउमत्थेणं पढमं न कयाइ कुसलमग्गम्मि । इत्थं पयट्टियव्वं सम्मंति कयं पसंगेण ॥ १० ॥ अहिगारसूयणा खलु १ लोगाणादित्तमेव बोद्धव्वं २। कुलनीइलोगधम्मा २ सुद्धोऽवि य चरमपरियट्टो ४ ॥ ११ ॥ तब्बीजाइकमोऽविय ५ तं पुण सम्मत्तमेव विन्नेओ ६। दाणविही य तओ खलु ७ परमो पूयाविही चेव ८ ॥ १२ ॥ सावगधम्मो य तओ ९ तप्पडिमाओ य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुंति बोद्धव्वा १०। जइधम्मो इत्तो पुण ११ दुविहा सिक्खा य एयस्स १२ ॥ १३ ॥ भिक्खाइविही सुद्धो १३ तयंतराया असुद्धि-
लिंगता १४। आलोयणाविहाणं १५ पच्छित्ता सुद्धिभावो य १६ ॥ १४ ॥ तत्तो जोगविहाणं १७ केवलनाणं च सुपरिसुद्धंति १८।
सिद्धविभत्ती य तहा १९ तेसिं परमं सुहं चेव २० ॥ १५ ॥ एए इहाहिगारा वीसं वीसाहिं चेव गाहाहिं। फुडवियडपायडत्था नेया
पत्तेय पत्तेयं ॥ १६ ॥ एए सोऊण बुहो परिभावंतो उ तंतजुत्तीए । पाएण सुद्धबुद्धी जायइ सुत्तस्स जोगुत्ती ॥ १७ ॥ मज्झ-
त्थयाइ नियमा सुबुद्धिजोएण अत्थियाए य । नज्जइ तत्तविसेसो न अन्नहा इत्थ जइयव्वं ॥ १८ ॥ गुणगुरुसेवा सम्मं विणओ
तेसिं तदत्थकरणं च । साहूणमणाहाण य सत्तणुरूवं निओगेणं ॥ १९ ॥ भव्वस्स चरमपरियट्टवत्तिणो पायणं [णिणो] परं एयं ।
एसोऽवि य लक्खिज्जइ भवविरहफलो इमेणं तु ॥ २० ॥ **इति प्रथमाऽधिकारविंशिका समाप्ता १ ॥**

पंचत्थिकायमइओ अणाइमं वट्टए इमो लोगो । न परमपुरिसाइकओ पमाणमित्थं च वयणं तु ॥ १ ॥ धम्माधम्मागासा
गइठिइअवगाहलक्खणा एए । जीवा उवओगजुया मुत्ता पुण पुग्गला णेया ॥२॥ एए अणाइनिहणा तहा तहा नियसहावओ नवरं ।
वट्टंति कज्जकारणभावेण भवे ण परसरूवे ॥ ३ ॥ नवि य अभावो जायइ तस्संत्तीए य नियमविरहाओ । एवमणाई एए तहा
तहा परिणइसहावा ॥ ४ ॥ इत्तो उ आइमत्तं तहासहावत्तकप्पणाएवि । एसिमजुत्तं पुव्विं अभावओ भावियव्वमिणं ॥ ५ ॥
नो परमपुरिसपहवा पओयणाभावओ १ दलाभावा २ । तत्तस्सहावयाए तस्सव तेसिं अणाइत्तं ॥ ६ ॥ न सदेवयऽस्स भावो
को इह हेऊ ? तहासहावत्तं । हंताभावगयमिणं को दोसो ? तस्सहावत्तं ॥ ७ ॥ सो भावऽभावकारणसहावभयवं हविज्ज नेयंपि ।
सव्वाहिलसियसिद्धीओ अन्नहा भत्तिमंतं तु ॥ ८ ॥ धम्माधम्मनिमित्तं नवरमिहं हंत होइ एसोऽवि । इहरा उ थयकोसाइ सव्व-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेयम्मि विहलं तु ॥ ९ ॥ न य तस्सवि गुणदोसा अप्पासयनिमित्तभावओ हुंति । तम्मयचेयणकप्पो तहासहावो खु सो भयवं ॥ १० ॥ रयणाई सुहरहिया सुहाइहेऊ जहेव जीवाणं । तह धम्माइनिमित्तं एसो धम्माइरहिओऽवि ॥ ११ ॥ एसो अणाइमं चिय सुद्धो य तओ अणाइसुद्धुत्ति । जुत्तो य पवाहेणं न अन्नहा सुद्धया सम्मं ॥१२॥ बंधोऽविहु एवंचिय अणाइमं होइ हंत कयगोवि । इहरा उ अकयगत्तं निच्चत्तं चेव एयस्स ॥१३॥ जह भव्वत्तमकयगं नय निच्चं एव किं न बंधोऽवि ? । किरियाफलजोगो जं एसो ता न खलु एवंति ॥ १४ ॥ भव्वत्तं पुणमकयगमणिच्चमो चेव तहसहावाओ । जह कयगोऽविहु मुक्खो निच्चोऽविय भाववइचित्तं ॥ १५ ॥ एवं चेव य दिक्खा भवबीजं वासणा अविज्जा य । सहजमलसद्दवच्चं वन्निज्जइ मुक्खवाईहिं ॥ १६ ॥ एयं पुण तह कम्मेयराणुसम्बन्धजोगयारूवं । एतदभावे णायं सिद्धाणाभावणागम्मं ॥ १७ ॥ इय असदेवाणाइयमंग्गे तम आसि एवमाईवि । भेयगविरहे वइचित्तजोगओ होइ पडिसिद्धं ॥ १८ ॥ भेयगविरहे तस्सेव तस्सभावत्तकप्पणमजुत्तं । जम्हा सावहिगामिणं नीई अवही य णाभावो ॥ १९ ॥ इय तन्तजुत्तिसिद्धो अणाइमं एस हंदि लोगुत्ति । इहरा इमस्सऽभावो पावइ परिचिंतियव्वमिणं ॥ २० ॥ इति अनादिविंशतिका द्वितीया २ ॥

इत्थ कुलनीइधम्मा पाएण विसिट्ठलोगमहिकिच्च । आवेणिगाइरूवा विचित्तसत्थोइया चेव ॥ १ ॥ जे वेणिसंपयाया चित्ता सत्थेसु अपडिबद्धात्ति । ते तम्मज्जायाए सव्वे आवेणिया नेया ॥ २ ॥ जह संझाए दीवयदाणं सत्थं रविम्मि विद्धत्थे । सुद्धग्गिणो अदाणं च तस्स अभिसत्थपाडियाणं ॥३॥ नक्खत्तमंडलस्स य पूजा नक्खत्तदेवयाणं च । गोसे सविसरणाइ य धन्नाणं वंदणा चेव ॥ ४ ॥ गिहदेवयाइसरणं वामंगुट्ठयनिवीडणा चेव । असिलिट्ठदंसणम्मी तहा सिलिट्ठे य सिरिहत्थो ॥ ५ ॥ बालाणं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुन्ननिरूवणाइ चित्तप्पहेणगाईहिं । सत्थंतरेहिं कालाइभेयओ वयविभागेणं ॥ ६ ॥ तप्परिभोगेण तहाघाणे परदाणजातजुत्तेण । चित्तविणिओगविसया डिंभपरिच्छा य चित्तत्ति ॥ ७ ॥ वीवाहकोउगेहिं रइसंगसमत्तमद्दणाईहिं । धूवाणं पुन्ननिरूवणं च विविहप्प-ओगेहिं ॥ ८ ॥ भोगे भावट्ठवणं भावणाराहणं च दइयस्स । मलपुरिसुज्झ अणुद्धरिमंतेणं सीलरक्खा य ॥ ९ ॥ ण्हायपरिस्माजल-मुत्तपीलणं वसणदंसणच्चाओ । वेलासुअथवणाई थीणं आवेणिगो धम्मो ॥ १० ॥ सत्थभणिया य अन्ने वन्नासमधम्मभेयओ नेया । वन्ना उ बंभणाई तहासमा बंभचेराई ॥ ११ ॥ एए ससत्थसिद्धा धम्मा जयणाइभेयओ चित्ता । अब्भुदयफला सव्वे विवागविरसा य भावेणं ॥ १२ ॥ पयईसावज्जाविहु तहावि अब्भुदयसाहणं नेया । जह धम्मसालिगाणं हिंसाइ तहऽत्थ-हेउत्ति ॥ १३ ॥ मोहपहाणे एए वेरग्गंपि य इमेसि पाएण । तग्गब्भंचिय नेयं मिच्छाभिनिवेसभावाओ ॥ १४ ॥ अन्नेसि तत्तचिंता देसाणाभोगओ य अन्नेसिं । दीसंति य जइणोऽवित्थ केइ संमुच्छिमप्पाया ॥ १५ ॥ अन्ने उ लोगधम्मा पहुया देसाइभेय-ओ हुंति । वारिज्जसोयसूयगविसया आयारभेएण ॥१६॥ कुलधम्माउ अपेया सुरा हि केसिंचि पाणगाणंपि । इत्थियणमुज्झियव्वा तेणाणज्जविह इमा मेरा ॥ १७ ॥ गणगुड्डिघडापेडगजल्लाईणं च जे इहायारा । पाणापडिसेहाई ते तह धम्मा मुणेयव्वा ॥ १८ ॥ सव्वेवि वेयधम्मा निस्सेयससाहगा न नियमेण । आसयभेएणऽन्ने परंपराए तयत्थंति ॥ १९ ॥ विसयसरूवऽणुबंधेण होइ सुद्धो तिहा इहं धम्मो । जं ता मुक्खसयाओ सव्वो किल सुंदरो नेओ ॥ २० ॥ **इति कुलनातिधर्मनाम्नी विंशिका तृतीया ३ ॥**

निच्छयओ पुण एसो जायइ नियमेण चरमपरियट्टे । तहभव्वत्तमलक्खयभावा अच्चंतसुद्धुत्ति ॥ १ ॥ मुक्खासओवि नन्नत्थ होइ गुरुभावमलपहावेण । जह गुरुवाहिविगारे न जाउ पत्थासओ सम्मं ॥ २ ॥ परियट्टा उ अणंता हुंति अणाइम्मि इत्थ संसारे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तप्पुग्गलाणमेव य तहा २ हुंति गहणाओ ॥ ३ ॥ तह तग्गज्झसहावा जइ पुग्गलमो हवंति नियमेण । तह तग्गहणसहावो आया य तओ उ परियट्टा ॥ ४ ॥ एवं चरमोऽवेसो नीईए जुज्जई इहरहा उ । तत्तस्सहावखयवज्जिओ इमो किं न सव्वोऽवि ? ॥ ५ ॥ तत्तग्गहणसहावो आयगओ इत्थ सत्थगारेहिं । सहजो मलुत्ति भण्णइ भव्वत्तं तक्खओ एसो ॥ ६ ॥ एयस्स परिक्खयओ तहा २ हंत किंचि सेसम्मि । जायइ चरिमो एसुत्ति तंतजुत्तिप्पमाणमिह ॥ ७ ॥ एयम्मि सहजमलभावविगमओ सुद्धधम्मसंपत्ती । हेतेयरातिभावे जं न मुणइ अन्नहिं जीवो ॥८॥ भमणकिरियाहियाए सत्तीएँ समण्णिओ जहा बालो । पासइ थिरेऽवि उ चले भावे जा धरइ सा सत्ती ॥ ९ ॥ तह संसारपरिब्भमणसत्तिजुत्तोऽवि नियमओ चेव । हेएवि उवाएए ता पासइ जाव सा सत्ती ॥ १० ॥ जह तस्सत्तीविगमे पासइ पढमो थिरे थिरे चेव । बीओवि उवाएए तह तव्विगमे उवाएए ॥ ११ ॥ तस्सत्तीविगमो पुण जायइ कालेण चेव नियएण । तहभव्वत्ताइ तदन्नहेउकलिएण व कहिंचि॥१२॥ इय पाहन्नं नेयं इत्थं कालस्स तओ २(तत्तओ) चेव । तस्सत्ति-विगमहेऊ साविं जओ तस्सहावत्ति ॥ १३ ॥ कालो सहाव नियई पुव्वकयं पुरिसकारणेगंता । मिच्छत्तं ते चेव उ समासओ [illegible] सम्मत्तं ॥ १४ ॥ नायमिह मुग्गपत्ती समयपसिद्धावि भावियव्वंत्ति । सव्वसुवि सिद्धत्तं इयरेयरभावसाविक्खं [illegible] तेह भव्वत्तक्खित्तो जह कालो तह इमंति तेणंति । इय अन्नुन्नाविक्खं रूवं सव्वेसि हेऊण ॥ १६ ॥ न य सव्वहेउतु[illegible] भव्वत्तं हंदि सव्वजीवाणं । जं तेणवक्खित्ता तो तुल्ला दंसणाईया ॥ १७ ॥ न इमो इमेसि हेऊ न य णातुल्ला इमेण एयंपि । हेऊसि [illegible] ता तहभावं इमं नेयं ॥१८॥ अचरिमपरियट्टेसुं कालो भवबालकालमो भणिओ । चरिमो उ धम्मजुव्वणकालो तह चित्तभेउत्ति ॥१९॥ एयम्मि धम्मरागो जायइ भव्वस्स तस्सभावाओ । इत्तो य कीरमाणो होइ इमो हंत सुद्धुत्ति ॥२०॥ इति चरिमपरियट्टविंशिका ।

For Private and Personal Use Only

बीजाइकमेण पुणो जायइ एसुत्थ भव्वसत्ताण। नियमा ण अन्नहावि उ इट्ठफलो कप्परुक्खुव्व ॥ १ ॥ बीजंविमस्स णेयं दट्ठूणं एयकारिणो जीवे। बहुमाणसंगयाए सुद्धपसंसाइ करणिच्छा ॥ २ ॥ तीए चेवऽणुबन्धो अकलंको अंकुरो इहं नेओ। कट्ठं पुण विन्नेया तदुवायन्नेसणा चित्ता ॥ ३ ॥ तेसु पवित्ती य तहा चित्ता पत्ताइसरिसिगा होइ। तस्संपत्तीइ पुप्फं गुरुसं-जोगाइरूवं तु ॥ ४ ॥ तत्तो सुदेसणाईहिं होइ जा भावधम्मसंपत्ती। तंफलमिह विन्नेयं परमफलपसाहगं नियमा ॥५" बीजस्सवि संपत्ती जायइ चरिमंमि चेव परियट्टे। अच्चंतसुंदरा जं एसावि तओ न सेसेसु ॥ ६ ॥ न य एयम्मि अणंतो जुज्जइ नेयस्स नाम कालुत्ति। ओसप्पिणी अणंता हुंति जओ एगपरियट्टे ॥७॥ बीजाइया य एए तहा तहा संतरेयरा नेया। तहभव्वत्तक्खित्ता एगंत-सहावऽबाहाए ॥ ८ ॥ तहभव्वत्तं जं कालनियइपुव्वकयपुरिसकिरियाओ। अक्खिवइ तहसहावं ता तद्धीणं तयंपि भवे ॥ ९ ॥ एवं जेणेव जहा होयव्वं तं तहेव होइत्ति। नय दिव्वपुरिसगारावि हंदि एवं विरुज्झंति ॥ १० ॥ जो दिव्वेणक्खित्तो तहा तहा हंत पुरिसगारुत्ति। तत्तो फलमुभयजमवि भण्णइ खलु पुरिसगाराओ ॥ ११ ॥ एएण मीसपरिणामिए उ जं तम्मि तं च दुगजण्णं। दिव्वाउ नवरि भण्णइ निच्छयओ उभयजं सव्वं ॥ १२ ॥ इहराऽणक्खित्तो सो होइत्ति अहेउओ निओएण। इत्तो तदपरिणामो किंचि तम्मत्तजं न तया ॥ १३ ॥ पुव्वकयं कम्मं चिय चित्तविवागमिह भन्नई दिव्वो। कालाइएहिं तप्पायणं तु तह पुरिसगारुत्ति ॥ १४ ॥ इय समयनीइजोगा इयरेयरसंगया उ जुज्जंति। इह दिव्वपुरिसगारा पहाणगुणभावओ दोऽवि ॥ १५ ॥ ता बीज-पुव्वकालो नेओ भवबालकाल एवेह। इयरो उ धम्मजुव्वणकालोऽविह लिंगगम्मुत्ति ॥ १६ ॥ पढमे इह पाहन्नं कालस्सियरम्मि चित्तजोगाणं। वाहिस्सुदयचिकिच्छासमयसमं होइ नायव्वं ॥ १७ ॥ बालस्स धूलिगेहातिरमणकिरिया जहा परा भाइ। भवबा-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लस्सवि तस्सत्तिजोगओ तह असक्किरिया ॥ १८ ॥ जुव्वणजुत्तस्स उ भोगरागओ सा न किंची जह चेव। एमेव धम्मरागा सक्किरिया धम्मजूणोवि ॥ १९ ॥ इय बीजाइकमेणं जायइ जीवाण सुद्धधम्मुत्ति । जह चंदणस्स गंधो तह एसो तत्तओ चेव ॥ २० ॥

इति बीजादिविंशिका पंचमी ॥ ५ ॥

एसो पुण सम्मत्तं सुहायपरिणामरूवमेवं च। अप्पुव्वकरणसज्झं चरमुक्कोसट्ठिईखवणे ॥१॥ कम्माणि अट्ठ नाणावरणिज्जाईणि हुंति जीवस्स । तेसिं च ठिई भणिया उक्कोसेणेह समयम्मि ॥ २ ॥ आइल्लाणं तिण्हं चरिमस्स य तीसकोडकोडीओ । होइ ठिई उक्कोसा अयराणं सतिकडा चेव ।३॥ सयरिं तु चउत्थस्सा वीसं तह छट्ठसत्तमाणं च । तित्तीस सागराइं पंचमगस्सावि विन्नेया ॥ ४ ॥ अट्ठण्हं पयडीणं उक्कोसठिईए वट्टमाणो उ । जीवो न लहइ एयं जेण किलिट्ठासओ भावो ॥५॥ सत्तण्हं पयडीणं अब्भिंतरओ उ कोडकोडीए । पाउणइ नवरमेयं अपुव्वकरणेण कोई तु ॥ ६ ॥ करणं अहापवत्तं अपुव्वमणियट्टिमेव भव्वाणं । इयरेसिं पढमं चिय भण्णइ करणंति परिणामो ॥ ७ ॥ जा गंठिं ता पढमं गंठि समइच्छओ भवे बीयं । अणियट्टी करणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ ८ ॥ इत्थ य परिणामो खलु जीवस्स सुहो य होइ विन्नेओ । किं मलकलंकमुक्कं कणगं भुवि झामलं होइ ? ॥ ९ ॥ पयईय व कम्माणं वियाणिउं वा विवागमसुहंति । अवरद्धेवि न कुप्पइ उवसमओ सव्वकालंपि ॥ १० ॥ नरविबुहेसरसुक्खं दुक्खं चिय भावओ उ मन्नंतो । संवेगओ न मुक्खं मुत्तूणं किंपि पत्थेई ॥ ११ ॥ दट्ठूण पाणिनिवहं भीमे भवसागरम्मि दुक्खत्तं । अविसेसओऽणुकंपं दुहावि सामत्थओ कुणइ ॥ १२ ॥ नारयतिरियनरामरभवेसु निव्वेयओ वसइ दुक्खं । अकयपरलोयमग्गो ममत्तविस-

For Private and Personal Use Only

वेगरहिओवि ॥ १३ ॥ मन्नइ तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पण्णत्तं । सुहपरिणामो सच्चं कंखाइविसुत्तियारहिओ ॥ १४ ॥ एवंविहो य एसो तहा खओवसमभावओ होइ । नियमेण खीणवाही नरुव्व तव्वेयणारहिओ ॥ १५ ॥ पढमाणुदयाभावो एयस्स जओ भवे कसायाणं । ता कहमेसो एवं ? भन्नइ तव्विसयविक्खाए ॥ १६ ॥ निच्छयसम्मत्तं वाऽहिकिच्च सुत्तभणिय निउणरूवं तु । एवंविहो निओगो होइ इमो हंत वच्चुत्ति ॥ १७ ॥ पच्छाणुपुव्विओ पुण गुणाणमेएसि होइ लाहकमो । पाहन्नओ उ एवं विन्नेओ सिं उवन्नासो ॥ १८ ॥ एसो उ भावधम्मो धारेइ भवन्नवे विवडमाणं । जम्हा जीवं नियमा अन्नो उ भवं(तयं)गभावेणं ॥ १९ ॥ दाणाइया उ एयंमि चेव सुद्धा उ हुंति किरियाओ । एयाओविहु जम्हा मुक्खफलाओ पराओ य ॥ २० ॥ इति सद्धर्म्म-विंशिका षष्ठी ।

दाणं च होइ तिविहं नाणाभयधम्मुवग्गहकरं च । इत्थ पढमं पसत्थं विहिणा जुग्गाण धम्मम्मि ॥ १ ॥ सेवियगुरुकुलवासो विसुद्धवयणोऽणुमन्निओ गुरुणा । सव्वत्थ णिच्छियमई दाया नाणस्स विन्नेओ ॥२॥ सुस्सूसासंजुत्तो विन्नेओ गाहगोवि एयस्स । न सिराऽभावे खणणाउ चेव कूवे जलं होइ ॥ ३ ॥ ओहेणवि उवएसो आयरिएणं विभागसो देओ । सामाइधम्मजणओ महुरगिराए विणीयस्स ॥४॥ अविणीयमाणवंतो किलिस्सई भासई मुसं चेव । नाउं घंटालोहं को किर (कड) करणे पवत्तिज्जा? ॥५॥ विन्नेयमभयदाणं परमं मणवयणकायजोगेहिं । जीवाणमभयकरणं सव्वेसिं सव्वहा सम्मं ॥ ६ ॥ उत्तममेयं जम्हा तम्हा णाणुत्तमो तरइ दाउं । अणुपालिउं च दिन्नंपि हंति समभावदारिद्दे ॥ ७ ॥ जिणवयणनाणजोगेण तक्कुलठिईसमासिएणं च । विन्नेयमुत्तमत्तं न अन्नहा इत्थ अहिगारे ॥ ८ ॥ दाऊणेयं जो पुण आरंभाइसु पवत्तए मूढो । भावदरिद्दो नियमा दूरे सो दाणधम्माणं ॥ ९ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इहपरलोगेसु भयं जेण न संजायए कयाइयवि । जीवाणं तक्कारी जो सो दाया उ एयस्स ॥ १० ॥ इय देसओवि दाया इमस्स एयारिसो तहिं विसए । इहरा दिन्नुद्दालणपायं एयस्स दाणंति ॥ ११ ॥ नाणदयाणं खंतीविरईकिरियाइ तं तओ देइ । अन्नो दरिद्दपडिसेहवयणतुल्लो भवे दाया ॥ १२ ॥ एवमिहेयं पवरं सव्वेसिं चेव होइ दाणाणं। इत्तो उ निओगेणं एयस्सवि ईसरो दाया ॥ १३ ॥ इय धम्मुवग्गहकरं दाणं असणाइगोयरं तं च। पत्थमिव अन्नकाले अरोगिणो उत्तमं नेयं ॥ १४ ॥ सद्धासक्कारजुयं सक्कमेण तहोचियम्मि कालम्मि । अन्नाणुवघाएणं वयणा एवं सुपरिसुद्धं ॥ १५ ॥ गुरुणाऽणुन्नायभरो नाओवज्जियधणो य एयस्स । दाया अदुत्थपरियणवग्गो सम्मं दयालू य ॥ १६ ॥ अणुकंपादाणंपि य अणुकंपागोयरेसु सत्तेसु । जायइ धम्मोवग्गह-हेऊ करुणापहाणस्स ॥१७॥ ता एयंपि पसत्थं तित्थयरेणावि भयवया गिहिणा । सयमाइन्नं दियदेवदूसदाणेणऽगिहिणावि ॥१८॥ धम्मस्साइपयमिणं जम्हा सीलं इमस्स पज्जंते । तव्विरयस्सावि जओ नियमा सानिवेयणा गुरुणो ॥ १९ ॥ तम्हा सत्तऽणुरूवं अणुकंपासंगएण भव्वेणं । अणुचिट्ठियव्वमेयं इत्तोच्चिय सेसगुणसिद्धी ॥ २० ॥ **इति दानविंशिका सप्तमी ॥**

पूया देवस्स दुहा विन्नेया दव्वभावभेएणं । इयरेयरजुत्ताविहु तत्तेण पहाणगुणभावा ॥१॥ पढम गिहिणो साऽवि य तहा तहा भावभेयओ तिविहा । कायवयमणविसुद्धी सम्भूओगरणपरिभेया ॥ २ ॥ सव्वगुणाहिगविसया नियमुत्तमवत्थुदाणपरिओसा । कायकिरियापहाणा समंतभद्दा पढमपूया ॥ ३ ॥ बीया उ सव्वमंगलनामा वायकिरियापहाणेसा । पुव्वुत्तविसयवत्थुसु ओचित्ताणयणभेएण ॥ ४ ॥ तइया परतत्तगया सव्वुत्तमवत्थुमाणसानिओगा । सुद्धमणजोगसारा विन्नेया सव्वसिद्धिफला ॥ ५ ॥ पढमा-बंधकजोगा सम्मद्दिट्ठिस्स होइ पढमत्ति । इयरेयरजोगेणं उत्तरगुणधारिणो नेया ॥ ६ ॥ तइया तइयाबंधकजोगेणं परमसावगस्सेवं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोगा य समाहीहिं साहुजुगकिरियफलकरणा ॥ ७ ॥ पढमकरणभेएणं गंथासन्नस्स धम्ममित्तफला । सा हुज्जुगाइभावो जायइ
तह नाणुबंधुत्ति ॥ ८ ॥ भवठिइभंगो एसो तह य महापहविसोहणो परमो । नियविरियसमुल्लासो जायइ संपत्तबीयस्स ॥ ९ ॥
संलग्गमाणसमओ धम्मट्ठाणंपि बिंति समयण्णू । अवगारिणोऽवि इत्थट्ठसाहणाओ य सम्मंति ॥ १० ॥ पंचट्ठसव्वभेओवयार-
जुत्ता य होइ एसत्ति । जिणचउवीसाजोगोवयारसंपत्तिरूवा य ॥ ११ ॥ सुद्धं चेव निमित्तं दव्वं भावेण सोहियव्वंति । इय
एगंतविसुद्धो जायइ एसा तहिट्ठफला ॥ १२ ॥ सयकारियाइ एसा जायइ ठवणाइ बहुफला केई । गुरुकारियाइ अन्ने विसिट्ठ-
विहिकारियाए य ॥ १३ ॥ थंडिल्लेऽवि य एसा मणठवणाए पसत्थिगा चेव । आगासगोमयाईहिं इत्थमुल्लेवणाइ हियं ॥ १४ ॥
उवयारंगा इह सोवओगसाहारणाण इट्ठफला । किंचि विसेसेण तओ सव्वे ते विभइयव्वत्ति ॥ १५ ॥ एवं कुणमाणाणं एया
दुरियक्खओ इहं जम्मो । परलोगम्मि य गोरवभोगा परमं च निव्वाणं ॥ १६ ॥ इक्कंपि उदगबिंदू जह पक्खित्तं महासमुद्दम्मि ।
जायइ अक्खयमेयं पूयावि जिणेसु विन्नेया ॥ १७ ॥ अक्खयभावे भावो मिलिओ तब्भावसाहगो नियमा । न हु तंबं रसविद्धं
पुणोवि तंबत्तणमुवेइ ॥ १८ ॥ तम्हा जिणाण पूया बुहेण सव्वायरेण कायव्वा । परमं तरंडमेसा जम्हा संसारजलहिम्मि ॥ १९ ॥
एवमिह दव्वपूया लेसुद्देसेण दंसिया समया । इयरा जईण पाओ जोगहिगारे तयं वुच्छं ॥२०॥ इति पूजाविधिविंशिका ८

धम्मोवग्गहदाणाइसंगओ सावगो परो होइ । भावेण सुद्धचित्तो निच्चं जिणवयणसवणरई ॥ १ ॥ मग्गणुसारी सड्ढो पन्न-
वणिज्जो कियापरो चेव । गुणरागी सक्कारंभसंगओ देसचारित्ती ॥२॥ पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं च हुंति तिन्नेव । सिक्खावयाइं
चउरो सावगधम्मो दुवालसहा ॥ ३ ॥ एसो य सुप्पसिद्धो सद्दाइयारेहिं इत्थ तंतम्मि । कुसलपरिणामरूवो नवरं सइ अंतरो नेओ

For Private and Personal Use Only

॥ ४ ॥ सम्मा पलियपुहुत्तेऽवगए कम्माण एस होइत्ति । सोऽवि खलु अवगमो इह विहिगहणाईहिं होइ जहा ॥ ५ ॥ गुरुमूले सुयधम्मो संविग्गो इत्तरं व इयरं वा । गिण्हइ वयाइं कोई पालइ य तहा निरइयारं ॥ ६ ॥ एसो ठिइओ इत्थं न उ गहणादेव जायई नियमा । गहणोवरिंपि जायइ जाओऽवि अवेइ कम्मुदया ॥ ७ ॥ तित्थंकरभत्तीए सुसाहुजणपज्जुवासणाए य । उत्तर-गुणसद्धाए इत्थ सया होइ जइयव्वं ॥ ८ ॥ तम्हा निच्चसईए बहुमाणेणं च अहिगयगुणंमि । पडिवक्खदुगुंछाए परिणइयालोयणेणं च ॥ ९ ॥ एवमसंतोऽवि इमो जायइ जाओऽवि न पडइ कयाइ । ता इत्थं बुद्धिमया अपमाओ होइ कायव्वो ॥ १० ॥ निवसिज्ज तत्थ सड्ढो साहूणं जत्थ होइ संपाओ । चेइयघरा उ जहियं तदन्नसाहम्मिया चेव ॥ ११ ॥ नवकारेण विबोहो अणुसरणं सावओ वयाइं मे । जोगो चिइवंदणमो पच्चक्खाणं तु विहिपुव्वं ॥ १२ ॥ तह चेईहरगमणं सक्कारो वंदणं गुरुसगासे । पच्चक्खाणं सवणं जइपुच्छा उचियकरणिज्जं ॥ १३ ॥ अविरुद्धो ववहारो काले विहिभोयणं च संवरणं । चेइहरागमसवणं सक्कारे वंदणाई य ॥ १४ ॥ जइविस्सामणमुचिओ जोगो नवकारचिंतणाईओ । गिहिगमणं विहिसुवणं सरणं गुरुदेवयाईणं ॥ १५ ॥ अब्बंभे पुण विरई मोहदुगुंछा सतत्तचिंता य । इत्थीकलेवराणं तव्विरएसुं च बहुमाणो ॥ १६ ॥ सुत्तविउद्धस्स पुणो सुहुमपयत्थेसु चित्तविन्नासो । भवठिइनिरूवणे या अहिगरणोवसमचित्ते वा ॥ १७ ॥ आउयपरिहाणीए असमंजसचिट्ठियाण व विवागे । खणलाभदीवणाए धम्मगुणेसु च विविहेसु ॥१८॥ बाहगदोसविवक्खे धम्मायरिए य उज्जुयविहारे । एमाइ चित्तनासो संवेगरसायणं देयं ॥१९॥ गोसे भणिओ य विही इय अणवरयं तु चिट्ठमाणस्स । पडिमाकमेण जायइ संपुन्नो चरणपरिणामो ॥२०॥ इति श्रावकधर्मविंशिका ९

दंसण १ वय २ सामाइय ३ पोसह ४ पडिमा ५ अबंभ ६ सच्चित्त ७ । आरंभ ८ पेस ९ उद्दिट्ठवज्जए १० समणभूए ११

For Private and Personal Use Only

य ॥ १ ॥ एया खलु इक्कारस गुणठाणगभेयओ मुणेयव्वा । समणोवासगपडिमा बज्झाणुट्ठाणलिंगेहिं ॥ २ ॥ सुस्सूसाई जम्हा दंसणपमुहाण कज्जसूयत्ति । कायकिरियाइ सम्मं लक्खिज्जइ ओहओ पडिमा ॥ ३ ॥ सुस्सूस धम्मराओ गुरुदेवाणं जहासमाहीए। वेयावच्चे नियमो दंसणपडिमा भवे एसा ॥ ४ ॥ पंचाणुव्वयधारित्तमणइयारं वएसु पडिबंधो । वयणा तदणइयारा वयपडिमा सुप्पसिद्धत्ति ॥ ५ ॥ तह अत्तवीरिउल्लासजोगओ रयतसुद्धिदित्तिसमं । सामइयकरणमसई सम्मं सामाइयप्पडिमा ॥ ११ ॥ पोसह-किरियाकरणं पंचसु पव्वेसु तहा सुपरिसुद्धं । जइभावभावसाहगमणघं तह पोसहप्पडिमा ॥ ६ ॥ पव्वेसु चेव राइं असिणाणाइ-किरियासमाजुत्तो । मासपणगावहि तहा पडिमाकरणं तु तप्पाडिमा ॥ १२ ॥ असिणाण वियडभोई मउलियडो रत्तिबंभमाणेण । पडिवक्खमंतजावाइसंगओ चेव सा किरिया ॥ ७ ॥ एवं किरियाजुत्तोऽबंभं वज्जेइ नवर राईंपि । छम्मासावहि नियमा एसा उ अबंभपडिमत्ति ॥ ८ ॥ जावज्जीवाएऽवि हु एसाऽबंभस्स वज्जणा होइ । एवंचिय जं चित्तो सावगधम्मो बहुपगारो ॥ ९ ॥ एवं-विहो उ नवरं सच्चित्तंपि परिवज्जए सव्वं । सत्त य मासे नियमा फासुयभोगेण तप्पाडिमा ॥ १० ॥ जावज्जीवाएवि हु एसा सच्चित्तवज्जणा होइ । एवं चिय जं चित्तो सावगधम्मो बहुपगारो ॥ १३ ॥ एवं चिय आरम्भं वज्जइ सावज्जमट्ठमासं जा । तप्पाडिमा पेसेहिवि अप्पं कारेइ उवउत्तो ॥ १४ ॥ तेहिंपि न कारेई नवमासे जाव पेसपडिमत्ति । पुव्वोइया उ किरिया सव्वा एयस्स सविसेसा ॥ १५ ॥ उद्दिट्ठाहाराईण वज्जणं इत्थ होइ तप्पाडिमा । दसमासावहि सज्झायझाणजोगप्पहाणस्स ॥ १६ ॥ इक्कारस मासे जाव समणभूयपडिमा उ चरिमत्ति । अणुचरइ साहुकिरियं इत्थ इमो अविगलं पायं ॥ १७ ॥ आसेविऊण एयं कोई पव्वयइ तह गिही होइ । तब्भावभेयओ च्चिय विसुद्धिसंकेसभेएणं ॥ १८ ॥ एयाउ जहुत्तरमो असंखकम्मक्खओवसमभावा। हुंति

For Private and Personal Use Only

पडिमा पसत्था विसोहिकरणाणि जीवस्स ॥ १९ ॥ आसेविऊण एया भावेण निओगओ जई होइ । जं उवरि सव्वविरई भावेणं देसविरईओ ॥ २० ॥ इति श्रावकप्रतिमाविंशिका दशमी ॥ १० ॥

नमिऊण खीणदोसं गुणरयणनिहिं जिणं महावीरं । संखेवेण महत्थं जइधम्मं संपवक्खामि ॥ १ ॥ खंती य मद्दवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वे । सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥ २ ॥ उवगारवगारिविवागवयणधम्मुत्तरा भवे खंती । साविक्खं आदितिगं लोगिगमियरं दुगं जइणो ॥ ३ ॥ बारसविहे कसाए खविए उवसामिए य जोगेहिं । जं जायइ जइधम्मो ता चरिमं तत्थ खंतिदुगं ॥ ४ ॥ सव्वे य अईयारा जं संजलणाणमुदयओ हुंति । ईसिजलणा य एए कुओवगारादविक्खेह ॥५॥ छट्ठे उ गुणट्ठाणे जइधम्मो दुग्गलंघणं तं च । भणियं भवाडवीए न लोगचिंता तओ इत्थं ॥ ६ ॥ तम्हा नियमेणं चिय जइणो सव्वासवा नियत्तस्स । पढममिह वयणखंती पच्छा पुण धम्मखंतित्ति ॥ ७ ॥ एमेवऽद्दवमज्जवमुत्तीओ हुंति पंचभेयाओ । पुव्वोइयनाएणं जइणो इत्थंपि चरमदुगं ॥ ८ ॥ इहपरलोगादणविक्खं जमणसणाइ चित्तणुट्ठाणं । तं सुद्धनिज्जराफलमित्थ तवो होइ नायव्वो ॥ ९ ॥ आसवदारनिरोहो जमिंदियकसायदंडनिग्गहओ । पेहातिजोगकरणं तं सव्वं संजमो नेओ ॥ १० ॥ गुरुसुत्ताणुन्नायं जं हियमियभासणं ससमयम्मि । अपरोवतावमणघं तं सच्चं निच्छियं जइणो ॥ ११ ॥ आलोयणाइदसविहजलओ पावमलखालणं विहिणा । जं दव्वसोयजुत्तं तं सोयं जइजणपसत्थं ॥ १२ ॥ पक्खीउवमाए जं धम्मोवगरणाइलोभरेगेण । वत्थुस्सागहणं खलु तं आकिंचन्नमिह भणियं ॥ १३ ॥ मेहुणसन्नाविजएण पंचपरियारणापरिच्चाओ । बंभे मणवत्तीए जो सो बंभं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुपरिसुद्धं ॥ १४ ॥ कायफरिसरूवेहिं सद्दमणेहिं च इत्थ पवियारो । रागा मेहुणजोगो मोहुदयं रइफलो सव्वो ॥ १५ ॥ एयस्सा-
भावंमिवि नो बंभमणुत्तराण जं तेसिं । बंभे ण मणोवित्ती तह परिसुद्धा सयाभावा ॥ १६ ॥ बंभमिहं बंभचारिहिं वन्नियं सव्वमेव-
ऽणुट्ठाणं । तो तम्मि खओवसमो सा मणवित्ती तहिं होइ ॥ १७ ॥ एवं परिसुद्धासयजुत्तो जो खलु मणोनिरोहोऽवि । परमत्थओ
जहत्थं सो भण्णइ बंभमिह समए ॥ १८ ॥ इय तंतजुत्तिनीईइ भावियव्वो बुहेहिं सुत्तत्थो । सव्वो ससमयपरसमयजोगओ मुक्ख-
कंखीहिं ॥ १९ ॥ संखेवेणं एसो जइधम्मो वन्निओ अइमहत्थो । मंदमइबोहणट्ठा कुग्गहविरहेण समयाओ ॥ २० ॥ इति यति-
धर्म्मविंशिका एकादशमी ॥११॥ सिक्खा इमस्स दुविहा गहणासेवणगया मुणेयव्वा । सुत्तत्थगोयरेगा बीयाऽणुट्ठाणविसयत्ति
॥ १ ॥ जह चक्कवट्टि रज्जं लद्धूणं नेह खुद्दकिरियासु । होइ मई तह चेव उ नेयस्सवि धम्मरज्जवओ ॥ २ ॥ जह तस्स व रज्जत्तं
कुव्वंतो वच्चए सुहं कालो । तह एयस्सवि सम्मं सिक्खादुगमेव धन्नस्स ॥ ३ ॥ तत्तो इमं पहाणं निरुवमसुहहेउभावओ नेयं ।
इत्थवि होदइगसुहं तत्तो देवो उ पसमसुहं ॥ ४ ॥ सिक्खादुगंमि पीई जइ जायइ हंदि समणसीहस्स । तह चक्कवट्टिणोऽवि हु
नियमेण न जाउ नियकिच्चे ॥ ५ ॥ गिण्हइ विहिणा सुत्तं भावेणं परममंतरूवत्ति । जोगोवि बीयमहुरोदजोगतुल्लो इमस्सत्ति
॥ ६ ॥ पत्तं परियाएणं सुगुरुसगासाउ कालजोगेण । उद्देसाइकमजुयं सुत्तं गेज्झंति गहणविही ॥ ७ ॥ एसुच्चिय दाणविही नवरं
दाया गुरूऽथ एयस्स । गुरुसंदिट्ठो वा जो अक्खयचारित्तजुत्तुत्ति ॥ ८ ॥ अत्थग्गहणे उ एसो विन्नेओ तस्स तस्स य सुयस्स ।
तह चेव भावपरियागजोगओ आणुपुव्वीए ॥ ९ ॥ मंडालि निसिज्ज सिक्खा किइकम्मुस्सग वंदणं जिट्ठे । उवओगो संवेगो ठाणे
पसिणे य इच्चाइ ॥ १० ॥ आसेवइ य जहुत्तं तहा तहा सम्ममेस सुत्तत्थं । उचियं सिक्खापुव्वं नीसेसं उवहिपेहाई ॥ ११ ॥

For Private and Personal Use Only

पडिवत्तिविरहियाणं न हु सुयमित्तमुवयारगं होइ। नो आउरस्स रोगो नासइ तह ओसहसुईओ ॥ १२ ॥ नय विवरीएणेसो किरियाजोतेण अविय वड्ढइ। इय परिणामाओ खलु सव्वं खु जहुत्तमायरइ ॥ १३ ॥ भेदोऽवित्थमजोगो नियमेण विवागदारुणो होइ। पागकिरियागओ जह नायमिणं सुप्पसिद्धं तु ॥ १४ ॥ जह आउरस्स रोगक्खयत्थिणो दुक्कराविं सुहहेऊ। इत्थ चिगिच्छा-किरिया तह चेव जइस्स सिक्खत्ति ॥ १५ ॥ जं सम्मनाणमेयस्स तत्तसंवेयणं निओगेण। अन्नेहिवि भणियमओ उ विज्जासंविज्ज-पदमिसिणो ॥ १६ ॥ पढममहं पीईविऊ पच्छा भत्ती उ होइ एयस्स। आगममित्तं हेऊ तओ असंगत्तमेगंता ॥ १७ ॥ जइणो चउव्विहंचिय अन्नेहिवि वन्नियं अणुट्ठाणं। पीईभत्तिगयं खलु तहागमासंगभेयं च ॥ १८ ॥ आहारोवरि सिज्जासु संजओ होइ एस नियमेण। जायइ अणहो सम्मं इत्तो य चरित्तकाउत्ति ॥ १९ ॥ एयासु अवत्तवओ जह चेव विरुद्धसेविणो देहो। पाउणइ न उण-मेवं जइणोऽविहु धम्मदेहुत्ति ॥ २० ॥ इति शिक्षाविंशिका द्वादशमी १२ ॥

भिक्खाविही उ नेओ इमस्स एसो महाणुभावस्स। बायालदोसपरिसुद्धपिंडगगहणंति ते य इमे ॥ १ ॥ सोलस उग्गम-दोसा सोलस उप्पायणाइ दोसा उ। दस एसणाइ दोसा बायालीसं इय हवंति ॥ २ ॥ आहाकम्मुद्देसिय पूईकम्मे य मीसजाए य। ठवणा पाहुडियाए पाओयरकीयपामिच्चे ॥ ३ ॥ परियट्टिए अभिहडे उब्भिन्ने मालोहडे इय। अच्छिज्जे अनिसिट्ठे अज्झो-यरए य सोलसमे ॥ ४ ॥ धाई दूइ निमित्ते आजीव वणीमगे तिगिच्छा य। कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस एए ॥ ५ ॥ पुव्विंपच्छासंथव विज्जा मंते य चुन्न जोगे य। उप्पायणाइ दोसा सोलसमे मूलकम्मे य ॥ ६ ॥ संकिय मक्खिय निक्खित्त पिहिय साहरिय दायगुम्मीसे। अपरिणय लित्त छड्डिय एसणदोसा दस हवंति ॥ ७ ॥ एयद्दोसविमुक्को जईण पिंडो जिणेणऽणुन्नाओ।

For Private and Personal Use Only

संजोयणाइरहिओ भोगोवि इमस्स कारणओ ॥ ८ ॥ दव्वाईसंजोयणमिह बत्तीसाहिगं तु अपमाणं। रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं जाण ॥ ९ ॥ वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए। तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ १० ॥ वत्थंऽपाहाकम्माइदोसदुट्ठं विवज्जियव्वं तु। दोसाण जहासंभवमेएसिं जोयणा नेया ॥ ११ ॥ इत्थेव पत्तभेएण एसणा होइऽभिग्गहपहाणा। सत्त चउरो य पयडा अन्नावि तहाऽविरुद्धत्ति ॥ १२ ॥ संसट्ठमसंसट्ठा उद्धड तह होइ अप्पलेवा य। ओग्गहिया पग्गहिया उज्झियधम्मा य सत्तमिया ॥ १३ ॥ उदिट्ठ पेह अंतर उज्झियधम्मा चउत्थिया होइ। वत्थेवि एसणाओ पन्नत्ता वीयरागेहिं ॥ १४ ॥ सिज्जावि इहं नेया आहाकम्माइदोसरहियावि। तेऽवि दलाविक्खाए इत्थं सयमेव जोइज्जा ॥ १५ ॥ एक्षावित्थीपंडगपसुरहिया जाण सुद्धिसंपुन्ना। अन्नापीडाइ तहा उग्गहसुद्धा मुणेयव्वा ॥ १६ ॥ एसाविहु विहिपरिभोगओ य आसंगवज्जियाणं तु। वसही सुद्धा भणिया इहरा उ गिहं परिग्गहओ ॥ १७ ॥ एवं आहाराइसु जत्तवओ निम्ममस्स भावेण। नियमेण धम्मदेहारोगाओ होइ निव्वाणं ॥ १८ ॥ जाणइ असुद्धिमेसो आहाराईण सुत्तभणियाणं। सम्मुवउत्तो नियमा पिंडेसणभाणियविहिणा य ॥ १९ ॥ **इति भिक्षाविंशिका त्रयोदशमी १३ ॥**

भिक्खाए वच्चंतो जइणो गुरुणो करंति उवओगं। जोगंतरं पवज्जिउकामो आभोगपरिसुद्धं ॥ १ ॥ सामीवेणं जोगो एसो सुत्ताइजोगओ होइ। कालाविक्खाइ तहा जणदेहाणुग्गहट्ठाए ॥ २ ॥ एयविसुद्धिनिमित्तं अद्धागहणट्ठ सुत्तजोगट्ठा। जोगतिगेणुवउत्ता गुरुआणं तह पमग्गंति ॥ ३ ॥ चिंतेइ मंगलमिहं निमित्तसुद्धिं तिहा परिक्खंता। कायवयमणेहिं तहा नियगुरुयणसंग-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एहिं तु ॥ ४ ॥ एयाणमसुद्धीए चिइवंदण तह पुणोऽवि उवओगो। सुद्धे गमणं हु चिरं असुद्धिभावे ण तद्दियहं ॥ ५ ॥ सुद्धेऽवि अंतराया एए पडिसेहगा इहं हुंति। आहारस्स इमे खलु धम्मस्स उ साहगाजोगा ॥ *६ ॥ इति तदन्तरायशुद्धिलिंगविंशिका १४ ॥

भिक्खाइसु जत्तवओ एवमवि य माइदोसओ जाओ। हुंतऽइयारा ते पुण सोहइ आलोयणाइ जई ॥ १ ॥ पक्खे चाउम्मासे आलोयण नियमसो उ दायव्वा। गहणं अभिग्गहाण य पुव्वगहिए णिवेदेउं ॥ २ ॥ आलोयणा पयडणा भावस्स सदोसकहणमिह गज्झो। गुरुणो एसा य तहा सुविज्जनाएण विन्नेआ ॥ ३ ॥ जह चेव दोसकहणं न विज्जमित्तस्स सुंदरं होइ। अविय सुविज्जस्स तहा वन्नेयं भावदोसेऽवि ॥४॥ तत्थ सुविज्जो य इमो आरोग्गं जो विहाणओ कुणइ। चरणारुग्गकरो खलु एवित्थ गुरूवि विन्नेओ ॥५॥ जस्स समीवे भावाउरा तहा पाविऊण विहिपुव्वं। चरणारुग्गं पकरंति सो गुरू सिद्धकम्मुत्थ ॥ ६ ॥ धम्मस्स पभावगो जायइ एयारिसो न सव्वोऽवि। विज्जो व सिद्धकम्मो जइयव्वं एरिसे विहिणा ॥७॥ एसो पुण नियमेणं गीयत्थाइगुणसंजुओ चेव। धम्मकहाऽपक्खेवग विसेसओ होइ उ विसिट्ठो ॥८॥ धम्मकहाउज्जुत्तो भावन्नू परिणओ चरित्तम्मि। संवेगवुड्ढिजणओ सम्मं सोमो पसंतो य ॥९॥ एयारिसम्मि नियमा संविग्गेणंपमायदुच्चरियं। अपुणकरणुज्जुएणं पयासियव्वं जइजणेणं ॥१०॥ जह [illegible]

* दृष्टेष्वादर्शेषु न क्वापि सप्तम्या आविंशतिं चतुर्दश गाथा उपलब्धा इति नोपायोऽत्रासां मुद्रणे। आहारकरणाकरणयोर्यद् हे[illegible] [illegible]र्कं वेयणे त्यादि मोहतिगिच्छेत्यादिरूपं च तद्युक्तं स्यात् तदा स्थानांगषष्ठस्थानकादवसेयं तत्

For Private and Personal Use Only

कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ । तं तह आलोइज्जा मायामयविप्पमुक्को य ॥११॥ पच्छित्तमयं करणा अन्ने सुद्धिं भणंति नाणस्स । तं च न जम्मा एयं ससल्लवणरोहणप्पायं ॥ १२ ॥ अवराहा खलु सल्लं एयं मायाइभेयओ तिविहं । सव्वंपि गुरुसमीवे उद्धरियव्वं पयत्तेण ॥ १३ ।. न य तं सत्थं च विसं व दुप्पउत्तुव्व कुणइ वेयालो । जंतव्व दुप्पउत्तं सत्तुव्व पमाइओ कुद्धो ॥ १४ ॥ जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं उत्तिमट्ठकालम्मि । दुल्लहबोहीयत्तं अणंतसंसारियत्तं च ॥ १५ ॥ तो उद्धरंति गारवरहिया मूलं पुणब्भवलयाणं। मिच्छद्दंसणसल्लं मायासल्लं नियाणं च ॥ १६ ॥ चरणपरिणामधम्मा दुच्चरियं अद्धिइं दढं कुणइ । कहवि पमायावट्ठिय जाव न आलोइयं गुरुणो ॥ १७ ॥ जं जाहे आवज्जइ दुच्चरियं तं तहेव जत्तेणं । आलोएयव्वं खलु सम्मं सइयारमरणभया ॥ १८ ॥ एवमवि य पक्खाई जायइ आलोयणाओ विसओत्ति । गुरुकज्जाणालोयण भावाणाभोगओ चेव ॥ १९ ॥ जं जारिसेण भावेण सेवियं किंपि इत्थ दुच्चरियं । तं तत्तो अहिगेणं संवेगेणं तहाऽऽलोए ॥ २० ॥ इति आलोयणाविंशिका १५ ॥

पच्छित्ताओ सुद्धी तहभावालोयणेण जं होइ । इहरा ण पीढबंभाइओ सआ सुकडभावेऽवि ॥१॥ अहिगा तक्खयभावे पच्छित्तं किंफलं इहं होइ? । तदहिगकम्मक्खयभावओ तहा हंत मुक्खफलं ॥२॥ पावं छिंदइ जम्हा पायच्छित्तंति भण्णए तम्हा । पाएण वावि चित्तं सोहयई तेण पच्छित्तं ॥ ३ ॥ संकेसणाइभेया चित्तअसुद्धीइ वज्झई पावं । तिव्वं चित्तविवागं अवेइ तं चित्तसुद्धीओ ॥ ४ ॥ किच्चेऽवि कम्मणि तहा जोगसमत्तीइ भणियमेयंति । आलोयणाइभेया दसविहमेयं जहा सुत्ते ॥ ५ ॥ आलोयण पडिकमणे मीस विवेगे तहा विउस्सग्गे । तव छेय मूल अणवट्ठया य पारंचियं चेव ॥ ६ ॥ वसहीओ हत्थसया बाहिं कज्जे गयस्स विहिपुव्वं । गमणाइगोयरा खलु भणिया आलोयणा गुरुणा ॥ ७ ॥ सहसच्चिय अस्समियाइभावगमणे य चरणपरिणामा । मिच्छादुक्कड-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दाणा तग्गमणं पुण पडिक्कमणं ॥ ८ ॥ सद्दाइएसु ईसिंपि इत्थ रागाइभावओ होइ । आलोयणा पडिक्कमणयं च एयं तु मीसं तु ॥ ९ ॥ असणाइगस्स पायं अणेसणीयस्स कहवि गहियस्स । संवरणे संचाओ एस विवेगो उ नायव्वो ॥ १० ॥ कुस्सुमिणमाइएसुं विणाऽभिसंधीइ जो उ अइयारो । तस्स विसुद्धिनिमित्तं काउस्सग्गो विउस्सग्गो ॥ ११ ॥ पुढवाईणं संघट्टणाइभावेण तह पमायाओ । अइयारसोहणट्ठा पणगाइतवो तवो होइ ॥ १२ ॥ तवसा उ दुद्दमस्सा पायं तह चरणमाणिणो चेव । संकेसविसेसाओ छेओ पणगाइओ तत्थ ॥ १३ ॥ पाणवहाईभि पाओ भावेणासेवियम्मि सहसावि । आभोगेणं जइणो पुणो वयारोवणा मूलं ॥ १४ ॥ साहम्मिगाइतेणाइभावओ संकिलेसभेएण । तक्खणमेव वयाणवि होइ अजोगो उ अणवट्ठा ॥ १५ ॥ पुरिसविसेसं पप्पा पावविसेसं च विसयभेएण । पायच्छित्तस्संतं गच्छंतो होइ पारंची ॥ १६ ॥ एवं कुणमाणो खलु पावमलाभावओ निओगेण । सुज्झइ साहू सम्मं चरणस्साराहणा तत्तो ॥ १७ ॥ अविराहियचरणस्स य अणुबंधो सुंदरो उ हवइत्ति । अप्पो य भवो पायं ता इत्थं होइ जइयव्वं ॥ १८ ॥ किरियाए अपच्चारे त्थाउ) जत्तवओ णावगारगा जह(य) । पच्छित्तवओ सम्मं तह पव्वज्जाए अइयारो ॥१९॥ एवं भावनिरुज्जो जोगसुहं उत्तमं इहं लहइ । परलोगे य नरामरसिवसुक्खं तप्फलं चेव ॥ २० ॥ इति **प्रायश्चित्तविंशिका १६॥**

मुक्खेण जोयणाओ जोगो सव्वोवि धम्मवावारो । परिसुद्धो विन्नेओ ठाणाइगओ विसेसेण ॥ १ ॥ ठाणुन्नत्थालंबणरहिओ तंतम्मि पंचहा एसो । दुगमित्थ कम्मओगो तहा तियं नाणजोगो उ ॥ २ ॥ देसे सव्वे य तहा नियमेणेसो चरित्तिणो होइ । इयरस्स बीयमित्तं इत्तोच्चिय केइ इच्छंति ॥ ३ ॥ इक्किको य चउद्धा इत्थं पुण तत्तओ मुणेयव्वो । इच्छापवित्तिथिरसिद्धिभेयओ समयनीईए ॥४॥ तज्जुत्तकहा पीईइ संगयाऽविपरिणामिणी इच्छा । सव्वत्थुवसमसारं तप्पालणमो पवत्तीओ ॥ ५ ॥ तह

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेव एयबाहगचिंतारहियं थिरत्तणं नेयं । सव्वं परत्थसाहगरूवं पुण होइ सिद्धित्ति ॥ ६ ॥ एए य चित्तरूवा तहखओवसमजोगओ हुंति । तस्स उ सद्धापीयाइजोगओ भव्वसत्ताणं ॥ ७ ॥ अणुकंपा निव्वेओ संवेगो होइ तह य पसमुत्ति । एएसिं अणुभावा इच्छाईणं जहासंखं ॥ ८ ॥ एवं ठियम्मि तत्ते नाएण उ जोयणा इमा पयडा। चिइवंदणेण णेया नवरं तत्तन्नुणा सम्मं ॥९॥ अरहंतचेइयाणं करेमि उस्सग्ग एवमाईयं । सद्धाजुत्तस्स तहा होइ जहत्थं पवन्नाणं ॥ १० ॥ एयं वत्थालंबणजोगवओ पायमविवरीयं तु। इयरेसिं ठाणाइसु जत्तपराणं परं सेयं ॥ ११ ॥ इहरा कायव्वा सिय पायं अहवा महामुसावाओ । ता अणुरूवाणं चिय कायव्वो एयविन्नासो ॥ १२ ॥ जे देसि विरइजुत्ता जम्हा इह वोसिरामि कायंति । सुव्वइ विरई य इमं ता सव्वं चिंतियव्वमिणं ॥ १३ ॥ तित्थस्सुच्छेयाइवि नालंबणमित्थ जं स एमेव । सुत्तकिरियाइनासो एसो असमंजसविहाणो ॥ १४ ॥ सो एस वंझओ चिय नय सयमयमारियाणमविसेसा । एयंपि भावियव्वं इह तित्थुच्छेयभीरूहिं ॥ १५ ॥ मुत्तूण लोगसन्नं दट्ठूण य साहुसमयसब्भावं । सम्मं परियट्टियव्वं बुहेणमइनिउणबुद्धीए ॥ १६ ॥ कयमित्थ पसंगेणं ठाणाइसु जत्तसंगयाणं तु । हियमेयं विन्नेयं सदणुट्ठाणत्तणेण तहा ॥ १७ ॥ एयं च पीइभत्तागमाणुगं तह असंगयाजुत्तं । नेयं चउव्विहं खलु एसो चरमो हवइ जोगो ॥ १८ ॥ आलंबणंपि एयं रूविमरूवी य इत्थ परमुत्ति । तग्गुणपरिणइरूवो सुहुमो आलंबणो नाम ॥१९॥ एयम्मि मोहसागरतरणं सेढी य केवलं चेव । तत्तो य जोगजोगो कमेण परमं च निव्वाणं ॥२०॥ इति **योगविधानविंशिका सप्तदशी १७** ॥

केवलनाणमणंतं जीवसरूवं तयं निरावरणं । लोगालोगपगासगमेगविहं निच्चजोइत्ति ॥ १ ॥ मणपज्जवनाणंतो नाणस्स य दंसणस्स य विसेसे। केवलनाणं पुण दंसणंति नाणंतिय समाणं ॥ २ ॥ संभिन्नं पासंतो लोगमलोगं च सव्वओ नेयं । तं नत्थि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जं न पासइ भूयं भव्वं भविस्सं च ॥३॥ भूअं भूअत्तेणं भव्वंपेएण तह भविस्सं च । पासइ भविस्सभावेण जं इमं नेयमेवंति ॥ ४ ॥ नेयं च विसेसेणं विगमइ केणावि इहरथा नेय । नेयंति तओ चित्तं एयमिणं जुत्तिजुंत्तति ॥५॥ सागाराणागारं नेयं जं नेयमुभयहा सव्वं । अणुमाइयंपि नियमा सामन्नविसेसरूवं तु ॥६॥ ता एयंपि तहच्चिय तग्गाहगभावओ उ नायव्वं । आगारोऽवि य एयस्स नवर तग्गहणपरिणामा ॥ ७ ॥ इहरा उ अमुत्तस्सा को वाऽऽगारो नयावि पडिबिंबं । आदरिसगिव्व विसयस्स एस तह जुत्तिजोगाओ ॥८॥ सामा उ दिया छाया अभासरगया निसिं तु कालाभा । सच्चेय भासरगया सदेहवन्ना मुणेयव्वा ॥९॥ जे आरिसस्स अंतो देहावयवा हवंति संकंता । तेसिं तत्थुवलद्धी पगासजोगा ण इयरेसिं ॥१०॥ छायाणुवेहओ खलु जुज्जइ आयरिसगे पुण इमंति। सिद्धम्मि तेयछायाणुजोगविरहा अदेहाओ ॥ ११ ॥ छायाणूहिं न जोगो संगत्ताओ उ हंदि सिद्धस्स । छायाणवोऽवि सव्वेवि णाऽणुमाईण विज्जंति ॥१२॥ तंमित्तवेयणं तह ण सेसगहणमणुमाणओ वावि । तम्हा सरूवनिययस्स एस तग्गहणपरिणामो ॥१३॥ चंदाइच्चगहाणं पहा पयासेइ परिमियं खित्तं । केवलियनाणलंभो लोयालोयं पयासेइ ॥१४॥ तह सव्वगयाभासं भणियं सिद्धंतसम्मनाणीहिं । एयसरूवनियत्तं एवमिणं जुज्जए कहणु ? ॥ १५ ॥ आभासो गहणं चिय जम्हा तो किं न जुज्जए इत्थं ? । चंदप्पभाइणायं तु णायमित्तं मुणेयव्वं ॥ १६ ॥ जम्हा पुग्गलरूवा चंदाईणं पभा ण तद्धम्मो । नाणं तु जीवधम्मो ता तंनियओ अयं नियमा ॥ १७ ॥ जीवो य ण सव्वगओ ता तद्धम्मो कहं भवइ बाही ? । कह वाऽलोअे धम्माइविरहओ गच्छइ अणंते ॥ १८ ॥ तम्हा सरूवनिययस्स चेव जीवस्स केवलं धम्मो । आगारोऽवि य एयस्स साहु तग्गहणपरिणामो ॥ १९ ॥ एयम्मि भवोवग्गाहिकम्मखयओ उ होइ सिद्धत्तं । नीसेससुद्धधम्मासेवणफलमुत्तमं नेयं ॥२०॥ इति केवलज्ञानविंशिका १८॥

For Private and Personal Use Only

सिद्धाणं च विभत्ती तहेगरूवाण वीअतत्तेण । पनरसहा पन्नत्तेह भगवया ओहभेएण ॥ १ ॥ तित्थाइसिद्धभेया संघे सइ हुंति तित्थसिद्धत्ति । तदभावे जे सिद्धा अतित्थसिद्धा उ ते नेया ॥२॥ तित्थगरा तस्सिद्धा हुंति तदन्ने अतित्थगरसिद्धा । सगबुद्धा तस्सिद्धा एवं पत्तेयबुद्धावि ॥ ३ ॥ इय बुद्धबोहियाविहु इत्थी पुरिसे णपुंसगे चेव । एवं सलिंगगिहिअन्नलिंगसिद्धा मुणेयव्वा ॥४॥ एगाणेगा य तहा तदेगसमयम्मि हुंति तस्सिद्धा । सेढीकेवलिभावे सिद्धी एते उ भवभेया ॥ ५ ॥ पडिबंधगा ण इत्थं सेढीए हुंति चरमदेहस्स । थीलिंगादीयाऽविहु भावा समयाविराहाओ ॥६॥ नवगुणठाणविहाणा इत्थीपमुहाण होइ अविरोहो । समएण सिद्धसंखाभिहाणओ चेव नायव्वा ॥ ७ ॥ अणियट्टिबायरो सो सेढिं नियमेणमिह समाणेइ । तीए य केवलं केवले य जम्मक्खए सिद्धी ॥८॥ पुरिसस्स वेयसंकमभावेणं इत्थ गमणिगाऽजुत्ता । इत्थीणवि तब्भावो होइ तया सिद्धिभावाओ ॥ ९ ॥ लिंगमिह भावलिंगं पहाणमियरं तु होइ देहस्स । सिद्धी पुण जीवस्सा तम्हा एयं न किंचिदिह ॥१०॥ सत्तममहिपडिसेहो उ रुद्दपरिणामविरहओ तासिं । सिद्धीए इट्ठफलो न साहुणित्थीण पडिसेहो ॥ ११ ॥ उत्तमपयपडिसेहो उ तासिं सहगारिजोगयाऽभावे । नियवीरिएण उ तहा केवलमवि हंदि अविरुद्धं ॥ १२ ॥ वीसित्थिगा उ पुरिसाण अट्ठसयमेगसमयओ सिज्झे । दस चेव नपुंसा तह उवरिं समएण पडिसेहो ॥ १३ ॥ इय चउरो गिहिलिंगे सलिंगसिद्धे सयं च अट्ठहियं । विन्नेयं तु सलिंगे समएणं सिज्झमाणाणं ॥ १४ ॥ दो चेवुक्कोसाए चउरो जहन्नाइ मज्झिमाए य । अट्ठाहिगं सयं खलु सिज्झइ ओगाहणाइ तहा ॥ १५ ॥ चत्तारि उड्ढलोए दुए समुद्दे तओ जले चेव । बावीसमहोलोए तिरिए अट्ठुत्तरसयं तु ॥१६॥ बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरी उ बोद्धव्वा । चुलसीई छन्नउई दुरहियमट्ठुत्तरसयं च ॥ १७ ॥ एवं सिद्धाणंपिहु उवाहिभेएण होइ इह भेओ । तत्तं पुण सव्वेसिं भगवंताणं समं चेव ॥ १८ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सव्वेऽविय सव्वन्नू सव्वेऽवि य सव्वदंसिणो एए । निरुवमसुहसंपन्ना सव्वे जम्माइरहिया य ॥ १९ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का । अन्नुन्नमणाबाहं चिट्ठंति सुहं सुही पत्ता ॥ २० ॥ इति सिद्धविभक्तिविंशिका १९ ॥

नमिऊण तिहुयणगुरुं परमाणंतसुहसंगयंपि सया । अविमुक्कसिद्धिविलयं च वीयरागं महावीरं ॥१॥ वुच्छं लेसुद्देसा सिद्धाण सुहं परं अणोवम्मं । नायागमजुत्तीहिं मज्झिमजणबोहणट्ठाए ॥२॥ जं सव्वसत्तु तह सव्ववाहि सव्वत्थ सव्वामिच्छाणं। खयविगमजोगपत्तीहिं होइ तत्तो अणंतमिणं ॥ ३ ॥ रागाईया सत्तू कम्मुदया वाहिणो इहं नेया । लद्धीओ परह(म)त्था इच्छाणिच्छेच्छमो य तहा ॥ ४ ॥ अणुहवसिद्धं एयं नारुग्गसुहं व रोगिणो नवरं । गम्मइ इयरेण तहा सम्ममिणं चिंतियव्वं तु ॥ ५ ॥ सिद्धस्स सुक्खरासी सव्वद्धापिंडिओ जइ हविज्जा । सोऽणंतवग्गभइओ सव्वागासे ण माइज्जा ॥ ६ ॥ वाबाहक्खयसंजायसुक्खलवभावमित्थमासज्ज । तत्तो अणंतरुत्तरबुद्धीए रासि परिकप्पो ॥ ७ ॥ एसो पुण सव्वोऽवि हु निरइसओ एगरूवमो चेव । सव्वाबाहाकारणखयभावाओ तहा नेओ ॥ ८ ॥ न उ तह भिन्नाणं चिय सुक्खलवाणं तु एस समुदाओ । ते तह भिन्ना संतो खओवसम जाव जं हुंति ॥ ९ ॥ न य तस्स इमो भावो न य सुक्खंपिहु परं तहा होइ । बहुविसलवसंविद्धं अमयंपि न केवलं अमयं ॥ १० ॥ सव्वद्धासंपिंडणमणंतवग्गभयणं च जं इत्थ । सव्वागासपमाणं च णंतं तद्दंसणत्थं तु ॥ ११ ॥ तिन्निवि पएसरासी एगाणंता तु ठाविया हुंति । हंदि विसेसेण तहा अणंतयाणंतया सम्मं ॥ १२ ॥ तुल्लं च सव्वहेयं सव्वेसिं होइ कालभेएवि । जह जं कोडीसत्तं तह छणभेएवि सुहुममिणं ॥ १३ ॥ सव्वंपि कोडिकप्पियमसंभवठवणाइ जं भवे ठवियं । तत्तो तस्सुहसामी न होइ इह भेयगो कालो ॥ १४ ॥ जइ तत्तो अहिगं खलु होइ सरूवेण किंचि तो भेओ । नवि अज्जवासकोडीमया (मयाणमा) णम्मि सो होइ ॥१५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किरिया फलसाविक्खा जं तो तीए ण सुक्खमिह परमं । तम्हा मुगाइभावो लोगिगमिव जुत्तिओ सुक्खं ॥ १६ ॥ सव्वूसगवावित्ती जत्थ तयं पंडिएहिं जत्तेण । सुहुमाभोगेण तहा निरूवणीयं अपरितंतं ॥ १७ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ अणंता भवक्खयविमुक्का। अन्नुन्नमणाबाहं चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ॥१८॥ एमेव भवो इहरा ण जाउ सन्ना तयंतरमुवेइ। एगेए तह भावो सुक्खसहावो कहं स भवे ? ॥ १९ ॥ तम्हा तेसिं सरूवं सहावणिययं जहा उ ण स मुत्ति । परमसुहाइसहावं नेयं एगंतभवरहियं ॥ २० ॥ इति सिद्धसुखविंशिका विंशतितमी समाप्ता २० ॥ कृतिः सिताम्बराचार्यहरिभद्रसूरेर्धर्मतो याकिनीमहत्तरासूनोः ॥

काऊण पगरणमिणं जं कुसलमुवज्जियं मए तेण । भव्वा भयविरहत्थं लहंतु जिणसासणे बोहिं ॥ २१ ॥ इति श्रीवीसीप्रकरणं समाप्तम् ॥ ग्रन्थाग्रम् ५०० श्लोकाः ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीव्याजेन पञ्चशाखता, सर्वाण्यपि दैवतानि हस्ताश्रितानि, अङ्गुष्ठस्य मूले ब्रह्माण्डवीर्थीं कायस्याधिष्ठायकाः कनिष्ठायां पित्र्यं तीर्थं तर्जन्यङ्गुष्ठान्तः अङ्गुलीदैवतं तीर्थं पक्षस्य पञ्चदश दिनानि पर्वरूपाणि तस्यैव यो दाता त्राता विषमतमेऽपि कार्येऽपि खड्गानां प्रहारेऽपि तस्यैवान्तरालं सूचयति, अतः सत्पुरुषेण स्तूयते, एवंविधस्य भवत आशा युक्ता,

युद्धाहाग्करप्रपीडनजपन्यासाक्षरस्थापनास्थैर्यारोपकरोऽसि दैवतशतावासः सुपर्वाऽपभीः ।
तद् धर्मार्थिगलार्द्दने परवधूस्पर्शो परार्थग्रहे, घाते च प्रगुणो जिनार्चनदयादानेषु पाणे ! स्फुर ॥ २६ ॥

ये यात्रिका भवन्ति ते गंगागयागोदावरीतीर्थेषु प्रयागप्रभासश्रीशत्रुञ्जयादितीर्थेषु सेवां कुर्वन्ति, तत्र विशुद्धाः सन्तो देवताऽऽराधनं कुर्वंति, तुष्टाः सत्योऽस्मन्मनोरथान् पूरयन्ति, चिन्त्यमानं तु दातुः करस्यैव तीर्थत्त्वमवगच्छामः, सामग्री च सामग्रया दृश्यते, कथं सम्यक्पीठे देवतामवतारयाति, यतः–

पठिं सत्पुरुषस्य दाक्षिणकरः प्राचीनपुण्योदयो, मंत्री तत्र महाश्रियं हिमवतः पद्मादवातीतरत् ।
न्यासैर्दानमयैर्विशेषसफलीकारं च तत्र व्यधाद्, जातं कामिकतीर्थमित्यत इतस्तद्यात्रिकैः सेव्यते ॥ २७ ॥

यस्य कस्यापि स्वामिनो दृष्टौ स्तुतिं पूजां विचारयन् वाचयितुं न शन्कोति, यस्तु त्रिभुवनविकाशनसमर्थः स्वामी तस्य दृष्टौ पूजाकारापणं महच्चित्रं, अथवाऽऽश्चर्यमपि न, स्वराज्यदानसमये स्वयमेव स्वामी पुत्रादेः पूजां करोति, कारापयति, स्थानं स्वं ददाति, अत एव सम्भावयामः स्वदृष्टौ सङ्घाधिपस्य यात्रिकैः पूजां कारयन् स्वप्रभावस्वस्थानदानतत्पर एव तत्कार्यकारणकर्म्मवत्त्वादङ्गादीनां पूजा, यतः—

पाणेरूपदेशः करस्य तीर्थता अंग-पूजा.

॥ ६३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अंघ्री तीर्थपथाग्रगौ सुकृतिनौ दारिद्र्यसर्वंकषौ, पाणी धन्यतमौ जगत्प्रियवचाः कण्ठो भुजौ धूर्धुरौ।
ईदृग्भाग्यभराभिरामलिपिभृद्भालं तदेषां क्रमात्, पूजा माङ्गलिकेऽर्हतो दृशि जनैः सङ्घेशितुस्तन्यते ॥२८॥

पूर्वभवागण्यपुण्याकृष्टा लक्ष्मीः सत्पुरुषं प्रेम्णा समाजगाम, संस्तु सर्वस्याशापूरकः, विशेषतो महालक्ष्म्या उपकारिण्याः, यो यस्योपकारं करोति सर्वः कोऽपि तं प्रत्युपकरोति, यथा रामाय सुग्रीवेण दुर्योधनाय कर्णेन, अत्रापि सत्पुरुषमहालक्ष्म्योर्महान् स्नेहः उपकारकरणप्रागल्भ्यं च, यतः-

आदौ पाणिसरोरुहेषु गुणिनां पश्चात्तु देवालये, नाभेयप्रभुनेमिशैलशिरसोर्मेरौ तथेन्द्रासने।
मौलित्वेन जिनोत्तमाङ्गशिखरे छत्रत्रयत्वेन च, न्यस्ताऽथामलसारके सुकृतिना लक्ष्मीर्ध्वजायां ततः ॥२९॥

यो हि कुलीनो धन्यो निष्पापक्रियाप्राणनाथो भवति स निजस्वामिनं बलहीनं हितमितसेवकत्यक्तं गतकोशं एकाकिनं दुर्बलं विषमरणपतितं बलिष्ठशत्रुवृन्दगृहीतसर्वस्वमुपकरोति, अग्रे भूयः स्वामिनमुद्धरति, कार्यं वर्यं विदधाति, तस्य स्तुतिं पूजां च करोति सर्वः, तथाऽत्रापि

नास्तिक्याभिधदुर्गभूमिबलिना मिथ्यात्वकोशेशिना, कार्पण्यादिभटोद्भटेन कलिना निर्लोठ्यमानं कृशम्।
धर्म्मं स्वामिनमुन्नतिं नयति यो दानादिशस्त्रैः स्फुरन्, सज्ज्ञानिकयुतो जयी स उचितं सङ्घाधिपः पूज्यते॥३०॥

यथा वृष्टिर्भवित्री तदाऽऽदावेव पृथिव्यामूष्मा भवति, पयसां स्वादाभावः, अयसां सकिट्टता, गड्डुरिकाणामूर्ध्वस्थानां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निद्रा, तक्रस्याम्लत्वं, यस्य पुरुषस्य लक्ष्म्या महादेव्याः प्राप्तिर्भवित्री तस्य प्रथमं शुभाः चेष्टा भवन्ति, इष्टादीनामागमनेऽङ्गस्फुरणा भवति, कुशलेन दृष्टस्थानप्राप्तौ प्रथमं शुभशकुनोदयः, एवं यस्य जीवस्य तीर्थङ्करपदवी भवेत् काः तस्येत्यादयश्चेष्टा भवन्ति ?

जीवो जीवनबन्दिमोक्षणतपःसत्योक्तिशीलक्षमावैरोच्छेदनदानसत्त्वधिषणापूज्यत्वविख्यातिभिः ।
संघेशो जिनधर्म्मतेजनभवत्सम्भावनार्हत्पदस्फूर्ज्जिष्यत्सुकृतप्रभावाविभवानत्र व्यनक्त्ययंशतः ॥३१॥
कर्पूरागुरुकुङ्कुमद्रुतिसुमश्रीखण्डगन्धोर्मिभिर्गेयस्तोत्रचरित्ररासललितैर्वाद्यारवैर्दन्तिभिः ।
अर्हद्बिम्बगृहातपत्रचमरस्नात्रार्हणानाटकैस्तीर्थे स्वर्गमिहैव विन्दति बुधोऽमुत्रापि सोऽप्याप्स्यते ॥ ३२ ॥
स्वर्गङ्गा नवकुण्डमानसजलं दिव्यं च तच्चन्दनं, पुष्पं हेम च मौक्तिकं च वसनं रम्भादिसङ्गीतकम् ।
सङ्कल्पेन समानय प्रभुजनोपास्त्यै मृदुर्ध्याय मा, पापं चञ्चलताफलं चिनु मनः सद्ध्यानमेवं सताम् ॥३३॥

सुवर्णं त्रिधा-अर्जुनं पीतं रक्तं च, मेघमौक्तिकं यः पुष्करावर्त्तकमेघे वर्षति सति करकवत् सम्मूर्च्छति, तस्य सर्वा पृथिव्यापि स्वल्पं मूल्यं, तन्मौक्तिकमपतदेव देवा गृह्णन्ति मनःकल्पनया । मासादिभाटकादिना संगृहीतो भृत्यः नीचकर्म्मकारी ।

सेवां मोहवशाद् व्यलम्बयमहं कार्याण्यभञ्जं प्रभोर्भृत्यः किंकरकः कराङ्गुलिदलच्छेदी सहागांसि मे ।
अप्राप्ते त्वयि दैन्यमित्यतनुम त्रायस्व सुश्रावकाः, किं विज्ञीप्सव इत्यमी जिनपतिं प्रत्यास्यकोशं व्यधुः ॥३४॥
श्रीमद्धर्षपुरीयगच्छतिलकश्रीसूरिवंशे गुरुर्विद्वत्पर्षदि राजशेखर इति प्रख्यातिमायाति यः ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only